श्री बसंत विज्ञान माला

: रचयिता :

वेदान्त केसरी ब्रह्मनिष्ठ श्रीमान् 108
स्वामी बसन्तरामजी महाराज

: प्रकाशक :

स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री
प्रेम प्रकाश आश्रम, देहली गेट, अजमेर - 305001
फोन : 423993

श्री सत्नाम साक्षिणे नमः ॐ श्री गुरु परमात्मने नमः

श्री बसन्त विज्ञान माला

रचयिता

वेदान्त केसरी ब्रह्मनिष्ठ स्वामी बसन्तरामजी महाराज शिष्य पूज्यपाद् ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 सद्‌गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज प्रेम प्रकाशी

परिवर्धित तृतीय संस्करण 2000

मार्ग शीर्ष पूर्णिमा सम्वत् 2052

॥ श्री सत्नाम साक्षी ॥

अर्पण - पत्र

यह पवित्र पुस्तक अत्यन्त श्रद्धा के साथ स्वर्गवासी पूज्य दादा श्री रूपचन्द टी. पोहानी एवं पूज्य पिता श्री प्रीतम दास आर. पोहानी की स्मृति में अर्पित कर रहे हैं। परमात्मा के चरणों में यही प्रार्थना है कि स्वर्गवासियों की जीवात्मा को अपने चरणों में निवास प्रदान करें एवं उनकी कृपा दृष्टि सारे परिवार पर बनी रहे।

सेवा में,

सुरेश, अनिल पोहानी एवं समस्त पोहानी परिवार

सुरेश भवन, नाका मदार कालोनी, अजमेर

✆ : 424456

।। ॐ श्री सतनाम साक्षी ।।



स्वामी श्री शान्तीप्रकाश जी महाराज

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥



स्व. श्री रूपचन्द टी. पोहानी

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥



स्व. श्री प्रीतमदास आर. पोहानी

"प्राक्कथन"

प्रिय सज्जनों !

इस संसार में प्रत्येक प्राणी सुख प्राप्ति की चेष्टा करता है, लेकिन संसार में मायावश प्राणी उस चिर सुख की उपलब्धि नहीं कर सकता है। जब तक जीव सन्तों की शरण में जा करके ज्ञान की प्राप्ति नहीं करता है तब तक चिर शान्ति की उपलब्धि नहीं होती है। वेद, दर्शन, उपनिषद्, गीता, स्मृति आदि का अगाध ज्ञान भण्डार है लेकिन इस वैज्ञानिक युग में इन शास्त्रों के अध्ययन करने का कम समय प्राप्त होता है। इस कारण महात्मा लोग बहुत ही परिश्रम करके मानव कल्याण के लिए सरल ग्रन्थों की रचना करते हैं।

इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर परमादरणीय परम श्रद्धेय हमारे पूजनीय गुरु चरण श्री स्वामी बसन्तरामजी महाराज ने "बसन्त विज्ञान माला" की रचना की। इस छोटे से ग्रन्थ में अनेक विषयों पर स्वामी ने सरल व बोधगम्य भाषा में दोहों क[illegible] [illegible]ण किया है। इसमें प्रार्थना, भगवन्नाम की महिमा, मनुष्य द[illegible] की महिमा व कर्त्तव्य, प्रेम, वैराग्यादि उपदेश के प्रकरण हैं। इसके अतिरिक्त योगाभ्यास एवं वेदान्त के विषय पर भी विशद विवेचन किया गया है।

इस दोहावली के अध्ययन करने से मनुष्य के हृदय में प्रेम, उत्साह, वैराग्य कर्त्तव्यादि सदाचार की भावनाएं प्रविष्ट हो जाती हैं तथा राग द्वेषादि चित्त के विकारों की निवृति होकर मानसिक शान्ति उपलब्ध होती है। इस विज्ञान माला का महात्म्य स्वामीजी ने एक दोहे में वर्णित किया है कि—

"ज्ञान ध्यान तो पावहीं, जीवन मुक्ति विदेह।
पढ़ै सुने जो ग्रन्थ यह, बसन्त धार स्नेह।"

यह स्वामीजी का तृतीय संस्करण छपकर तैयार हुआ है। बहुत समय से द्वितीय संस्करण समाप्त हो गया था लेकिन समयाभाव के कारण प्रकाशित न कर सके इसके लिए बार-बार तकाजे आ रहे थे।

मैं आशा करता हूं कि पाठकगण इस परिवर्धित संस्करण का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करके लाभान्वित होंगे। इस परिवर्धित संस्करण के 60 विषयों में 1330 दोहे हैं।

विनीत :

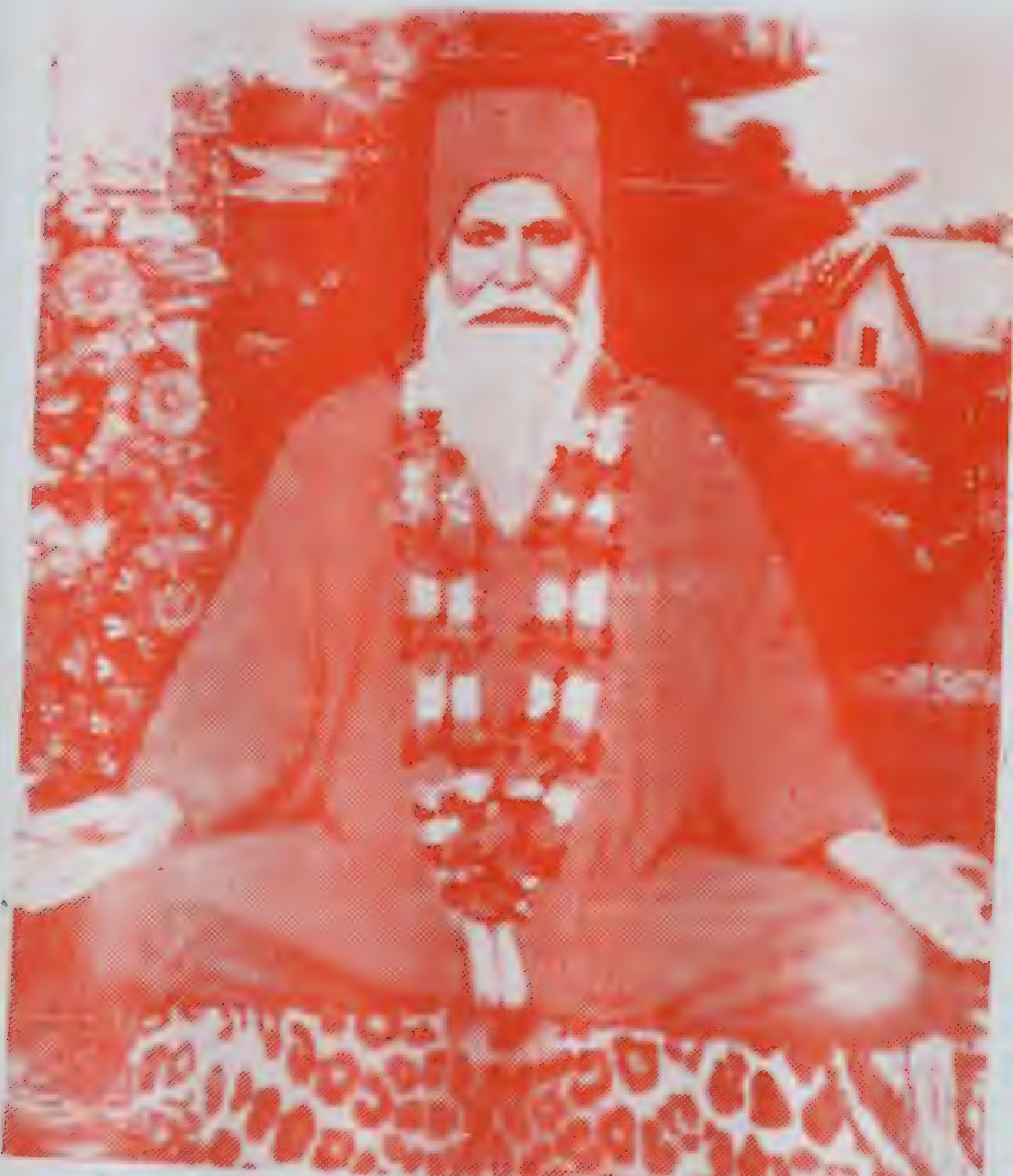
ब्रह्मानन्द शास्त्री

"अनुक्रमणिका"

स्वामी जी के छपे हुए अन्य ग्रंथ

1.	श्री अमर कथा	सिन्धी
2.	तन्दुरुस्ती जो खजानो	सिन्धी व देवनागरी
3.	माता मदालसा की कथा	सिन्धी
4.	राजा अलारक की कथा	सिन्धी
5.	राजा निर्मोही की कथा	सिन्धी
6.	कठोपनिषद्	सिन्धी
7.	ईश केनोपनिषद्	सिन्धी
8.	बसन्त भजनमाला	सिन्धी व देवनागरी
9.	स्वामी टेऊंराम का संक्षिप्त जीवन चरित्र कविता में	हिन्दी
10.	बसन्त वर्खा	हिन्दी
11.	बसन्त श्लोकावली	सिन्धी

॥ ॐ श्री सतनाम साक्षी ॥



श्रीमान् 1008 स्वामी टेऊंरामजी महाराज

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥



श्रीमान् 108 स्वामी बसन्तरामजी महाराज

॥ ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॥



स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज





श्री सत्नाम साक्षिणे नमः ॐ गुरुपमात्मने नमः

श्री बसंत विज्ञान माला

मंगलाचरण

पूरण ब्रह्म गुरुदेव पुनि, पञ्च ईश अवतार ।
इनके युग पद पद्म पर, बसन्त करहुं जुहार ।१।
बसन्त जो बुद्धि चहत है, सुर गुर सन्त समाज ।
सा बुद्धि मुझको देह अब, गुरु गरोबनवाज ।२

॥ ईश प्रार्थना ॥

परम पिता परमात्मा, मेरी सुन अर्दास ।
बसन्त जन के कष्ट हर, दीजे आनन्द रास ।१।
तुम हो समर्थ हे हरी, दाता दीन दयाल ।
बसन्त जन की विनय सुन, काटो कर्म कराल ।२।
तुम नाथों के नाथ हो, मैं हूं नाथ अनाथ ।
हाथ धरे मुझ माथ पर, बसन्त करो सनाथ ।३।
हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, दीनबन्धु दातार ।
बसन्त की रक्षा करो, सुनकर प्रेम पुकार ।४।
प्रेम बिना सूखा हृदय, पावत नहिं आराम ।
बसन्त के मन प्रेम दे, हे हरि रस के धाम ।५।
प्रेम सहित भक्ति करूं, भगवन् मैं दिन रात ।
बसन्त मो मन ना रहे, जग की झूठो बात ।६।
भाव भक्ति मुझमें नहीं, नहिं सुमरन नहिं ज्ञान ।

बसन्त आया शरन तव, मेरा करो कल्यान ।७।
अशरन के तुम शरन हो, राख शरन अब मोहि ।
बसन्त पर कृपा करो, मैं नित ध्याऊं तोहि ।८।
सर्व आसरा छोड़ मैं, शरन पड़ा तव आय ।
बसन्त अपना जान के, रक्षा करो हरिराय ।९।
अन्तर बाहिर शत्रुगण, मोहि करत जे नाश ।
बसन्त तिन की शत्रुता, हे हरि करो विनाश ।१०
दुःख के बादल चौ तरफ, घेर रहे हरिराय ।
बसन्त कृपा पवन से, इनको देहि उड़ाय ।११।
संकट हरन सुख करन हरि, हर सब संकट मोर ।
बसन्त दे सुख संपत्ति, मोहि भरोसा तोर ।१२
हे प्रभु धीरज रुप तुम, धीरज दे मुझ मांहि ।
सुख दुःख संपत विपत्त मांहि, मन घबराये नांहि ।१३
तुम पावन मुझ पतित का, हे हरि करो उद्धार ।
बसंत का मन शुद्ध करो, देहि विराग विचार ।१४

दुष्ट बुद्धि से करत हूं, दुष्ट कर्म दिन रैन ।
बसन्त को हरि सुमति दे, जांते पाऊं चैन ।१५।
पाप किये मैं बहुत ही, पुण्य न कीना एक ।
बसन्त को जन जान के, दे मुझ अपनी टेक ।१६।
कायिक वाचिक मानसिक, जे अघ मुझसे होय ।
बसंत जन की विनय सुन, क्षमा करो हरि सोय ।१७
पिछले अवगुण बख्श ले, आगे सुमती देह ।
अवगुन मुझ से होय नहिं, हे हरि मांगू एह ।१८।
बसन्त मुझ में गुण नहीं, अवगुण की हूं खान ।
अवगुन हरिगुन देहि मुझ, हे हरि कृपा निधान।१९
हे हरि तुम निर्दोष हो, मुझ में हैं बहु दोष ।
बसन्त को निर्दोष कर, देवो जीवन मोक्ष ।२०।
काम क्रोध मुझ में भरा, लोभ मोह अभिमान ।
बसन्त कैसे पाऊं मैं, हे प्रभु भक्ति ज्ञान ।२१।
जन्म जन्म भटकत फिरा, कहँ नहिं पाई ठौर ।

बसंत दे संतोष हरि, मिट जा मन की दौर ।२२

विषय वासना से भरा, मन दौड़त दिन रात ।
कहे बसंत हरि देहि तुम, मेरे मन को शान्त ।२३

शाँति दाँति हरि क्रान्ति दे, बसंत के मन मांहि ।
काम क्रोध मद लोभ की, लहर उठे कब नाहिं ।२४

मेरी ओर न देख प्रभु, देखो अपनी ओर ।
बसन्त जन को देहि अब, चरन कमल में ठौर ।२५

साजन मेरी श्रुति कर, कबहूं भुलावो नाहिं ।
बसंत को नित राखिये, अपने चरनो मांहि ।२६

भो भगवन मुझ दीजिये, भाव भक्ति गुण ज्ञान ।
बसन्त देह निरोग हो, मन में शांति महान ।२७

भो भगवन मुझ पर करो, करुणा, करुणा निधान ।
जानूँ देखूँ आपमय, बसन्त सकल जहान ।२८

सब में देखूँ आपको, जपूँ तुम्हारा नाम ।
बसन्त मो मन ना रहे, और कलपना काम ।२९।

कञ्चन कामिनि कीर्ति, बसन्त काम अरु कोह ।
हे हरि ईर्षा अहम् बुद्धि, कबहूं न व्यापें मोहि ।३०
भक्त वत्सल भगवान मैं, शरन पड़ा तब आय।
बसन्त माया मोह से, हे हरि मोहि बचाय ।३१।
तन मन इन्द्रिय प्रानमम, हे हरि रहहिं निरोग ।
बसंत शुभ मार्ग चले, दुःख का होय वियोग ।३२।
दर्शन देखै नैन हरि, कथा सुनहिं मम कान ।
पांव चलहिं सत्संग में, हाथ करहिं नित दान ।३३
रसना बोले मधुर सच, सुमरे सोऽहं घ्राण ।
मन चित्त चितवे ब्रह्म को, बुद्धि में नैष्ठिक ज्ञान।३४
सहज समाधि बनी रहे, ब्रह्म तत्व के माँहि ।
कारण कार्य जगत यह, बसन्त भासे नाहिं ।३५।
बसन्त तुझ से मांगता, हे हरि तुम सुन लेय ।
ओरों के दुःख हरन की, शक्ति मुझ को देय ।३६

सत्गुरु प्रार्थना

सत्गुर यह अर्दास सुन, पूर्ण कीजिये आश ।
बसन्त को निज सेव दे राखो अपने पास ।१।
पाद पद्म रज मांगहूं, देहि मुझे गुरुदेव ।
बसन्त शिर पर तिलक कर, पाऊं निजातम भेव।२
तुम हो मेरा परम गुरु, मैं हूं तेरा दास ।
नाम दान पुनि ज्ञान दे, काटो जमकी फास ।3।
बसन्त जन की विनय सुन, शक्ती दो गुरुदेव ।
तन मन धन पुनि वचन से, करूं सर्व की सेव ।४।
कष्ट विघ्न दुःख देखके, मो मन होत अधीर ।
बसन्त की यह विनय सुन, सत्गुर दीजे धीर ।५।
सत्गुर तुझ बिन को नहीं, सूझत है रखवार ।
बसन्त की करुणा करे, रक्षा करो हरवार ।६।
हे समर्थ गुरुदेव अब, मेरी करो सहाय ।

सुख सम्पति घर में रहे, कष्ट विघ्न दु:ख जाय ।७

सतगुर मुझको सुमति दे, करो कुमति को नाश ।
बसन्त श्रद्धा प्रेम पुनि, भक्ति ज्ञान प्रकाश ।८।

सहन शक्ति सन्तोष सच, सतसंग सुमरण सेव ।
शम दम श्रद्धा सादगी, संजम दे गुरुदेव ।९।

हे सतगुर मो मन रहे, आतम का अनुराग ।
बसन्त कब भूले नहीं, ब्रह्म विचार विराग ।१०

सामूहिक प्रार्थना

हे पूरण परमातमा, सतचित् आनन्द रूप ।
व्यापक विश्व आधार अज, अखंड अगम अनूप ।१

हे समर्थ सर्वज्ञ हरि, हमरो सुन अर्दास ।
भारत के संकट सभी, शीघ्र करो विनाश ।२।

दुष्टों को दण्ड दीजिये, भक्तों की रख लाज ।
भारत की जयकार कर, बना रहे स्वराज ।३।

दुःख भंजन सुख सदन हरि, दाता दया निधान ।
बसन्त सबको सुमति दे, भक्तो आत्म ज्ञान ।४।
धर्म कर्म हो विश्व में, सम्पत्ति सद् व्यवहार ।
भाव भक्ति सबको करे, आपस में हो प्यार ।५।
होय सुखी संसार सब, दुःख ना पावे कोय ।
रोग रहित तन स्वस्थ हो, पुनि मन निर्मल होय ।६।
बादल वर्षे समय पर, खेती दे बहु धान, ।
दूध दही दे गाय बहु, आनन्द होय महान ।७।
दुर्जन सज्जन होय पुनि, सज्जन पावे ज्ञान ।
ज्ञानी दे के ज्ञान को, मुक्त करे जन आन ।८।
विप्रों में विद्या बढ़े, क्षत्रिय हो रणधीर ।
वैश्यों में सत्यता बढ़े, शूद्र गुणो गम्भीर ।९।।
धर्म सनातन को सदा, शक्ति बढ़ती जाय ।
हम सब धारहिं धर्म को, शक्ति दो हरिराय ।१०

सत्गुरु महिमा

सत्गुरु इक संसार सब, तीनों देव समेत ।
बसन्त सबसे अधिक गुरु, धर गुरु चरनन हेत ।१।
सत्गुरु पूरन ब्रह्म है, सत्गुरु देवन देव ।
बसन्त गुरु की सेव कर, पाय निजातम भेव ।।२।
सत्गुरु हरि का रूप है, हरि है सत्गुरु रूप ।
सगुन रूप गुरुदेव है, निर्गुण हरि स्वरूप ।।३।
बसन्त सत्गुरु देव सम, और देव को नाहि ।
सत्गुरु का दर छोड़कर, बाहिर भटकत काहिं।।४।
सत्गुरु आवत जगत में, भव सिन्धु तारण हेत ।
भाव भक्ति निज ज्ञान की, बसन्त बांधत सेत ।।५।
बसन्त जग में एक है, समर्थ सत्गुरु देव ।
पार करत भव सिन्धु से, दे निज आतम भेव ।।६।
जन्म जन्म के पाप सब, सत्गुरु करत विनाश ।

बसन्त निर्मल कर बुद्धि, दे निज ज्ञान प्रकाश ।७।
बसन्त देश विदेश में, सतगुरु करत सहाय ।
कष्ट विघन दुःख दूर कर, दर्शन देत दिखाय ।८।
बसन्त सतगुरु है सदा, अभिमत फल दातार ।
श्रद्धा से सेवा ररे, पाय पदार्थ चार ।९।
जगत पदार्थ देत हैं, बसन्त देवी देव ।
ब्रह्म ज्ञान वे देत नहिं, पावो गुर से भेव ।।१०।।
बसन्त भगवत है सदा, ज्ञान विज्ञान भंडार ।
सोई सतगुर रूप धर, देते ब्रह्म विचार ।११।
भव सिन्धु गहर गम्भीर है, गुरु बिन तरियो न जात।
करणधार गुरुदेव ही, बसन्त पार लगात ।१२।
जैसे नैन विहीन को, होत न रूप विज्ञान ।
तैसे गुरु उपदेश बिन, होत न आतम ज्ञान ।१३।
पूरण सतगुरु देत है, बसन्त आतम ज्ञान ।
पूरण शिष्य ही लेत है, देके तन मन प्रान ।१४।

साचा शिष्य पावत सदा, गुरु से सब कुछ तात ।
कपटीशिष्य पावत नहीं,दु:खी रहत दिनरात।१५
सूक्ष्म ब्रह्म का सूक्ष्म है, मार्ग इस जग मांहि ।
तांका उपदेशक गुरु,मिलत भाग बिन नांहि।१६
वड़े भाग से मिलत है पूरण सत्गुरु देव ।
शिष्य श्रद्धालू देख जो, देत ब्रह्म का भेव ।१७
सत्गुरु साचा जगत में, बसन्त दुर्लभ आंहि ।
तांको अवश्य मिलतहै,प्यास सच्ची जिह मांहि।१८
हरि कृपा से मिलत गुरु, गुर कृपा से ज्ञान ।
मिलत ज्ञानसे मुक्तिपुनि,बसन्त यह सत्जान।१९
बसन्त ज्ञान विज्ञान का, सत्गुरु है दातार ।
श्रद्धा से गुर शरन जा, लेवो ज्ञान भंडार ।२०
जाग उठो झट भागकर, जा सत्गरु के द्वार ।
आतम तत्त्व को जानके बसन्त हो भवपार २१।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, सत्गुरु शरनो जाय ।

पूरी कर जग कामना और ज्ञान गुण पाय ।२२।
बन्दन कर गुरुदेव के, चरन कमल के मांहि ।
सेवा पूजा नित करो, बसन्त भूलो नांहि ।२३।
ब्रह्म रूप गुरुदेव की, श्रद्धा से कर सेव ।
बसन्त गुरु के वचन सुन, पाय निजातम भेव ।२४।
गुर की आज्ञा मानकर करलो गुर की सेव ।
सत्गुरु को प्रसन्न करो, मेटे मन अहं मेव ।२५।
सब देवों का देव है, पूरण सत्गुरु देव ।
बसन्त तांकी नितकरो, तन मन धन से सेव ।२६।
सेवा से गुरुदेव को, प्रसन्न कर दिन रात ।
बसन्त गुरु प्रसाद से, जीव मुक्त हो जात ।२७।
गुरु सेवा से शिष्य को, रिद्धि सिद्धि चेरी होय ।
बसन्त लोक परलोक में, हो यश भागी सोय ।२८
बसन्त गुरु की सेव से, मिलत ज्ञान विज्ञान ।
भक्ति मुक्ति हरि प्रेमरस, जंह तंह सुख सन्मान ।२९

बसन्त जिस पर धरत है, सत्गुरु अपना हाथ ।
तांके पीछे फिरत है, स्वयं त्रिलोकीनाथ ।३०।
बसन्त गुर के भक्त का, सुरनर होवत दास ।
देत सर्व सुख सम्पदा, विपदा करत विनाश। ३१।
सत्गुरु के निज भक्त को, जोहि न साकत कोय ।
बसन्त भांवे जगत में, कोटि शत्रु भी होय ।३२।

सत्गुरु की कृपा

बसन्त सत्गुरु देव की, जिसपर कृपा होय ।
कथा श्रवण हरि भजन में, लागत है नर सोय ।३३
गुरु कृपा से होत है, कठिन काज जग मांहि ।
बसन्त सत् सत् कहत हूं, झूठ कहूं मैं नांहि ।३४।
गुरु कृपा से देत है, दर्शन आतम देव ।
गुरु कृपा से करत है, विष्णु शंकर सेव ।३५।
गुरु कृपा सम और को, साधन नहिं जग मांहि ।

बसन्त प्रसन्न होय गुरु, तो दुर्लभ कछु नाहिं।३६।
गुरु कृपा से बनत है, बसन्त नर का भाग।
मंद भाग मिट जात है, गुर से कर अनुराग।३७।
गुरु की कृपा जीव का, जंह तंह करत कल्यान।
बसन्त जानत विमुख नहिं, समुझत श्रद्धावान।३८
सतगुरु की कृपा बिना, होत न आतम ज्ञान।
गुरु कृपा से होत है, बसन्त ब्रह्म विज्ञान।३९।
बसन्त सतगुरु की दया, हरत शोक अज्ञान।
जनम मरण दुःख द्वन्द्व हर मुक्ति देत महान।४०।
कर दण्डवत् प्रणाम पुनि, तन मन दक्षिणा देह।
बसन्त सब मद मान तज, गुरु से दीक्षा लेह।४१।
गुरु कृपा कर देह जब, महावाक्य समुझाय।
बसन्त तांको सुमर नित, भूल न कबहूं जाय।४२।
और मन्त्र जे जगत में, चित्त चचल कर देत।
बसन्त इक गुरु मन्त्र ही, मन को थिर कर लेत।४३

गुरु मन्त्र के धनुष में, मन का बाण सुजोड़ ।
ब्रह्म लक्ष में लीनकर, भेद भरम को तोड़ ।४४।
महामंत्र गुरुदेव का, भरम करत सब दूर ।
स्मरन कर वीचार से, होय ज्ञान भरपूर ।४५।
भवसागर के बीच में, है जहाज गुरु नाम ।
बसन्त चढ़कर प्रेम से, पावो पूरण धाम ।४६।
बसन्त गुर का ध्यान धर, सुमरो सतगुरु नाम ।
पूजहूं गुरु के चरन युग, पावो मन विश्राम ।४७
शिव स्वरूप गुरुदेव का, धर मन हिदे ध्यान ।
बसन्त सुमरे शब्द को, पावो पद निर्वान ।४८।
जगत पदार्थ ब्रह्म सुख, जे चाहत हो मीत ;
सत रु से यह मिलत है, बसन्त राख प्रतीत ।४६

सतगुरु के लक्षण

ब्रह्म ज्ञान उपदेश दे, सतगुरु सो पहिचान ।

बसन्त तांके बोध से, शिष्य का होत कल्यान ।
बसन्त आतम ज्ञान जिह, नहिं सशंय भेद भ्रांति ।
सत्गुरु तांको कहत है, जांका मन है शान्ति ।५१।
शान्ति रूप निर्मान शुचि, जांको काम न क्रोध ।
बसंत भवसिन्धु तारते, तिस सत्गुरु का बोध ।५२।
गु कहिये अन्धकार को, रू कहिये प्रकाश ।
तिमर हरे प्रकाश दे, बसंत गुरु लख तास ।५३।
सब संशय को छेदकर, देत अभेद विज्ञान ।
बसन्त तिस गुरुदेव पर, वारो तन मन प्रान ।५४।
पूरण गुरु से लीजिये, पूरण सदुपदेश ।
पूरण पद में जाय के, बसन्त कर प्रवेश ।५५।
ज्ञान ध्यान जो देत नहिं, केवल फूंकत कान ।
बसंत तिस गुरुदेव से, कबहूं न होत कल्याण ।५६।
शिष्य के धन को जो हरे, हरे न मन संताप ।
बसंत तिस गुरुदेव का, मुख देखन है पाप ।५७।

ज्ञान हीन बिन शान्ति जो, झूठा गुरु है सोय ।
बसंत तांके संग से, तरत न देखा कोय ।५८।
मन्त्र जन्त्र जो करत है, धरत न हरि का ध्यान ।
मांगत शिष्य से दान धन, झूठा गुरु सो जान ।५९।
झूठे गुरु के त्याग में, तूं जनि देर लगाय ।
बसन्त तांके संग में, जन्म अकार्थ जाय ।६०।
झूठे गुरु से झूठ की, बसन्त प्राप्ति होय ।
तांते तांको त्याग के, सांचे गुरु को जोय ।६१।
सांचे गुरू के शरन में, सांच मिलत स्वराज ।
बसन्त हृदय शान्ति हो, कछु न कहे जमराज ।६२

भगवन्नाम की महिमा

सत् चित आनन्द ब्रह्म है, अनंत मंगल धाम ।
बसन्त दे जो सर्व सुख, तिसका सुमरो नाम ।१।
बसन्त निश्चय कहत हूं, झूठ न बोलहुं बात ।
सिमरत जो हरिनाम को, भवसिन्धु सो तर जात ।२

धर्म कर्म संसार के, हरि स्मरण सम नांहि ।
बसन्त तांते सर्व तज, कर स्मरन मन मांहि ।३।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, निर्भय हो निस्काम ।
निशदिन हरि का भजन कर, पाओ पूरण धाम ।४।
हरि स्मरण पूजन यजन जप तप दान स्नान ।
बसन्त श्रद्धा से किया, स्वल्प होत महान ।५।
श्रद्धा से जो जपत है, निश दिन हरि का नाम ।
बसन्त सो पावत सदा, जंह तंह सुख विश्राम ।६।
साधन साधे और के, बसन्त जो फल होय ।
राम नाम के स्मरने, मिलहिं वेग फल सोय ।७।
काज सिद्धि जो चहत हो, तो स्मरो श्रीराम ।
राम भजन को छोड़ के, करो न दूसर काम ।८।
बसन्त जो जन जपत नहिं, राम नाम सुख धाम ।
दुःख भोगत पुनि होत नहिं, तांके पूरण काम ।९।
धाम पुरी सब देव के, भेटे जो फल होय ।

बसन्त भगवत भजन से, पावत है नर सोय ।१०।

सब देवन के यजन से, बसन्त जो फल होत ।
केवल हरि के भजन से, सो फल होत उद्योत ।११।

गंगा आदी तीर्थ के, नाये जो फल होत ।
एक राम के भजन से, बसन्त मिलता सोय ।१२।

अश्वमेध यज्ञ करन से, यागक जो फल पात ।
बसन्त सो फल मिलत है, राम भजन से तात ।१३।

काम धेनु चिंतामणी, कल्पवृक्ष है नाम ।
बसन्त स्मरत नाम को, पूरण हो सब काम ।१४।

धर्म अर्थ यश काम सुख, चाहत मोक्ष जु कोय ।
बसन्त हरि के भजन से, पावत है नर सोय ।१५।

जिस जन के मन में बसे, मंगल मय हरि नाम ।
बसन्त तिनके विघ्न बिन, पूर्ण हो सब काम ।१६।

विपत विध्न हो लाख पुनि, दुश्मन कोटि होय ।
बसन्त भगवत नाम से, पहुंच न साकत कोय ।१७।

सर्व आसरा छोड़ जो, लेत अलख की ओट ।
बसन्त तांको लगत नहिं, कबहूं किसकी चोट ।१८।
बसन्त हरि रखवार जिह, कोइ न मारत ताहिं ।
कोट शत्रु की शक्ति भी,टूट जात क्षण माहिं ।१६।
हरी भजन से विमुख का, तन मन रोगी होय ।
बसन्त करत भजन जो, रहत निरोगी सोय ।२०।
सर्व रोग की औषधि, केवल हरि का नाम ।
नाम जपे पा बसन्त तुम, तन मन के आराम।२१।
नाम जपत जो प्रेम से, दुःख नहिं पावत सोय ।
बसन्त सुख सम्पत सदा, तांके घर में होय ।२२।
बसन्त इस संसार में जे सुख चाहत जीव ।
आन रसन को त्याग के, राम नाम रस पीव ।२३।
राम नाम के जाप से, नाश होत सब पाप ।
बसन्त शीतल हृदय हो, रहत न मन संताप ।२४।
उठत बैठत नाम जप, खाते पीते सोय ।

बसंत समय अमोल है, बातन में मत खोय ।२५
तन से सद व्यवहार कर, मुख से नाम उच्चार ।
नैनों से हरि निरख तू, हृदे तत्व विचार ।२६।
सर्व काम को छोड़कर, सुमरो हरि का नाम ।
हरि स्मरण से होत है, बसन्त मन आराम ।२७।
बसन्त जप तू रात दिन, राम नाम मन लाय ।
सहज समाधि लगाय के, परमानन्द को पाय ।२८।
नाम जपत हरि ध्यान में, होस मगन जो नीत ।
बसंत तांकि करत हरि, सेवा बनकर मोत ।२९।
बसंत मुक्त द्वार यह, दुर्लल नर तन पाय ।
जो न भजत भगवान को, सो नर नरके जाय ।३०।
मानुष तन में हरि भजो, बसन्त होय सचेत ।
भजन बिना नर जगत में, पावत योनि प्रेत ।३१।
बसन्त हरि के भजन बिन, जीव पड़त भव कूप ।
नाम जपे नर होत है, नारायण स्वरूप ।३२।

बेमुख हो हरि भजन से, करत सदा, जो पाप ।
बसन्त सो नर नरक महिं,पावत अति संताप।३३।

आलस्य कर जो जपत नहिं, बसन्त गुरु गोपाल ।
डार फास गल त्रासदे, सिह मारत जम काल ।३४।

बसन्त मरती बार जो, जपत राम का नाम ।
पावन हो सब पाप हर, पावत हरि का धाम ।३५।

जिह्वा तन मन प्रान से, निशदिन जपिये नाम ।
बसन्त आनन्द पाय तुम, छोड़ कलपना काम ।३६।

जैसे कृपण दाम को, चिन्त करत दिन रात ।
बसन्त तैसे नाम भज, बोल न दूजी बात ।३७।

हास्य द्वेष भय क्रोध वा, प्रेम काम से जोय ।
एक बार हरि नाम ले, कोट पाप सो खोय ।३८।

करत भजन जो प्रीति से, लेकर गुरु आधार ।
बसन्त सो जावत नहीं, कबहूं जमके द्वार ।३९।

और नाम के जपन से, और सर्व फल होय ।

बसन्त गुरु के नाम विन, मुक्त न पावत कोय ।४०।
अनन्त स्वरूप ब्रह्म है अनंत उसके नाम ।
बसन्त जो गुरु देहि सो नाम जपो सुख धाम ।४१।
सतगुरु नाम जहाज है, पार करत भव सिन्धु ।
बसन्त सिमरे नाम को, पाओ परमानन्द ।४२।
बसन्त गुरु का नाम जप, भेद भर्म कर दूर ।
पाप ताप संताप सब, हो जावहिं काफूर ।४३।
बसन्त सतगुरू नाम जप, अर्थ सहित हरवार ।
तीनों पढ़दा तोड़ के, देखो निज दीदार ।४४।
बसन्त गफलत छोड़कर, बिन रसना रट नाम ।
मन में ओऽम् नाम जप, स्वासे सोऽहम् नाम ।४५।
बसन्त सोऽहं नाम जप, स्वास स्वास के माहिं ।
सो मैं पूर्ण ब्रह्म हूं, यह कब भूलो नाहिं ।४६।
ओऽम् में सब मंत्र हैं, ओऽम् सोऽहं माहिं ।
तांते सोऽहम् नाम जप, बसन्त भटकत काहि ।४७

स्वासा सोऽहं जपत है, बसन्त दिन अरु रात ।
माया से मन मोड़ के ध्यान धरो तुम तात ।४८।
निशि दिन सोऽहं नाम जप, सफल करो निज स्वास
बसन्त सोऽहं जाप बिन, मिटहिं न जम की त्रास ।।
ओऽम् का नित ध्यान धर, ओऽम् का कर जाप ।
बसन्त ओऽम् की लक्ष लखि, जानो अपना आप ५०
सहस द्वादस वार जो, जपत ओऽम् दिन रैन ।
सो योगी पावत सदा, बसन्त ब्रह्म सुख ऐन ।५१।
बसन्त जो जन प्रेम से, नाम जपत मन जोत ।
पावत सो नर परम पद, यह मन राख प्रतीत ।५२
बसन्त प्रीत प्रतीत से, करो नाम का जाप ।
मैला मन ऊजल करो, जानो अपना आप ।५३।
बिना भजन भगवान के, मन निर्मल ना होत ।
बसन्त निर्मल मन बिना, ज्ञान न होत उद्योत ।५४
मैला मन तब जानिये, जब मन भोगन आश ।

आश तजे बिन नाम का, बसन्त हो न हुलास ।५५

नाम सदा सुख धाम है, कर्त्ता पूरण काम ।
सुमर सुमर पावंहु सदा, बसन्त तुम आराम ।५६।

बसन्त उधारे नाम बहु, नीच ऊंच नर नार ।
तांको सिमरे रैंन दिन, भव सिन्धु उत्तरो पार ।५७

कुबड़ी करमा भीलनी, गनका गौतम तीय ।
नाम जपे अघ ओघ हर, बसन्त पाया पीय ।५८।

सोची मोचो नाम जप, प्रकट भये जग मांहि ।
बसन्त श्रद्धा भाव से, निशदिन सुमरो ताहिं ।५९

घने भक्त ने प्रेम से, बसन्त सुमरन कीन ।
गोविन्द गाय चरावते, होय तास आधीन ।६०।

त्याग कसाई कर्म को, सधने सुमरयो नाम ।
बसन्त तोड़ भीत को, विपत हरी घनश्याम ।६१

द्रौपदा ने दीन हो, कीन कृष्ण का ध्यान ।
बसन्त तांके हित धरा, वसनरूप भगवान ।६२।

सुमरन कीना सैन ने, बसन्त प्रीत लगाय ।
नाई बनकर भूप का, कुष्ट हरा हरि आय ।६३।
भक्त सुदामा भक्ति से, गया कृष्ण के पास ।
बसन्त तांका दूःख हर, दीनों हरि सुख रास ।६४।
बसन्त आधा राम कहि, मुक्त भये गजराज ।
जपते सारा नाम जो, पावत सो स्वराज ।६५।
वाल्मीक तज पाप को, उलटा जपकर राम ।
बसन्त पाया परमपद, जग में कीना नाम ।६६।
रंका बंका नाम जप, पाया मन आराम ।
धूली सम धन समझके, बसन्त भये निष्काम ।६७
अजामेल जप नाम को, पाई मुक्ति अनूप ।
बसन्त वैकुन्ठ में गया, धार हरी का रूप ।६८।
बसन्त नामे नाम जप, जंह तंह देखा राम ।
बहुत बार दर्शन किया, कीने सबके काम ।६९।
भक्त ध्रुव मन दृढ़ कर, हरि का स्मरण कीन ।

अटल धाम पुनि राज पा, होया दीन अदीन ।७०।
नाम जपत प्रदलाद को, दूःख न लागा कोय ।
विपदा में रक्षा करो, हरि नुसिह वपु होय ।७१।
हनुमान जप नाम को निज वश कोना राम ।
बसन्त राम प्रताप से, किये कठिन सब काम ।७२
बंसन्त शंकर नाम जप, अचल समाधि लगाय ।
मुक्त करत वाराणसी, तारक मंत्र दृढ़ाय ।७३।

प्रेम

प्रेम, रूप परमात्मा, परमेश्वर है प्रेम ।
बसन्त दोनों एक लख, प्रेम करे पा क्षेम ।१।
लगन लगी जा ईश से, प्रेम कहावे सोय ।
बसन्त माया से लगी, मोह कहततिहं लोय ।२।
कब रोना कब हंसना, कब करना चुप ध्यान ।
बसन्त गाना नाचना, प्रेम लक्षण पहिचान ।३।

पुरुषार्थ कर प्रेम से, प्रेम पन्थ में लाग ।
बसन्त प्रेम प्रकाश से, करि हरि में अनुराग ।४।
प्रीतम हित जो सब तजे, प्रेमी कहिये सोय ।
बसन्त ऐसा जगत में, विरला प्रेमी होय ।५।
प्रीतम के पद पद्म पर, करे निचछावर प्राण ।
प्रेमी पावत परम रस, वसन्त हरि मद मान ।६।
प्रेमी प्रीतम को बिटा, अपने दिल के मांहि ।
सूनी दिल प्रीतम बिना, शोभा पावत नाहिं ।७।
बसन्त शैय्या प्रेम पर, चेतन चदर बिछाय ।
शब्द पत्ती से सोय कर, श्रुति सुहाग को पाय ।८।
प्रीतम तेरा जागता, तेरे हित दिन रात ।
बसन्त तू भी जाग के, प्रीतम से कर बात ।९।
प्रीतम चित्त का चोर है, तू भी हो जा चोर ।
चोर चोर से मिलत है, बसन्त मिलत न और ।१०
पहले गुरु से प्रेम कर, पीछे लख करतार ।

बसन्त छत बन जान हित, खड़ी करो दीवार ।११
प्रेम आग में जार दे, मैं मेरा अहंकार ।
एक मेक हो पीय से, बसन्त पा दीदार ।१२।
प्रथम पतंग से सीख ले, प्रेम करन की रीत ।
बसन्त पीछे राखले, प्रीतम से तुम प्रीत ।१३।
प्रीत करत ही पतंग जिम, देत दीप में प्रान ।
बसन्त ऐसे प्रीत में, प्रीतम को दे जान ।१४।
नेह निभावन सीख ले, मीना से तुम तात ।
बिछुड़त प्रीतम तोय से, बसन्त वह मरजात ।१५।
मच्छ कच्छ आदी जीव बहु, रहते हैं जल मांहि ।
बसन्त प्रीती मीन सम, और किसी की नांहि ।१६
ओरों का घर उदक है, जीवन किस का नांहि ।
जीवन जल है मीन का, बसन्त सोच मन मांहि ।१७
चात्रक स्वातां बून्द बिन, लेत न जल जिम और ।
बसन्त तिम हरि प्रेम बिन, विषय ओर मत दौड़

देख प्रेम पय नीर का, मित्र दुःखे दुःख पाय ।
होत सुखी सुख में सदा बसन्त सहज स्वभाय ।१६
लगन लगी जा पीय से, ताहि हृदे में राख ।
बसन्त अपने आप तुम, काहूं को मन भाख ।२०।
प्रीतम तेरे प्रेम को, जानत है मन माहि ।
बसन्त भोगी भूण्ड जन, कबहूं जानत नाहिं ।२१।
प्रेमी अपने प्रेम को, राखो उर में गोय ।
बसन्त प्रकट होत हो, जात दीप ज्यों खोय ।२२।
प्रीतम हित तुम रोय के, हृदे प्रेम जगाय ।
बसन्त जागे प्रेम को, चेतन होय बढ़ाय ।२३।
प्रीतम के गुण देख के, प्रीतम से जिय जोड़ ।
तर्क करे अवगुण धरे, बसन्त मुखना मोड़ ।२४।
बसन्त तर्क कुतर्क से, प्रीति रीत घट जात ।
चित शांती में रहत नाहि, मन में हो उत्पात ।२५।
बसन्त नेह लगाय के, आधे में मत तोड़ ।

दुःखसुख शिर पर सहनकर,नेह निभावो तोड़।२६
नेह लगाना सुगम है, अगम निभाना जान।
नेह निभावत बसंत को,दुःखसुख सहबुद्धिमान।२७
हे प्रेमी सुन कान दे सुन्दर शिक्षा एह।
तन मन धन दे प्रान पर, नेह न जाने देह।२८।
प्रीतम जो दुःख देह तो, बसन्त परीक्षा जान।
धीरज मन में आन के,सहन करो हित मान।2९।
सुख दुःख आदी द्वन्द को, सहन करत जो तात।
बसन्त आनन्द पाय के,जीव मुक्त हो जात।३०।
प्रीतम तेरे प्रेम में, भूल गया संसार।
बसन्त तब अनुग्रह से, पाया पद निर्धार।३१।
दर्शन कर निज देव का, होया मन मस्तान।
देह गेह की सार नहिं, धरत उसी का ध्यान।३२।
सार तार मन यार को, बसन्त और न तात।
लगन लगी मन मगन भया,जाने को दिन रात।३३

"विरह"

प्रीतम तेरे दरस बिन, मोहि न आवे चैन ।
बसन्त तेरे विरह में, तड़फत हूं दिन रैन ।१।
रैन बिताऊँ रोय कर, दिन को खोल कपाट ।
बसन्त नित देखत रहूं, प्रीतम तेरी बाट ।२।
अब मैं तेरी हो चुकी, केवल तू अपनाय ।
बसन्त तुम बिन कौन है, मोहि गले जो लाय ।३।
प्रीतम यह सन्देश सुन, मन में फेरि विचार ।
बसन्त मेरे प्राण का, हो तुम इक आधार ।४।
मम जीवन आधार तुम, जैसे तन का प्रान ।
प्राण बिन तन ना रहे, बसन्त त्यों मम जान ।५।
बसन्त तेरे दरस बिन, मो मन रहत उदास ।
करि कृपा मोहि दरस दे, पूरण करिये आश ।६।
बसन्त जैसे मीन का, जीवन जल बिन नाहिं ।

तैसे मेरा जीवना, तुम बिन नाहिं जग माहिं ।७।
प्रीतम तेरे विरह में, जीव जरत है मोर ।
बसन्त विछुड़त चान्द से, जैसे जरत चकोर ।८।
चकोर बिछुड़त चान्द से, बसन्त खात अंगार ।
चाहत जल कर जा मिलूं, प्रीतम से इकबार ।९।
बसन्त पपिहा प्रेम से, निशदिन करत पुकार ।
प्रीतम बादल मोहि दे, दर्शन बून्द उदार ।१०।
मोहि भुलाओ नाहिं तुम, मैं न भुलाऊँ तोहि ।
बसन्त करुणा कर प्रभु, अब अपनाओ मोहि ।११।

"हरि की प्रीति"

विषय वासना त्याग के, हरि से करले प्रेम ।
दुःख न व्यापै देह में, बसन्त हो मन क्षेम ।१।
बसन्त हरि से प्रीति कर, छोड़ जगत जंजाल ।
प्रीति जगत को देत दुःख, हरि की करत निहाल २।
बसन्त हरि से प्रीति कर, तजि लोगों की प्रीति ।

लोक प्रीति से जात है, बृथा आयू बीत ।३।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे दीप पतंग ।
आप जलावत अग्नि में, छोड़त नाहिं उमंग ।४।
बसन्त हरि प्रीति कर, जैसे जल से मीन ।
प्राण तजत है विरह में, जीवत ना क्षण तीन ।५।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे मछली नीर ।
जीवत जल से खेलती, बिछुड़त तजे शरीर ।६।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे भ्रमर फूल ।
लेत गन्ध बन्ध जात सो,होत न कब प्रतिकूल ।७।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे लोभी दाम ।
भूलत कबहुं न एक क्षण स्मरत आठों याम ।८।
बसन्त हरि से प्रीति कर, जैसे बालक मात ।
निशदिन स्मरत मात को, भूल न कबहूं जात ।९।
बसन्त हरि से प्रीति कर, त्याग सकल अभिमान ।
मान तजे बिन भक्त पर, रीझत ना भगवान ।१०।

प्रीति भुलावो जगत की, हरि की भूलो नाहिं ।
त्याग प्रीति नर नाम की, ठौर न पावत काहिं ।११।
बसन्त हरि का ध्यान धर, जैसे चांद चकोर ।
ध्यान धरत क्षण एक नहिं, देखत काहूं ओर ।१२।
बसन्त ऐसे नाम रटि, जैसे पपोहा स्वान्ति ।
बूंद मिले बिन करत नहिं, अपने मन में शांति ।१३।
बसन्त इम हरि नाम का, श्रवण कर दिन रैन ।
चित्त धर के जिम सुनत है, हिरन नाद का बैन ।१४।
बसन्त बक बक छोड़ पुनि, मौन करे जप नाम ।
फुरने से मन रोक के, पाओ तुम आराम ।१५।
हंसो विषय विलास तज रोय भजो हरि नाम ।
हस कर ना किस पाइया, बसन्त हरि का धाम ।१६।
बसन्त हंसी करत जो, पुनि बोलत बहु बात ।
तांसे स्मरण होत नहिं भटकत सो दिन रात ।१७।

सोना और जागना

सोने में भयता रहे, जागे निर्भय होय।
बसन्त तांते जाग कर, निर्भय रहिये लोय ।१।
बसन्त अविद्या नींद में, सोय रहा दिन रात।
स्वप्न जगत के भोग बिन, सूझत और न बात ।२।
त्यागे अविद्या नींद को, बसन्त होय सुजाग।
करे सङ्ग सत्पुरुष का, आतम अन्तर लाग ।३।
बसन्त अविद्या नींद से, जब जागस है जीव।
तब पावत निज आतमा, सत्चित् आनंद शीव ।४।
मात पिता धन धाम सुत, बन्धु त्रिया नहिं तोर।
बसन्त तांते जाग तूं, मोह नींद तजि घोर ।५।
काम क्रोध तस्कर बसे, बसन्त इस तन माहिं।
ज्ञान रतन सो हरत है, जागो सोवत काहिं ।६।
बसन्त गफलत नींद से हरदम हो हुशियार।

पुनि नयनों की नींद तज, स्मरो सत् करतार ।७।
बहुत जन्म सोते गये, अब तो निन्द्रा त्याग ।
बसन्त जप हरि नाम को, मन में धरि अनुराग ।८।
सोय बिताये जन्म बहु, जागे जन्म न एक ।
बसन्त किया न कर्म शुभ, नहिं ली हरि की टेक ।९।
बसन्त जागी भजन कर, रहत सदा क्यों सोय ।
सोते आयू आपनी, दयी अमोलक खोय ।१०।
बसन्त निन्द्रा नयन की, त्यागे प्रात जाग ।
स्मरन कर गुरु शब्द का, तज विषयों का राग ।११।
बसन्त अमृत वेल में, आलस्य कर मत सोय ।
जागो हरि का नाम जप, मैल पाप को धोय ।१२।
बसन्त प्रातःकाल उठ, धरि मन गुरु का ध्यान ।
सोऽहं अजपा जाप जप, पावो पद निर्बान ।१३।
बसन्त अमृत वेल में, अमृत बरसे नीत ।
जागी उठ सो पीजिये, सोय रहो मत मीत ।१४।

अमृत वेला भजन की, भजन करो चित्त लाय।
बसन्त मन को थिर करे, भजनानन्द को पाय।१५।
बसन्त अमृत वेल में, यत्न करे कर योग।
लाये अचल समाधि को, योगानन्द को भोग।१६।
ब्रह्म मुहुर्त जाग के, बैठ करो वीचार।
को मैं हूं को ब्रह्म है, को है यह संसार।१७।
बसन्त पिछली रात को, सावधान हो जीव।
छोड़ विषय रस वासना, नाम नाम रस पीव।१८।
बसन्त पिछली रात को, जो जन रहता सोय।
जोते निर्धन रोग युत, मर कर कूकर होय।१९।
बसन्त जागत जो नहीं, मानुष तान को पाय।
जाते भोगत बहुत दुःख, मरकर नरके जाय।२०।
तजकर निन्द्रा नयन की, बसन्त जाग प्रभात।
प्रभु का धर ध्यान तुम, बोल न दूजो बात।२१।

मनुष्य देह की महिमा

उत्तम मानुष देह है, सब योनियों के मांहि ।
बसन्त मानुष देह सम, गण गन्धर्व सुर नांहि ।१।
बसन्त मानुष देह को, पुनि पुनि चाहत देव ।
मनुष्य देह को करत है, निशदिन सुरगण सेव ।२
बसन्त मानुष देह है, शुभ गुण ज्ञान भण्डार ।
और देह में होत नहिं, प्रकट तत्त्व विचार ।३।
बसन्त मानुष देह के, सुन्दर अङ्ग आकार ।
और योनि टेढी सबी, देखो नयन पसार ।४।
पांच कला है मनुष्य में, चार कला पशु जान ।
तीन अण्ड दो स्वेद पुनि, इक उद्भुज पहिचान ।५
जाग्रत मानुष देह है, स्वप्न पशु तनु ओर ।
वनस्पती है नींद में, बसन्त कहत निचोर ।६।
बसन्त मानुष जगत में, सब का है आधार ।

जांके बस में रहत हैं, खग मृग सुर अवतार ।७।

और देह परतंत्र हैं, स्वतन्त्र मानुष देह ।
बसन्त चाहत कर्म जो, सो इस में कर लेह ।८।

बसन्त चेतन मनुष्य तन, पुरुषार्थ का गेह ।
तामें कर्त्तव्य कर्म कर, खोय न वृथा एह ।९।

बसन्त मानुष देह में, इन्द्रिय मन बुद्धि प्रान ।
चौदह हैं पुनि देवता, चेतन ज्योति महान ।१०।

भोग भोग शुभ कर्म कर, मानुष देह मंझार ।
भोग हेत पशु योनि है, नाहिं कर्म अधिकार ।११।

कर्म करे सुख स्वर्ग का, बसन्त पाय अपार ।
मुक्ति हेतु सत्संग कर, साधो साधन चार ।१२।

मनुष्य देह बिन हरि भजन, बसन्त होत न काहिं ।
बिना भजन हरि ज्ञान नहिं, मुक्ति ज्ञान बिन नाहिं।

धर्म कर्म हरि भजन हित, पाया नर तन मीत ।
बसन्त तांते युक्ति से, कर तीनों से प्रीति ।१४।

बसन्त कहत पुकार के, सुनो बचन मम एह ।
खोय न हरि के भजन बिन, दुर्लभ मानुष देह ।।
बसन्त पुनि पुनि मिलत है, धन योवन सुत नार ।
मानुष तन फिर मिलत नहिं, करके देख विचार ।।
पुण्य कर्म हरि भजन ते, पायी मानुष देह ।
बसन्त दीनी राम ने, तांको तुम जप लेह ।१७।
बसन्त दुर्लभ देह में, करो अलौकिक काम ।
मन जीते गुरु नाम जप, पावो पूर्ण धाम ।१८।
मनुष्य देह हरि भजन बिन, बसन्त निष्फल जान ।
तांते हरि का भजन कर, जांते हो कल्यान ।१९।
बसन्त मानुष देह में, अपना आप पछान ।
और देह में होत नहिं, निश्चय आतम ज्ञान ।२०।

मनुष्य देह का कर्त्तव्य

मानुष तन को पाय के, करो सदा उपकार ।

उपकारी को मिलत है, बसन्त स्वर्ग द्वार ।१।
मानुष तन को पाय के, किसको ना दुःख देह ।
बसन्त अहिंसा से सदा, सब का हित कर लेह ।२।
मानुष तन को पाय के, त्यागे विषय विकार ।
बसन्त हृदय में सदा, देवो गुण को धार ।३।
मानुष तन को पाय के, कीजे कपट न कूड़ ।
कपटी झूठे मनुष्य के, बसन्त सुख में धूड़ ।४।
मानुष तन को पाय के, तज मत्सर मद मान ।
बसन्त निश्चय कहत हूं, तोहि मिले भगवान ।५।
मानुष तन को पाय के, तज तूं लालच लोभ ।
बसन्त मन संतोष धर, पावो जग में शोभ ।६।
मानुष तन को पाय के, प्रभू से कर प्रेम ।
बसन्त तेरा हरि करे, निश्चय योग रु क्षेम ।७।
मानुष तन को पाय के, करो हरि का जाप ।
बसन्त अपने उदर हित, मत कीजे को पाप ।८।

मानुष तन को पाय के, तजो काम रु क्रोध।
कामी क्रोधी जोव को, बसन्त होत न बोध ।९।
मानुष तन को पाय के, सच्च का कर व्यापार।
बसन्त झूठ अन्याय कर, देख न नरक द्वार ।१०।
मानुष तन को पाय के, धन से कर ले दान।
बसन्त दानी पुरुष को, देत हरी धन मान ।११।
मानुष तन को पाय के, दीनों से कर प्यार।
बसन्त दीना नाथ हरि, तेरा करहिं उद्धार।१२।
मानुष तन को पाय के, राख दया मन माहिं।
बसन्त निर्मल होय चित्त, दूर होत हरि नाहिं।१३
मानुष तन को पाय के, जग से कर वैराग।
विषय भोग को त्याग के, बसन्त हो बड़ भाग।१४।
मानुष तन को पाय के, निश दिन करो विचार।
बसंत अवगुन झूठ तज, गहो सत्य गुन सार ।१५।
मानुष तन को पाय के, बसन्त छोड़ कुसंग।

निशदिन संतन संगकर, पावो पुरुष असंग ।१६।
मानुष तन को पाय के, नाम स्मर धर ध्यान ।
बसन्त तांते पाइये, मन में शान्ति महान ।१७।
मानुष तन को पाय के, पावो आतम ज्ञान ।
बसन्त तांसे नाश हो, मन का शोक अज्ञान ।१८।
मानुष तन को पाय के, ले सत्गुरु की ओट ।
बसन्त गुरु की शरण से, लगे न जम की चोट ।१९।
मानुष तन को पाय के, सत्गुरु की कर सेव ।
बसन्त जप गुरु नाम को, पाय निजातम भेव ।२०।

साधारण धर्म

वेद स्मृति जो कहत हैं, धर्म पछानो सोय ।
जिहं धारे सुख कीर्ती, बसन्त जग में होय ।१।
बसंत कहते वेद यह, परम धर्म निर्धार ।
तन मन धन से कीजिये, निशदिन श्रेष्टाचार ।२।

प्रातः शोच स्नान कर, स्मरण संजम ध्यान ।
दया मृदु शम शील दम, सत्य वचन तप दान ।३।
ब्रह्मचर्य अस्तेय धृति, क्षमा विराग विचार ।
गुरु सेवा निष्कामता, अहिंसा पर उपकार ।४।
श्रद्धा तितिक्षा मुमुक्षता, समता ज्ञान विज्ञान ।
बसन्त श्रेष्ठाचरण यह निर्भय तोष अमान ।५।
सदाचार सुख देत है, उभय लोक के मांहि ।
बसन्त इन बिन जगत में, सुख पावत को नांहि ।६
धर्म रक्षा जो करत है, तांकी रक्षा होय ।
बसन्त त्यागे धर्म जो, नाश होत है सोय ।७।
लोक लाज भय लोभ से, धर्म न कबहूं त्याग ।
बसन्त लाखों कष्ट सह, करो धर्म में राग ।८।

वर्ण धर्म

चार वर्ण है जगत में, वेद कहत निर्धार ।

बसन्त गुण औ कर्म से, आप रचे करतार ।१।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य पुनि, चौथा शूद्र जान ।
बसन्त इनके धर्म अब, कहूं, सुनो दे कान ।२।
बसन्त सो है विप्र वर, जा माँहि सम सन्तोष ।
जप तप संजम धैर्य पुनि, हृदय राग न रोष ।३।
विष सम जाने विषय रस, सांप सरस सम्मान ।
बसन्त शव सम तीय लख, ब्राह्मण सो प्रधान ।४।
काम क्रोध, मद, ईर्षा, लोभ मोह अहंकार ।
बसन्त इनसे रहित जो, ब्राह्मण सो निर्धार ।५।
पढ़त पढ़ावत वेद पुनि, लेवै देवै दान ।
करत करावत यज्ञ जो, ब्राह्मण सो पहिचान ।६।
निशदिन बोलत सत्य जो, करत गुरु की सेव ।
धारे अहिंसा धर्म को, बसन्त सो भू देव ।७।
ध्यान धरे नित ब्रह्म का, जपे ब्रह्म का जाप ।
बसन्त ब्राह्मण सोय जो, जाने अपना आप ।८।

ब्रह्मचर्य को धार कर, राखे ओज अपार ।
बसन्त जीते इन्द्रिय मन, क्षत्री सो निर्धार ।९।
शस्त्र विद्या सीख ले, वेद पढ़े नित जोय ।
यज्ञ करे दे दान बहु, क्षत्री कहिये सोय ।१०।
सन्तों की सेवा करे, देत चोर को दण्ड ।
धर्म नीति से राज कर, क्षत्री सो प्रचण्ड ।११।
बसन्त जांके राज में, सुख पावत नर नार ।
राज करे बहु काल सो, जावत स्वर्ग मंझार ।१२।
जिस राजा के राज में, प्रजा अति दुःख पाय ।
तांका राज न रहत थिर, बसन्त कहि सत् भाय १३
जीवत जो नित धर्म हित, मरत, धर्म के हेत ।
बसन्त क्षत्री सो सदा, उभय लोक यश लेत ।१४।
अश्वमेध यज्ञ सहस का, बसन्त जो फल होय ।
प्रजा पाले मिलत है, भूपति को फल सोय ।१५।
राजा बिन प्रजा नहीं, प्रजा बिन नहिं राज ।

दोनों के मेलाप से, बसन्त हो सिद्ध काज ।१६।
दीन दूःखारी मनुष्य का, आंसू पोषत जोय ।
देत हर्ष पुनि ताहिं को, राजा कहिये सोय ।१७।
बसन्त माली बाग को सीञ्च लेत जिम फूल ।
प्रजहिं दे सुख भूप तिम, पुनि धन ले अनुकूल ।१८
बसन्त जगमें करत जो, निशदिन वणिज्य व्यापार ।
चलत धर्म मर्याद से, सो है वैश्य उधार ।१९।
बसन्त बोये खेत जो, उपजावे बहु धान ।
गोधन की रक्षा करे, वैश्य सोय प्रधान ।२०।
देते धन से दान जो, करे वेद विधि याग ।
बसन्त विद्या को पढ़े, वैश्य सोय बड़ भाग ।२१।
बसन्त जो सेवा करे, होय सदा निर्मान ।
तांसे जीवन जो करे, शूद्र सो पहिचान ।२२।
कष्ट चरम लोहादिका, काम करे नित जोय ।
तांसे निज पोषण करे, शूद्र कहावे सोय ।२३।

बसन्त खावत मांस मद, दूःख सर्व को देह ।
दया हीन पुनि क्रूर हो,अन्त्यज लक्षण एह ।२४।
बसन्त मुख है विप्रवर, बाहू क्षत्रिय जान ।
उरु वैश्य पद शूद्र हैं, वेद करत वख्यान ।२५।
जैसे चारों अङ्ग से, बसन्त पूरण देह ।
तैसे चारों बरण से, पूरण जग लख लेह ।२६।
ज्ञान शक्ति धन सेव को, चाहत है नर नार ।
इन चारों बिन चलत नहिं,बसन्त यह संसार ।२७।
ब्राह्मण धारे ज्ञान को, क्षत्रिय हो बलवान ।
वैश्य उपाये द्रव्य को, शूद्र सेवा ठान ।२८।
जिस मानुष में कम गुण, नाहिं वर्ण अनुसार ।
बसन्त सो नर अधम है, जावत नरक द्वार ।२९।
अपने अपने धर्म से, सबका होत कल्यान ।
आन धर्म से मिलत नहिं,बसन्त सुख सन्मान ।३०।
बसन्त अपने धर्म में, मरना जीवन जान ।

और धर्म में जीवना, मरने के सम जान ।३१।
बसन्त निज निज धर्म से, सब जन राखो हेत ।
प्रीति नीति प्रतीति से, राख धर्म का खेत ।३२।
जिस नर का निज धर्म में, पूर्ण नहिं विश्वास ।
सो नर पावत चैन नहिं, बसन्त रहत उदास ।३३।
बसन्त जग में धर्म सब, पहुंचावत हरि धाम ।
तो भी अपने धर्म से, पावो तुम विश्राम ।३४।
बसन्त श्रद्धा प्रीति से, धर्म सर्व फल देह ।
बिन विश्वास न होत कछु, सन्त कहत है एह ।३५।
वर्ण धर्म के पालते, सुमरो हरि का नाम ।
बसन्त जीवत पाय सुख, मर कर जा हरि धाम ।३६

"उत्तम धर्म"

सब धर्मों में सार इक, चित्त की शुद्धता जान ।
बसन्त चित्त शुद्धता बिना, धर्म न पूरण मान ।१।

बसन्त अशुद्ध विचार तुम, मति कीजे मन मांहि ।
सद्‌गति मलिन विचार से, कोऊ पावत नांहि ।२।
बसन्त जिस जिस कर्म से, चित्त की शुद्धता होय ।
निशदिन श्रद्धा प्रेम से, कर्म करो तुम सोय ।३।
मन इन्द्रियों के दमन बिन, हृदय शुद्ध ना होय ।
बसन्त चित्त शुद्धता बिना, ज्ञान न पावे कोय ।४
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति हो, बसन्त निश्चय जान ।
तांते आतम ज्ञान हित, शम दम साध सुजान ।५।
विषय त्याग बिन दमन नहिं, त्याग न बिन वैराग ।
बिन विवेक वैराग नहिं, बसन्त तां महिं लाग ।६।
सत्य असत्य को जानना, विवेक कहिये सोय ।
बसन्त है सत् आतमा, झूठ अनातम होय ।७।
त्याग अनात्म वस्तु को, आतम से कर राग ।
सत्य धर्म यह सर्व में, बसन्त इन में लाग ।८।

"गुण प्रशंसा"

गुणो पुरुष सब देश में, ऐसे शोभा पात ।
जैसे मस्तक मुकुट में, बसन्त मणि सोहात ।१।
प्रकट करत गुणवान को, बसन्त गुण जग माहिं ।
जैसे सुगन्धी पुष्प को, कबहुं छिपावत नाहिं ।२।
बसन्त गुण गुणवान का, आपहिं प्रकट होत ।
तेज प्रकट जिम होत है, जग में भानु उद्योत ।३।
गुणी पुरुष के संग में, निर्गुण हो गुणवान ।
चंदन के संग नीम जिम, चंदन हो प्रधान ।४।
बसन्त गुण औ देह में, अन्तर बहु पहिचान ।
थोरे दिन तन रहत है, गुण बहु दिन थिर मान ।५।
बसन्त उद्यम नित करो, गुण धारण के माहिं ।
कितना तर धनवान हो, गुणी पुरुष सम नाहिं ।६।
बसन्त गुण हित यत्न कर, काहि संवारत रूप ।

ज्यों शोभत तिय धर्म से, नहिं सुन्दर स्वरूप ।७।

गुण से होवै गौरता, बिन गुण होय न मान ।
गन्ध हीन जिम पुष्प का, करत न को सन्मान ।८।

गुण का कदर न होत है, बिन ग्राहक जग मांहि ।
बसन्त जिम बिन जौहरी, हीरे का मुल्ह नांहि ।९।

बसन्त निज गुण कहत ही, ऊंच नीच हो जात ।
तांते निज गुण भाख मत, सन्त कहत अस बात।१०।

नर पूजत निज गुणन कर, कुल कर पूजत नांहि ।
पूजत ना वासुदेव कर, वासुदेव जग मांहि ।११

बसन्त गुण गुणवान का, जानत है गुणवान ।
जैसे जग में रूप को, आंख करत पहिचान ।१२।

निर्गुण अवगुण गाहको, बसन्त बहु जग मांहि ।
गुणी पुरुष गुण गाहको, थोरे हैं बहु नांहि ।१३

बोल न गुण गुणवान ढिग, वह जानत है आप ।
बसन्त शठ को मत कहो, वह सुन दे संताप ।१४।

पावत यश नर गुणन कर, ना जाति कुल जान ।
जाति हीन गुणवान नर, कीर्ति पाप महान ।१५।
गुणी जन जानत गुणन रस, निर्गुण जानत नाहिं ।
पिक जानत है मधुर रस, कौवा जानत काहिं ।१६।
बसन्त बल बलवान का, जानत इक बलवान ।
हस्ती जानत शेर बल, नहिं मूशक पहिचान ।१७।
बहुत दोष कर युक्ति नर, इक गुण को प्रधान ।
बसन्त वे भी जगत में, पावत है सन्मान ।१८।
सर्व शास्त्र सब वस्तु से, सारु लेत बुद्धिमान ।
बसन्त जिम सब वृक्ष से, मधुमखी ले मिष्ठान ।१९

"सन्तों की महिमा"

राग तजे इस जगत का, धारत जो वैराग ।
रहत मगन हरि भजन में, सो है सन्त सुजाग ।१।
निन्दा विपदा में कभो जो, न तजत सत्पन्थ ।

सत् मार्ग में चलत पुनि, बसन्त सो है सन्त ।२।
बुरे संग से जो बुरा, बसन्त कबहुं न होय ।
भला बुरे का करत जो, साधू कहिये सोय ।३।
आतम चिन्तन करत जो, भेद भरम को तोड़ ।
बसन्त सोई सन्त है, तांसे मन को जोड़ ।४।
निष्कामी निर्मान शुच, ब्रह्म ज्ञान जिह होय ।
बसन्त तांका संग कर, निज साधू है सोय ।५।
बसन्त युवति देख जो, हर्षत नहिं मन माहिं ।
देख काल को डरत नहिं मान मुक्त तुम तांहि ।६।
स्तुति निन्दा हर्ष पुनि, शोक न जांको होय ।
ग्रह्ण त्याग से रहित जो, बसन्त सन्त है सोय ।७।
सुख दुःख आदि द्वन्द जो, जा मन दृढ़ न होय ।
बसन्त आत्म निष्ठ जो, ज्ञानी कहिये सोय ।८।
सब में हरि को देख के, करत सर्व की सेव ।
बसन्त पुनि निर्मान हो, सो है देवन देव ।९।

ज्ञानी हो अभिमान कर, सो है मूंढ अजान ।
बसन्त ज्ञानी नम्र हो, सो है सन्त सुजान ।१०।
बसन्त ज्ञानी होय जो, जीते काम रु क्रोध ।
हर्ष शोक बिन शान्त चित्त, तांका हो दृढ़ बोध ।
देवी गुण हरि भजन पुनि, जांके संग बढ़ जाय ।
तिस साधू का संग कर, बसन्त शान्ती पाय ।१२।
ब्रह्म ज्ञान हरि प्रेम रस, जे तुम चाहत मीत ।
बसन्त श्रद्धा से करो, सन्तन से तुम प्रीत ।१३।
सब तीर्थों से अधिक है, सत्पुरुषों का संग ।
बसन्त सत्संग देत है, तच्छिन्न मन में उमंग ।१४।
कोटि रवि शशि के उदे, हृदय तम नहिं जात ।
सन्तन के सत् वचन सुन, अविद्या तिमर नशात १५
राखत जो सत्संग में, श्रद्धा पुनि विश्वास ।
बसन्त तांके मिटत दुःख, कारज हो पुनि रास ।१६।
सन्त चरन रज शीश जो, राखत श्रद्धावान ।

बसन्त तांको मिलत है, सम्पत्ति सूख महान ।१७।
बसन्त खावत सन्त जो, सो अमृत हो जात ।
मनुष अमर सो होत जो, शोत प्रसादी पात ।१८।
सन्तन की सेवा करे, बसन्त हो निष्काम ।
ज्ञान पाय निर्मान हो, पावत सो हरि धाम ।१९।
शोक मोह का हेतु है, मूंढ पुरुष का संग ।
धर्म कर्म हरि भक्ति का, कारण है सत्संग ।२०।

"सत्संग"

सत्संग की महिमा कहूं, सुनो सज्जन चित्त लाय ।
दुःख हरे सुख देत है, सत्संग सहज सुभाय ।१।
सत्संग तीर्थराज है, सत्संग है हरि धाम ।
बसन्त सत्संग करत जो, पावत सो विश्राम ।२।
दुस्तर भव सिन्धु तरत नर, सत्संग के प्रसाद ।
बसन्त सहजे पाय है, आनन्द धाम अनादि ।३।

बसन्त नित सत्संग कर, मन में धार उमंग ।
श्रद्धा से सत् वचन सुनि, चढ़े राम का रंग ।४।
सत् मार्ग संसार में, सत्संग देत बताय ।
बसन्त उर को तम हरे, दीपक ज्ञान जगाय ।५।
सत्पुरुषों के संग से, बसन्त उन्नति होय ।
कीर्ति सम्पत्ति सुमति गति, पावत है सब कोय ।
जिम चंदन के संग से, कीकर चंदन होय ।
तिम साधू के संग से, शठ भी साधू जोय ।७।
सीप संग जल बून्द जिम, मोती होत महान ।
बसन्त तैसे संत संग, होवत नर बुद्धिमान ।८।
बसन्त साधू संग से, निर्मल मन हो जाय ।
जैसे जल सब मैल हर, ऊजल देत बनाय ।९।
बसन्त साधु वैद्यसम, औषधि ज्ञान खिलाय ।
मन का अविद्या रोग हर, आतम शक्ति बढ़ाय ।१०
बसन्त जिम दीपक हरे, मंदिर का अन्धकार ।

साधू संग त्यूं हृदय को, तम हर करत उज्यार ।
साधू संग सम जगत में, दाता और न जान ।
बसन्त भक्ति ज्ञान दे, हरत शोक अज्ञान ।१२।
साधू सम को जगत में, बसन्त नाहिं दलाल ।
ताड़ो बोध लगाय के, मेले दीन दयाल ।१३।
साधू संग है जगत में, बसन्त सम सोनार ।
टूटा मेले राम से, दे दे निज गुन सार ।१४।
बसन्त सर सम सन्त जन, पर उपकारी जान ।
तृषणा प्यास बुझाय के, शान्ती देत महान ।१५।
बसन्त साधू वृक्ष सम, दया छाय जिह माहिं ।
अपने शिर पर कष्ट सह, सुख फल दें सब काहिं ।१६
साधू संग है मेघ सम, वचन बून्द बरसाय ।
मन धरतो शीतल करे, बसन्त तपत बुझाय ।१७।
बसन्त देखा खोज कर, निज अनुभव के माहिं ।
सन्तन सम को जगत में, पर उपकारी नाहिं ।१८।

लोग देत संसार सुख, सन्त ब्रह्म सुख देत ।
बसन्त बदला लेत नर, सन्त न बदला लेत ।१९।
दर्शन परसन सन्त का, स्मरत कीर्तन बात ।
बसांत पाञ्चों करत है, पावन जन को तात ।२०।
बसन्त दर्शन सन्त का, पाप करत प्रहार ।
तपत बुझाये नयन की, आनन्द देत अपार ।२१।
बसन्त परसन सन्त का, विघ्न करत सब दूर ।
कर्म रेख को काट कर, देत सूख भरपूर ।२२।
बसन्त स्मरण सन्त का, सगुण समाधी जान ।
जग विक्षेप मिट जात पुनि, आनन्द होवत भान ।
बसन्त कीर्त्तन सन्त का, मेटत विषय विकार ।
देवो सम्पति गुणन का, मन में हो विस्तार ।२४।
बसन्त बोलन सन्त का, मन को देत हुलास ।
तिमर हरे अज्ञान को, कर आतम प्रकाश ।२५।

"क संग"

बसन्त कांटा कुसंग है, केला साधू स्वभाव ।
प्रेम करे वह देत दुःख, देखो संग प्रभाव ।१।
मूर्ख नर के संग से मान हान नित होय ।
बसन्त पावक लोह संग, मुद्गर खावत सोय ।२।
ऊंच मनुष्य भी नीच संग, नीच होय सुन गाथ ।
बसन्त भीष्म ने हरी, गो दुर्योधन साथ ।३।
नीचन का संग अल्प भी, करे बहुत गुण नाश ।
बसन्त जिम गुण दूध के, कर है दधी विनाश ।४।
नीच संग बुद्धि नीच हो, उत्तम उत्तम संग ।
बिलमंगल रविदास का, बसन्त पढ़ प्रसंग ।५।
दुर्जन के संग बैठि जन, बोल न तांसे बात ।
दाग लगावे दुःख दे, बसन्त सो दिन रात ।६।
दुष्ट मित्र मत कीजिये, सुनि लीजे इतिहास ।

काक संग ज्यों हंस का, बसन्त भया विनाश ।७।
बालमीक संग भील के, भील भया जग जान ।
बसन्त साधू संग से, होये ऋषि महान ।८।
मूर्ख का संग जगत में, बसन्त देत क्लेश ।
ज्यों रावण के संग से, बाँधा गया जलेश ।९।
बसन्त दुर्जन सांप सम, तांसे कर ना प्यार ।
दूध पिये विष देह फल, मानत ना उपकार ।१०।

"वाणी का अंक"

रोचक वाणी श्रवण कर, मन में धर अनुराग ।
सन्त संग सत् कर्म कर, दुष्कर्मों को त्याग ।१।
वचन भयानक श्रवण कर, धार विवेक विराग ।
बसन्त तजे जग राग को, हरि से कर अनुराग ।२।
वचन यथार्थ श्रवण कर, तजे देह अध्यास ।
बसन्त आतम ज्ञान पा, करो ब्रह्म में वास ।३।

वाणी सुन पढ़ वेद को, जो जन करत विचार ।
बसन्त सो निज ज्ञान पा, पावत शांति अपार ।४।
वेद वचन को श्रवण कर, करत विचार न जोय ।
बसन्त ऐसे मूंढ को, मुक्ति कहां से होय ।५।
वेद वचन गुरुदेव से श्रवण कर हर वार ।
मनन निदिध्यासन करे, पाय निजातम सार ।६।
पढ़ कर शास्त्र वेद जो, करत जगत में राग ।
बसन्त सो नर मूंढ है, बिन विवेक मंद भाग ।७।
सुनकर पढ़कर वेद जो, छोड़त नाहिं विकार ।
बसन्त ऐसे मनुष्य को, वारों वार धिक्कार ।८।
वेद सन्त गुरुदेव की, वाणी को कर याद ।
बसन्त इन पर अमल कर, पाओ मन अह्लाद ।९।
सन्त वचन सत् जान तुम, धारो हृदे माहिं ।
बसंत मन निश्चल करो, इत उत भटको नाहिं ।१०
सत्पुरुषों के वचन पर, राखत जो विश्वास ।

बसन्त तांके शीघ्र ही, कारज हो सब रास ।११।
सन्त वचन मेटत सदा, तन मन के सब पाप ।
बसन्त शीतल चित्त करे, हरत सकल संताप ।१२।
सत्पुरुषों के वचन नित, शान्त सुमति सुख देत ।
बसन्त काम रु क्रोध मद, दुःख द्वन्द हर लेत ।१३।
सद्गुरु के सत् वचन से, प्राप्त हो निज ज्ञान ।
बसन्त भेद भ्रान्त पुनि, दूर होत अज्ञान ।१४।
सद्गुरु के सत्वचन सुन, धारो मन संतोष ।
बसन्त समता में रहो, तजे राग पुनि रोष ।१५।
वेद सन्त गुरु वचन को, पढ़त सुनत जो नीत ।
बसन्त भवसिन्धु तरत सो, पाय मन पर जीत ।१६
श्रद्धा प्रेम विराग से, सुनत वचन जन जोय ।
बसन्त पुनि अभ्यास कर, होत अमर नर सोय ।१७
सन्त वचन सुन समझकर, पाय यथार्थ ज्ञान ।
बसन्त तज जग वासना, धरो ब्रह्म का ध्यान ।१८

ध्यान धरे निज ब्रह्म का, मन स्थिर कर लेह ।
बसन्त जीवन मुक्ति पा, पाओ मुक्ति विदेह ।१९।
जैसी श्रद्धा ईश में, तैसी गुरु में होय ।
बसन्त वचन वेदान्त के, समझत है नर सोय ।२०।
बून्द बून्द के पढ़त जिम, बसन्त घट भर जात ।
विद्या धन पुनि धर्म तिम, बढ़त अल्प से तात ।२१।
बहु पुस्तक के पढ़न से, पण्डित होत न कोय ।
बसन्त रहनी रहत जो, पण्डित कहिये सोय ।२२।
बसन्त राग न रोष जिह, लोभ मोह अहंकार ।
पण्डित तांको कहत हैं, जा मन सत् वीचार ।२३
बसन्त सुनकर समझ कर, रहनी रहत न जोय ।
वेद शास्त्र के पढ़न से, मुक्ति न पावत सोय ।२४।
सन्त वचन व्यर्थ नहीं, बसन्त कबहूं जात ।
कोटि जन्म के बाद भी, फल देते हैं तात ।२५।

"वचन विचार"

बसन्त नित वीचार के, मृदु वचन तुम बोल ।

सत्य प्रिय ना कह सको, तो मत मुख को खोल ।१।
बसन्त बोलत मूण्ढ नर, पशु सम दिन औ रात ।
जामें सारु विचार नहिं, बकैं भेक ज्यों बात ।२।
बसन्त कूकर काक का, बोल न भावत काहिं ।
कोयल मैना बोल को, सुनि सुनि सब हर्षाहिं ।३।
बसन्त ऐसा बोलिये, जिससे होवे प्यार ।
ऐसी बात न बोलिये, जासे बाढ़े रार ।४।
वचन वचन का भेद है, वचन वचन में भाव ।
बसन्त तांको समझ के, बोलो सरल सुभाव ।५।
ऐसी वाणी बोल तूं, जांसे हो उपकार ।
बसन्त पुनि मीठी लगै, सबके रिदे मंझार ।६।
बसन्त वाणी का अहैं, भूषण चयार प्रधान ।
सांचा स्वल्प मृदु पुनि, चौथा हितकर जान ।७।
वाणी चार प्रकार की, दीनो तो करतार ।
परा पश्यन्ती मध्यमा, वेखर जान उदार ।८।
परा मूल में रहत है, पश्यन्ति हृदय आहिं ।

बसन्त मध्यम कण्ठ में, वेखर है मुख माहिं ।९।
पहले हृदय कण्ठ में, बसन्त वचन विचार ।
पीछे उत्तम वचन को, मुख से करो उच्चार ।१०
बसन्त मीठे वचन से, प्रसन्न होवत पीव ।
कड़ुवे और कठोर से, दुःख पावत है जीव ।११।
बसन्त तज बकवाद पुनि, गाली ना किस देह ।
शान्त रहो कटु वचन सुनि, गुरु शिक्षा है एह ।१२।
मौन करो अपशब्द से, साचा स्वल्प बोल ।
अन्तर अनहद नाद सुनि, बसन्त हृदय खोल ।१३।
मुख से वृथा बोल नहिं, हृदय हरि गुन गाय ।
बसन्त हरि गुन गाय के, पीय को लेत रिझाय ।१४।
मीठे हित कर वचन से, सब अपना बन जात ।
बसन्त रहत न द्वन्द दुःख, जंह तंह हो कुशलात ।१५
सत्य वचन नित बोल तू, कहो न झूठी बात ।
बसन्त झूठे कहन से, प्रीति रीति घट जात ।१६।

बसन्त सत्य के बोलते, हृदय साचा होय ।
झूठा मन हो झूठ से, कर विश्वास न कोय ।१७।
बसन्त हरि का नाम रट, मृदु वचन पुनि भाख ।
निन्दा किसकी ना करो, यह शिक्षा मन राख ।१८

"काल"

बसन्त मरना याद कर, भूल न कबहूं जाय ।
जग से होय उदास तुम, राम नाम गुन गाय ।१।
मौत भुलाए पाप हो, याद किये नश पाप ।
बसन्त तांते मौत को, याद करे हर ताप ।२।
चार कुण्ठ में बजत है, बसन्त काल निशान ।
गाफिल तुम सुनते नहीं, बहुरे कीने कान ।३।
बसन्त तेरे देखते, जगत चला यह जात ।
इक दिन तू भी जायेगा, छोड़ सर्व को तात ।४।
बसन्त तुम समुझत नहीं, धर कर मन में चेत ।

सन्त करत उपदेश अस, काल कटे जग खेत ।५।
बसन्त तेरा को नहीं, साथी इस जग माहिं ।
मात पिता धन दार सुत, संग न चलते काहिं ।६।
बसन्त आये साथ ले, पाञ्च तत्त्व की देह ।
वह भी तो संग ना चले, जांसे करत स्नेह ।७।
बसन्त जब इस जीव को, ले जाता है काल ।
लोग कुटुम्ब सब देखते, होत न को रखपाल ।८।
बसन्त जग के मित्र सब, रोवत पीटत माथ ।
नहीं छुड़ावत काल से, नहिं पुनि चालत साथ ।९।
काल निकट नित रहत है, तुम जानत हो दूर ।
बसन्त शिर पर बैठ के, श्वास करत चकचूर ।१०।
तू नहिं देखत काल को, तुम को देखत काल ।
बसन्त दिन पूरे भये, मारेंगे तत्काल ।११।
श्वास श्वास कर आयु सब, हरत काल प्रवीन ।
बसन्त तजत न काहूं को, करत सर्व को खीन ।१२।

काल महा विकराल है, कठिन काल की धार ।
तांसे कोऊ ना बचे, किये उपाय अपार ।१३।
राव रंक सुर असुर नर, वीर धीर गम्भीर ।
बसन्त ठहुर न सकत को, जब मारे जम तीर ।१४
बसन्त बल बुद्धि औषधी, तेग तमञ्चा बाण ।
चलत न आगे काल के, जब आ लेते प्राण ।१५।
बड़े बड़े बलवान जे, करते बहु अभिमान ।
बसन्त वे भी काल ने, मार किये मैदान ।१६।
आस पास सब लोग पुनि, देख रहे परिवार ।
बसन्त सब के बीच से, ले जावत जम मार ।१७।
भूल न कबहूं कीजिये, इस तन पर विश्वास ।
बसन्त इक दिन होय है, यह तन काल ग्रास ।१८।
क्यों तुम गाफिल हो रहे, विषय से कर राग ।
काल खड़ा है शीस पर, बसन्त होय सुजाग ।१६।
काल शिकारी करत है, जग वन मांहि शिकार ।

बसन्त सबको हनत है, तीर रोग का मार ।२०।
काल बड़ा बे तरस है, दया करत कब नाहिं ।
बसन्त मारत सर्व को, ना छोड़त है काहिं ।२१।
बसन्त सब जीवन चहैं, मरना चहैं न कोय ।
तो भी काल न छोड़ हीं, अवश्य संघारे सोय ।२२।
बसन्त काल धमाल सुनि, भागे बहु तज देश ।
काल न किसको छोड़ते, देश और प्रदेश ।२३।
सो नर बाचैं काल से, जो ले हरि की शाम ।
बसन्त हरि की शरन से, काल करे प्रणाम ।२४।
बसन्त तांते रात दिन, स्मरो हरि का नाम ।
काल पोड़ व्यापे नहीं, होवैं सुख विश्राम ।२५।

"समय का प्रभाव"

बसन्त है संसार में, समय बड़ी बलवान ।
अपने वश कर सर्व को, सुख दुःख देत महान ।१।

बसन्त जब ही जीव का, समय होत अनुकूल ।
देत शत्रु भी परम सुख, शूल होत है फूल ।२।
बसन्त जब इस मनुष्य का, समय होत प्रतिकूल ।
मात पिता सुत दार मित, होत शूल ते शूल ।३।
घटत बढ़त है समय पा, रवि शशि पुनि दिन रात ।
बसंत इक रस रहत नांहि, सुख दुःख तन मन तात ।
यह तन होता समय पा, बालक बूढ़ा ज्वान ।
समय पा बदलत सबी, बसन्त सकल जहान ।५।
नारायण भी समय पा, धारत रूप अनेक ।
नृसिंह मच्छ कच्छ आदि का, बसन्त फिर हो एक ।६
एक समय श्री रामजी, गये जनकपुर मांहि ।
धनुष तोड़ ले सीय को, आये अयोध्या पांहि ।७
इक दिन लक्ष्मण सीय युत, राम लीन बनवास ।
बसन्त सोये पत्थर पर, खाये बन फल खास ।८।
इक दिन सीता ले गये, रावण लंक मंझार ।

राम गया पुल बांध के, दीने असुर संहार ।९।
बसन्त बैठे राज्य पर, एक समय रघुराज ।
देखे दु:ख सुख बार बहु, सीय सहित सुरराज।१०।
रावण बांधा एक दिन, काल खाट के साथ ।
बसन्त इक दिन काल ने, काट दिये दस माथ ।११
तारा धोवे वस्त्र पुनि, लाश जलावे राव ।
रोहत माली बन गया, देख समय प्रभाव ।१२।
बसन्त देखो एक दिन, श्याम गया रण छोड़ ।
नाम पड़ा रणछोड़ तब, देख समय का जोर ।१३।
एक समय श्रीकृष्ण ने, कंस केस को मार ।
जरासिंध को जीत के, बसन्त की जयकार ।१४।
पाण्डव बन में भये दुःखी, कौरव करते राज ।
उलटा फेरा आ गया, देख समय के काज ।१५।
बसन्त जीते एक दिन, अर्जुन देश अशेष ।
इक दिन भीलों लूटकर, दीना बहुत क्लेश ।१६।

झूलत छत्र सुदोन पर, राजा मांगत भीख ।
बसन्त शक्ति समय की, कहं मिर्चो कहं ईस ।१७।
दु.ख पावत है भक्त जन, पापी पुनि सुख पाय ।
देख सनय को शक्ति को, बसन्त मन घबराय ।१८
समय पाय सुख होत है, बसन्त दुख भी होय ।
सुख दुःख में तुम सम रहो, मत हंसो मत रोय ।१९
इक रस है निज आतमा, तांसे कर नित हेत ।
बसन्त चंचल जगत को, त्यागें होय सचेत ।२०।

कर्म का अंक

मुक्ति ज्ञान से होत है, ज्ञान भक्ति से होय ।
भक्ति कर्म से होय है, करो कर्म शुभ जोय ।१।
विहित निषिद्ध दो भान्ति का, कर्म वेद के माहिं ।
विहित कर्म कर प्रेम से, निषिद्ध करो कब नाहिं ।२
करते वेद निषेध जिस, निषिद्ध कर्म सो जान ।

करहिं वेदविधान जिस, विहित कर्म सो मान।३
हिंसा चोरी ना करो, किसको दिल न दुःखाय।
बसन्त मधु मति पीजिये, मांस मच्छी मति खाय।
झूठ कपट बल छल ठगी, बसन्त कर मति काहिं।
सत्य सरल समता सदा, राखो हृदय पाहिं।५।
धोखा किसको देह ना, वचन करो मत भङ्ग।
द्रोह दग़ा से दूर हो, भूल न जाय कुसङ्ग।६।
पर नारी की प्रीति तज, वैश्या का संग छोड़।
बसन्त इनके संग से, मिलत नरक दुःख घोर।७।
जूआ कबहूं न कीजिये, जूआ बहु दुःख देत।
बसन्त धैर्य्य धर्म धन, यश सुख सब हर लेत।८।
फाइश खेल न देखिये, देखो धर्मी खेल।
बसन्त धारे धर्म को, हरि से मन को मेल।९।
फाइश गाना गाय सुनि, मन चंचल हो जात।
गोविन्द के गुन गाय तुम, निश्चल कर मन तात।

दु.खमय सम्पति आसुरी, देवी सुखमय जान ।
देवी गुन धारन करे, बसन्त पा कल्यान ११।
नित नैमित्तिक प्रायश्चित, काम्य कर्म ये चार ।
बसन्त वेद विहित कर्म, करलो कर वीचार ।१२
स्नान संध्या पाञ्च यज्ञ, पूजा पाठ अरु ध्यान ।
बसन्त नित्य कर्म करो, तजि फल पुल अभिमान ।
मात पिता गुरु सन्त पुनि, अतिथी ब्राह्मण देव।
बसन्त इनकी नित करो, श्रद्धा से तुम सेव ।१४।
निमित पाय नैमित्तिक कर, कर्म सबी हित लाय ।
त्यागे मन की वासना, बसन्त आनन्द पाय।१५।
कर्म प्रायश्चित तुम करो, पाप नाश के हेत ।
गंगा नावन नाम जप, बोय धर्म का खेत ।१६।
कर्म सकामी देत दुःख, जन्म मरण को नीत ।
बसन्त तज फल कामना, कर्म करो मन जीत।१७
पापी जावत नरक में, धर्मी स्वर्ग जात ।

भक्त जात वैकुण्ठ में, ज्ञानी ब्रह्म समात ।१८।
कर्म प्रारब्ध ज्ञान में, बसन्त होत न नाश ।
छूटे बाण वत् कर्म ये, भोगे होत विनाश ।१९।
बसन्त ब्रह्म विज्ञान से, सञ्चत् कर्म मिट जात ।
स्वप्न कर्म जिम जागते, रहत न को सुन तात ।२०
वर्तमान के कर्म का, ज्ञानी लगे न लेप ।
पद्म पत्र जिम तोय में, बसन्त रहत अलेप ।२१।
धर्म कर्म धन भोग को, बसन्त है धिक्कार ।
शान्ति जिसीसे ना मिले, मिलहिं दुःख अपार ।२२
कर्म सकामी भोग धन, तीनों को कर त्याग ।
बसन्त मुक्ति करन हित, सत्संग हरि अनुराग ।२३

"प्रारब्ध"

बसन्त जिसका है जहां, पूरव कर्म संजोग ।
तहां जाय सो अवश्य ही, भोगत सुख दुःख भोग ।

बसन्त जो मस्तक लिखा, अवश्य होत है सोय।
यत्न करे शत कोटि जो, मेट न साकत कोय।२
बसन्त जिसको जगत में, जैसी होवन हार।
तैसी तिस पत होत है, मेटत ना करतार।३।
जैसा बोये बीज को, तैसा ही फल होय।
कीकर बोये खात नहिं, आम्र फल को कोय।४।
बसन्त जैसी होवनी, तैसी ही बुद्धि होय।
लाख बार समझाय को, तौ नहिं मानत सोय।५।
भावी के वश होत बुद्धि, बुद्धि वश भावी नाहिं।
बसन्त गयो रघुनाथ वन, कंचन मृग के पाहिं।६।
नीच ऊंच गति कर्म से, पावत है सब लोग।
बसन्त हरि सब जीव को, देत कर्म फल भोग।
जैसे गौ का वत्स हो, जाय मिले निज मात।
बसन्त तैसे कर्म भी, कर्त्ता के ढिग जात।८।
काल पाप कर बीज जिम, बसन्त उपजत खेत।

तैसे नर को कर्म भी, समयपाय फल देत ।९।
बसन्त भावी जो मिटे, तो दुख कोय न पाय ।
भावी वश नल राम ने, रुदन कीन वन जाय ।१०।
शोक न कीजे विपत में, हर्ष न सम्पत्ति पाय ।
दोनों फल निज कर्म का, बसन्त है सत् भाय ।११
मन चाहत होवै नहीं, अन चाहत जा होय ।
वेद सन्त अस कहत हैं, बसन्त भावी सोय ।१२।
बसन्त देखो रंक को, होवहिं पुत्र अनन्त ।
एक नहीं धनवान घर, यह भावी बलवन्त ।१३
जो भूखा तिह मिलत नहिं, भोजन बसन्त देख ।
अब भूखे को मिलत बहु, देख कर्म की रेख ।१४
बसन्त पापी भाग से, पावत भोग महान ।
भाग बिना नहिं भोग सुखु, पावत धीर सुजान ।
बसन्स जड़ बुद्धिमान नर, कायर पुनि बलवान ।
सुखु दुःखु भोगत कर्म से, करते वेद बख्यान ।

दुश्मन भी सुख देत है, जो भावी अनुकूल ।
बसन्त देत न मित्र सुखु, जो विधि प्रतिकूल ।
विद्या सेवा जाति कुल, शील न अस फल देत ।
बसन्त पूर्व पुण्य जस, जोवहिं फल प्रदेत ।१८।
मनुष्य जन्म कुल राज धन, विद्या आयु अरोग ।
बसन्त पूर्व कर्म से, इनका होत संजोग ।१९।
बसन्त निशदिन कीजिये, पुण्य कर्म मन लाय ।
पाप कर्म मत कीजिये, केवल मन के भाय ।२०।
बसन्त भावी मिटत नहिं, भोगत है सब कोय ।
नीलकण्ठ नगना फिरे, हरि अहि सेजा सोय ।२१
रवि शशी पीड़त ग्रहकर, गज भुजंग बंध जात ।
बसन्त पण्डित दरिद्री, देख भाग की बात ।२२।
हर्ष मनावत लोक सब, मिलत राम को राज ।
बसन्त तांको बन मिला, देख दैव के काज ।२३।
जो विधि लिखा ललाट में, सो भोगत नर दीख ।

बसन्त पाण्डव वीरवर, वन में मांगत भीख ।२४।
बसन्त भावी से भये, भील बहुत बलवान ।
अर्जुन निर्बल हो गया, भारत का प्रमाण ।२५।
बसन्त धर्मी मांगते, पापी करते राज ।
लाश जलावे हरिश्चन्द्र, देख कर्म के काज ।२६।
सत्यवन्ती दुःख पावती, कुसती करे शृङ्गार ।
बसन्त सुखु दुःखु भाग से, भोगत यह संसार ।२७।
जिस नर की जिस हाथ, बसन्त मृत्यु होय ।
तांको मेटत कोय नहिं, कोट यत्न कर जोय ।२८।

"पुरुषार्थ"

पुरुषार्थ कर बनत है, जग में नरका भाग ।
बसन्त तांते यत्न कर, पुण्य कर्म में लाग ।१।
बसन्त उद्यम करन से, निर्धन हो धनवान ।
दीन मनुष्य ही देवता, कायर हो बलवान ।२।

जो जन राखे भाग पर, उद्यम करत न कोय ।
बसन्त धन यश मान सुख, कबहूं न पावत सोय।३
बसन्त नित उद्यम करो, आलस को तुम त्याग।
उद्यम से ही बनत है, बसन्त सब का भाग ।४।
उद्यम बिन होता नहीं, बसन्त किसका काज ।
ज्यों बोये बिन मिलत नहिं, खेती माहिं अनाज ।।
उद्यम जैसा जगत में, सांचा मित्र न कोय ।
आलस्य सम ना शत्रु को, बसन्त जग में जोय ।।
पुरुषार्थ कर जगत के, बसन्त सब सुख पाय ।
पुरुषार्थ बिन खात नहिं, भोजन शेर अघाय ।७।
आलस्य कर कहु कौन को, मिलत राज्य सुख मान ।
पुरुषार्थ से पुरुष ही, बसन्त हो प्रधान ।८।
उद्यम से शत याग कर, मनुष्य इन्द्र पद पाय ।
बसन्त भोगत सर्व सुख, कहत वेद मुनिराय ।९।
पुरुषार्थ कर चलत है, बसन्त सब व्यवहार ।

बिन पुरुषार्थ देखले, मिलत न कांहि अहार।१०
पुरुषार्थ बिन भाग नहिं, भाग बिना सुख नांहि।
बसन्त तांते रात दिन, उद्यम कर जग मांहि।११।
उद्यम से शुभ कर्म हो, उद्यम से हो ज्ञान।
उद्यम कर के हो मिले, बसन्त श्री भगवान।१८।
पुरुषार्थ ही पुरुष का, उत्तम कर्त्तव्य जान।
आलस्य में बहु दोष हैं, कहते वेद पुरान।१३।
बसन्त उद्यम करन से, जो कार्य नहिं होय।
तो भी उद्यम ना तजो, फिर फिर करिये सोय।१४
बसन्त जो नर करत है, उद्यम धैर्य्य साथ।
सो निश्चय फल पावहिं, ग्रन्थों को ये गाथ।१५।
पुरुषार्थ के करत ही, विध्न पड़े जो लाख।
बसन्त धैर्य्य न तजत जो, तांको सुर जय भाख।१६
मधुसूदन मुनि धैर्य्य से, कीन उद्यम नव बार।
बसन्त हरि जप ध्यान धर, पाया दिव्य दीदार।१७

धैर्य्य श्रद्धा प्रेम विधि, राखो उद्यम मांहि ।
बसन्त तो फिर जगत में, दूरव तु कच्छु नांहि ।१८
मिलत भाग से काम धन, तामें कर संतोष ।
पुरुषार्थ से पाय तूं बसन्त धर्म रु मोष ।१९।

"एकता और फूट"

देत सर्व सुख एकता, फूट देत दुःख नीत ।
बसन्त तांते प्रेम से, करो एकता मीत ।१।
पाप कर्म के करन हित, किसको कर न सहाय ।
देश धर्म के रक्षा हित, बसन्त इक हो जाय ।२।
बसन्त एकहि काक पर, विपत्ति पड़ जब आय ।
देखो तांकी काक सब, मिल कर करत सहाय ।३।
अल्प वस्तु के मेल से, कार्य होय महान ।
जिम तृणों से दाम हो, बांधे गज बलवान ।४।
तागों के मेलाप से, बसन्त वस्त्र होय ।

नंगे तन को ढापके, शीत वात दे खोय ।५।
बसन्त मिलते तीन, जब दीपक बाती तेल ।
रोशन घर में होय तब, होत तिमर बिन मेल ।६।
जिम इन्द्रियों के मेल बिन, चलत न तन व्यवहार ।
बसन्त तिम मेलाप बिन, चलत न यह संसार ।७।
बसन्त मिल कर वृक्ष बहु, बाग बनत जग माहिं ।
एक अकेला पेड़ बढ़, शोभा पावत नाहिं ।८।
माटी चूने ईंट के, मिलने से मठ होय ।
बसन्त बनत न एकते, करे जतन बहु कोय ।९।
पाञ्चों अंगुली मिलत जब, तब होते सब काज ।
बसन्त प्रत्यक्ष देखले, इक से बजत न साज ।१०।
बसन्त लक्ष्मण राम मिल, पुनि कपि सेन बटोर ।
मार दशानन सीय ले, आये अपनी ठोर ।११।
बसन्त कीनो एकता, कृष्ण और बलराम ।
कंसादिक बहु दैत्य हनि, प्रसिद्ध कीना नाम ।१२

देखो लकड़ी एक को, तोड़त है सब कोय ।
बसन्त तोड़ न सकत को, जो बहु इकठी होय ।।
पाञ्च मनुष्य के मेल को पञ्च कहत जग मांहि ।
बसन्त वे जो बात कह, मानत है सब ताहिं ।१४
बसन्त पाण्डव मेल से, कृष्ण अपना कीन ।
मारे कौरव सेन को, पाये राज नवीन ।१५।
बसन्त देखो भ्रात दो, सुन्द उपसुन्द बलवान ।
आपस में लड़कर मरे, फूट अती दुःखदान ।१६।
बसन्त कहते सन्त सब, फूट चोरी जग जान ।
मरगै बाली फूट से, रावण के गै प्रान ।१७।
बसन्त देखो फूट से, गया हिन्द का राज ।
लीना फिर मेलाप कर, गांधी ने स्वराज ।१८।
पिता पुत्र गुरु शिष्य, पुनि, दम्पति भ्राता दोय ।
बसन्त मिलते होत सुख, फूटें अति दुःख होय ।१९।
बसन्त मन में प्रेम धर, कर सबसे मेलाप ।

सबको सुख देते रहो, दे न किसे संताप ।२०।
वैर विरोध कर ईर्षा, किसको मत दुःख देह ।
बसन्त अपना रूप लख, सब से करो स्नेह ।२१।
तोड़त जो मेलाप को, फूट बीच में पाय ।
बसन्त सोई नीच नर, नीच योनि में जाय ।२२।
घर नगर प्रदेश में, सबका मेल मिलाय ।
बसन्त वैर विहाय के, शान्ति प्रेम बढ़ाय ।८३।
श्रुति शब्द को मेल के, बसन्त लाय समाधि ।
जीव ब्रह्म को एक कर, आनन्द पाय अगाधि ।2४।

"सुख और दुख"

सुख स्वरूप इक आतमा, सो है ब्रह्म स्वरूप ।
बसन्त तां बिन जगत सब, है अति दुःख का कूप ।१
ना सुख विद्या के पढ़े, ना सुख अविद्या मांहि ।
बसन्त सुख है ज्ञान में, जां में दोनों नांहि ।८।
ना सुख है धनवान को, ना निर्धन सुख पाय ।

बसन्त जिहं सन्तोष है, सो सुख मांहि समाय ।।
ना सुख सुन्दर तीय में, ना सुख तांके त्याग ।
बसन्त निर्मल बुद्धि से, सुख पावत बड़ भाग ।।
ना सुख होते पुत्र के, ना सुख सुत बिन जान ।
बसन्त सुत विज्ञान से, सुख पावत इन्सान ।५।
ना सुख है परिवार में, ना सुख बिन परिवार ।
सुख है देवो गुणन में, बसन्त कह निर्धार ।६।
ना सुख धन्धे करन में, बिन धन्धे सुख नांहि ।
बसन्त केवल सुख है, हरि भजन के मांहि ।७।
बसन्त ना सुख शयन में, ना सुख जागे होय ।
है सुख सहज समाधि में, जामांहि दुःख न कोय ।।
बसन्त ना सुख वाद में, ना सुख साधे मौन ।
जो बोलत वीचार से, सो पावत सुख भौन ।।
बसन्त ना सुख हंसन में, ना सुख रोने मांहि ।
निश दिन इक रस रहत जो, सो सुख मांहि समांहि ।

बसन्त ना सुख नगर में, ना सुख है बन बीच ।
है सुख इक सत्संग में, जांसे उधरे नीच ।।११।
जीने में सुख है नहीं, ना सुख मरन मंझार ।
बसन्त जीते जो मरे, सो सुख पाय अपार ।१२।
बसन्त ना सुख रटन में, ना बैठे इक थान ।
आतम निष्ठा में सदा, पूर्ण सुख पहिचान ।१३।
ना सुख पहने वस्त्र के, ना सुख त्यागन माहिं ।
ओढ़े शान्ती वसन जो, बसन्त सुखु है ताहिं ।१४।
बसन्त ना सुख जीत में, ना सुख हारे होय ।
मन जीते हठ त्याग से, सुख पावत सब कोय ।

"मन"

संकल्प विकल्प वृत्ति जो, मन का सो स्वरूप ।
बसन्त जलवत् मिलत जिह, होवत सोई रूप ।१।
सुख दुःख आदि द्वन्द का, मनन करत जो नीत ।

सो मन है मुनि कहत अस, बसन्त तांको जीत ।२।
हर्ष षोक को करत जो, बसन्त सो मन जान ।
मान बड़ाई चहत कब, कब होवत निर्मान ।३।
कब माया को चहत मन, कब सुमरत है राम ।
बसन्त गुरु के ज्ञान बिन, भटकत आठों याम ।४।
प्रसन्न होवत विपति में, रोवत सम्पत्ति पाय ।
बसन्त मन की चाल यह, समझे को मुनिराय ।५।
कामी क्रोधी लालचो, कब मन मोही होय ।
बसन्त कब अहंकार कर, होत विकारी सोय ।६।
मन माया से प्रीति कर, दुःख पावत बहु भान्ति ।
ब्रह्मज्ञान को पाय के, बसन्त पावत शान्ति ।७।
पांच विषय को देख नित, बसन्त मन ललचात ।
एक छोड़ दूजी गहे, बसन्त नांहि अघात ।८।
निशदिन मन भटकत फिरे शान्ति न पावत मीत ।
बसन्त सूकर श्वान जिम, कर भोगों से प्रीत ।९।

दामिनि हस्ती कान पुनि, वानर पीपल पात ।
बसन्त इनके सरस मन, कबहूं ना ठहरात ।१०।
बानर चंचल दिवस में, निश्चल हो निश माहिं ।
बसन्त मन चंचल सदा, ठौर न पावत काहिं ।११।
यह मन दौड़त रात दिन, जहां तहां ब काज ।
बसन्त कबहूं ना थके, नहिं माने भय लाज ।१२।
धरणी से मन धीर है, अग्नी से प्रचण्ड ।
बसन्त कबहूं वायु सम, धावत है नव खंड ।१३।
बसन्त इस संसार में, जेते हैं बलवान ।
मन ने सबको वश किया, मार बाण अभिमान ।१४।
इन्द्र चन्द्र विधि वायु रवि, जेते देवी देव ।
वे सब मन के वश भये, बसन्त कर अहमेव ।१५।
मन राजा नित करत है, तीन लोक का राज ।
बसन्त मन के हुकम से, जीव करत सब काज ।१६।
तन नगरी मन भूप है, मन्त्री मोह पछान ।

बसन्त आशा तीय तिस, सुत कामादि जान ।१७।
भोग वासना विषय रस, तांकी सैन सुधीर ।
बसन्त जीतन कठिन है, ऐसा मन बलवीर ।१८।
बसन्त कुमति कमान में, पाय तमा का तीर ।
ईर्षा आग लगाय के, मन मारत बहु धीर ।१९।
कुमति सुमति दो भावना बसन्त मन की होय ।
इन दोनों में फंस कर, चैन न पावत सोय ।२०।
बसन्त प्रसिद्ध जगत में, मन है चालीस सेर ।
ये मन हो कब तूल सम, कब हो जात सुमेर ।२१।
कब दैत्यों में दैत्य है, कब देवों में देव ।
बसन्त तांते कठिन है, समझन मन का भेव ।२२।
बसन्त ये मन धरत है, बहुत रूप क्षण माहिं ।
तांको जानत सन्त जन, मूर्ख समझत नाहिं ।२३।
कब मन करते शोक को, कब भोगत है भोग ।
बसन्त दाता शूम कब, रोगी होय निरोग ।२४।

शुभ कर्मों के करन में, बसन्त मन मुरझात ।
निशदिन खोटे कर्म को, करते बहु हर्षात ।२५।
मन ठग ने इतने ठगे, जांका आर न पार ।
बसन्त इससे जो बचे, जो सुमरे करतार ।२६।
मन कपटी के कपट से, बाच न साकत कोय ।
हरि कृपा से जो जगे, बसन्त बाचे सोय ।२७।
बसन्त मन के फेर को, जान सके ना वीर ।
विरला को नर जान है, ज्ञानवान गम्भीर ।२८।
मन ही लोभ दिखाय के, करवावत बहु पाप ।
बसन्त पहले सूख दे, पीछे बहु संताप ।२९।
मन कहता कछु और है, करता है कछु और ।
बसन्त तांको समझ कर, मन पाछे मत दौड़ ।३०।
मन के पीछे जो चले, सो नर दुःख को पात ।
बसन्त गुरुमति जो चले, सो सुख मांहि समात ।
बसन्त कबहुं न कीजिये, इस मन पर विश्वास ।

यह मन धोखेबाज है, करत अनेक विलास ।३२।
वेद शास्त्र मुनि कहत हैं, मन के मते अनेक ।
बसन्त तांते राम भज, त्यागे मन की टेक ।३३।
बान्ध मोक्ष का हेतु मन, नहिं तन इन्द्रिय प्रान ।
बसन्त आतम मुक्त है, ग्रन्थ कहत अस ज्ञान ।३४।
मन को ममता बांध है, निर्ममता है मोक्ष ।
बसन्त तांते ममत तज, पाय ज्ञान अपरोक्ष ।३५।
मन का बान्धन जान इक, विषयों का अनुराग ।
बासन्त चाहत मोक्ष जो, हरि भज विषय त्याग ।३६
शुद्ध अशुद्ध दो भान्ति का, बासन्त मन पहिचान ।
वेद ग्रन्थ अस कहत हैं, तांकों जान सुजान ।३७।
बसन्त शुद्ध मन जान सो, जामें पाप न ताप ।
विषय वासना छोड़ नित, करत हरी का जाप ।
बासन्त हरि से विमुख हो, चाहत विषय विकार ।
जान अशुद्ध मन सोय जो, करत पाप अहंकार ।३६

बसन्त मन पावन करो, साबुन शब्द लगाय ।
प्रेम नीर से धोय के, अविद्या मैल मिटाय ।४०।
मैले मन में होत नहिं, बसन्त हरि दीदार ।
जब मन शुद्ध हो तब मिले पूर्ण ब्रह्म अपार ।४१।
शुद्ध मन साक्षी रूप है, साक्षी ब्रह्म स्वरूप ।
बसन्त निश्चय जान तूं, एह सिद्धान्त अनूप ।४२।
बसन्त शुद्ध मन कीजिये, धारे श्रेष्ठाचार ।
ब्रह्म रूप सब जगत है, यह विवेक उर धार ।४३।
जैसा मन का भाव हो, तैसा जग दरशाय ।
तांते मन के भाव को, बासन्त शुद्ध बनाय ।४४।
मन हस्ती जिम फिरत है, विषय भोग बन माहिं ।
कुण्डा ज्ञान लगाय के, बासन्त वश कर ताहिं ।४५।
मन विषयों के संग से, बासन्त हो मस्तान ।
भूल जात निज ज्ञान को, करत देह अभिमान ।४६
मन के मारे मर गये, देव दनुज नर भूप ।

बसन्त सो ना मरत जो, जानत आतम रूप ।४७।
श्वास धनुष में पाय कर, गुरु मंत्र का तीर ।
निशदिन मन को मारते, बसन्त संत सुधीर ।४८।
बसन्त मन को मार तूं, लेहि ज्ञान तलवार ।
अपना आप बचाय पुनि, ढाल विराग सुधार ।४९।
बसन्त शम दम साधि के, पहले मन को जीत ।
पीछे निज स्वरूप में, मनको लाओ मीत ।५०।
जैसा मन यह मीत है, तैसा अवर न जान ।
विषय छोड़ जो नित गहे, बसंत आतम ज्ञान ।५१।
मन दुश्मन बहु देत दुःख, बसन्त बिन वीचार ।
विवेक से पुनि मित्र हो, देता सूख अपार ।५२।
रे मन विषवत् त्याग दे, जग के विषय विलास ।
बसन्त हरि का ध्यान धर, पाओ पद अविनाश ।५३
रे मन तू शुद्ध रूप है, अपना आप विचार ।
त्यागे तम अहंकार को, पाय निजातम सार ।५४

माया ममता मोह तज, हे मन होय निसंग ।
बसन्त गुरु से ज्ञान ले, करो भेद को भंग ।५५।
भेद मान मन भूलिया, अपना ब्रह्म स्वरूप ।
बसन्त तन अभिमान कर, पड़े अविद्या कूप ।५६।
बसन्त देह अनात्मा, जड़ मिथ्या दुःख रूप ।
देह नहीं तू ब्रह्म है, चिदानन्द स्वरूप ।५७।
बसन्त ये मन कोयला, ऊजल हो किस भाय ।
ज्ञान अग्नि के संग से, लाल रंग हो जाय ।५८।
मैला मन बहु जन्म का, किस विधि निर्मल होय ।
गुरु मन्त्र अभ्यास कर, बसन्त यह मन धोय ।५९।

"कामादि विकार"

काम क्रोध मद ईर्षा, लोभ मोह अहंकार ।
बसन्त ये रिपु जीत के, पावो शान्ति भंडार ।१।
पाञ्च चोर तन नगर में, निशदिन करते वास ।

बसन्त सुख को हरत हैं, करलो ताहिं विनाश ।२।
काम बरोबर शत्रु को, बसन्त इस जग नाहिं ।
ब्रह्मचर्य के रतन को, नाश करत खिन माहिं ।३।
काम बड़ा बेशरम है, निर्भय पुनि बलवान ।
देखत सुन्दर नारि को, भुला देत सब ज्ञान ।४।
बसन्त मारे काम ने, देव दनुज नर धीर ।
विरला मारत काम को, हरिजन सन्त सुधीर ।
बसन्त जो जन जगत में, होवत काम अधीन ।
सो नर भोगत बहुत दुःख, होत दीन ते दीन ।
कामी कूकर से बुरा, कहते सन्त सुजान ।
बसन्त लोक परलोक में, भोगत दुःख महान ।७।
बसन्त कामी मनुष्य का, जहं तहं हो अपमान ।
ब्रह्मचर्य को राखते, देव करत सन्मान ।८।
बसन्त जीते काम के, होवत सब पर जीत ।
तन सुन्दर मन प्रसन्न हो, बढ़े राम में प्रीत ।९।

बसन्त कामी मनुष्य का, कबहुं न कीजे संग ।
तांके संग से बड़त है, मन में काम उमंग ।१०।
बसन्त कामी मनुष्य से, भूल न कीजे बात ।
बात किये पुनि वेग ही, कामी नर बन जात ।११।
बसन्त कामी कामिनी, काम बड़ावे नीत ।
तांते दोनों को तजे, मन इन्द्रियन को जीत ।१२।
मन इन्द्रियन को जीत के, वश कर अपना आप ।
प्रसन्न हो गुरुदेव हरि, मिटे सकल संताप ।१३।
जीते सहस्त्र शूर को, शूरा सो नहिं होय ।
बसन्त जीते काम को, शूरा कहिये सोय ।१४।
काम कामना को कहत, वेद ग्रन्थ सब सन्त ।
सर्व कामना को तजे, बसन्त भज भगवन्त ।१५।
बसन्त जग की कामना दुःख मय लख सब त्याग ।
मन में धरे विराग को, हरि चरने अनुराग ।१६।
बसन्त हरि मय जगत लख, माता मय सब नारि ।

परम शान्ति को पाय तुम, जीते काम विकार ।१७

क्रोध और क्षमा

थोड़ी थोड़ी बात पर, बसन्त कर ना रोष ।
रोष करन से बढ़त है, मन में दुःख अरु दोष ।१।
क्रोध अग्नि से है बुरा, बसन्त देख विचार ।
क्रोध जलावे बार बहु, अग जारे इक बार ।२।
बसन्त जिस जन के हृदे, उपजत है यह क्रोध ।
सो नर नित जलता रहे, होत न तांको बोध ।३।
बसन्त जब इस जीव को, लगत क्रोध का बान ।
नाश होत शुभ कर्म तिस, भूल जात पुनि ज्ञान ।४।
क्रोध जिगर को रक्त हर, तन पीला कर देत ।
बसन्त होवहिं मलिन मन, तांते होय सचेत ।५।
बसन्त लोक परलोक का, क्रोध रिपु पहिचान ।
जग में जीव जलाय पुनि, भेजत नरक निदान ।६।
पाप बढ़त पुण्य घटत हैं, क्रोध किये जग माहिं ।

बसन्त यह विचार के, क्रोध करो मति काहिं ।७।

मान नम्रता प्रीति त्रय, वेग क्रोध से जात ।
बसन्त तांते यतन कर, तजो क्रोध को तात ।८।

बसन्त तीखी तेग से, जान क्रोध तलवार ।
एक बार के लगत ही, बेधहिं लाख हजार ।९।

बसन्त त्यागे क्रोध को, मन शीतल कर लेय ।
आप सुखी हो जगत में, औरों को सुख देय ।१०।

बसन्त त्यागे क्रोध को, क्षमा राखो चीत ।
मन में आवहिं शान्ति पुनि, सब जग होवहिं मीत ।

क्रोध अग्नि को शान्त कर शान्ती जल को डार ।
शान्त हृदे से मिलत है, बसन्त शान्ति अपार ।१२।

बसन्त जीते क्रोध को, चित्त में शान्ति पाय ।
मन को तज तुम और से, कबहुं न बैर बड़ाय ।१३।

बसन्त आवहिं क्रोध जब, तबहिं हो हुशियार ।
धरनि ओर तुम देख के, शान्ति मन में धार ।१४।

जबहिं आवहिं क्रोध तब, मुख से और न बोल।
बसन्त हरि का नाम जप, ज्ञान हृदय में तोल।१५।
बसन्त सुनि कटु वचन को, सहन शीतला धार।
आप सर्व के हर्ष हित, मीठे वचन उच्चार।१६
बसन्त सूरा सो नहीं, तन पर सहे जो तीर।
क्रोध बाण को जो सहे, सो है अति बलवीर।१७।
बसन्त जीते और को, शूरा सो मति मान।
जो जीते निज क्रोध को, शूरा सो पहिचान।१८।
क्रोध जिते सुख होत है, बिन जीते सुख नाहिं।
बसन्त जीते क्रोध को, सुख पाओ मन माहिं।१९।
क्रोध शत्रु को मारिये, लेहि क्षमा हथियार।
बसन्त निर्भय होय के, सुमरो, सत्कर्त्तार।२०।
बसन्त क्रोधी मनुष्य का, होत न जग में मान।
किया कराया जात सब, अपयश होत महान।२१।
बसन्त क्रोधी जगत में, मित्र किसी का नाहिं।

बहुत वर्ष की प्रीति को, तोड़ देत खिण मांहि ।२२।
बसन्त क्रोधी मनुष्य का, होत न किससे प्यार ।
जगड़ा रगड़ा करत नित, पड़ा क्रोध के लार ।२३
बसन्त क्रोधी मनुष्य नित, मन में धर अभिमान ।
मात पिता गुरु संत का, करत सदा अपमान ।२४
बसन्त क्रोधी मनुष्य सम, पापी को जग नांहि ।
बिन कारन ही क्रोध कर, दुःख देत सब कांहि ।२५
बसन्त क्रोधी रैन दिन, बोलत कड़ुवे बैन ।
औरों को दुःख देत है, आप न पावत चैन ।२६।
जग में क्रोधी मनुष्य को, प्रत्यक्ष जान चंडाल ।
बसन्त मन बुद्धि भ्रष्ट हो, तांके संग तत्काल ।२७
बसन्त क्रोधी मनुष्य से, भूल न कीजे बात ।
क्रोध बड़े झगड़ा बड़े, होवे ना कुशलात ।२८।
बसन्त क्रोधी कृतघ्न, मानत ना उपकार ।
झूठे दोष लगाय के, उलटा कर अपकार ।२९।

क्रोध अग्नि सब जगत को, निशदिन रही जलाय।
बसन्त तांको भसम कर, ज्ञान अग्नि में पाय।३०।
क्रोध ज़हिर को मारिये, बूटी प्रेम मिलाय।
बसन्त अमृत होय वह, देत सूख पहुंचाय।३१।
रे मन त्यागे क्रोध को, हृदय कीजे शांत।
बसन्त शांति से सदा, तन की बाड़े कांत।३२।

"लोभ, मोह अहंकार व ईर्षा",

लोभ पाप का मूल है, लोभ करत है दीन।
बसन्त देवी गुण सबी, होत लोभ से क्षीन।१।
बसन्त लालच लोभ तज, मन में धर संतोष।
पाओ तुम संतोष से, जग में जीवन मोक्ष।२।
मोह महा दुःख देत है, बसन्त तन मन माहिं।
तांते निज परिवार से, मोह करो मत काहिं।३।
अर्जुन को रण भूमि में, मोह किया अति दीन।

भरत मोह से भा दुःखी, चित्रकेतु प्रबीन ।४।
मोह महातम रूप है, मन अंधा कर लेत ।
बसन्त सूझत ज्ञान नहिं, वास नरक में देत ।५।
धन जोबन परिवार पर, मत कीजे विश्वास ।
बसन्त ये थिर रहत नहिं, इक दिन होवत नाश ।६।
धन जोबन परिवार का, मत कर तू अभिमान ।
जप तप विद्या ज्ञान का, बसन्त हरि मद मान ।७।
विद्या धन गुण पाय के, कीजे नहिं अभिमान ।
बसन्त तीनों अनित्य हैं, यह निश्चय जिय जान ।८
स्वल्प सम्पति पाय तुम, काहि करत अहंकार ।
बसन्त नासे ताहि के, होगा पुनि तिरस्कार ।९।
बसन्त बंधन हेतु है, इक झूठा अहंकार ।
दूर करो नमस्कार कर, पाओ मुक्ति द्वार ।१०।
मान जगत में पाय के, मत कर तू अभिमान ।
मान देह का जान के, बसन्त हो निर्मान ।११।

मान दुःखों की खान है, सुख खानो निर्मान ।
बसन्त तांते मान तजि, पाओ सूख महान ।१२।
बसन्त अंहता त्याग के, ममता को कर नाश ।
आतम में स्थित रहो, काल न आवे पास ।१३।
अहंता ममता राख जो, भोगत भोग विलास ।
बसन्त करत न हरि भजन, तिह डारत जम फास।
सकल पदार्थ ईश के, तेरे तो कछु नाहिं ।
बसन्त ममता मोह कर, क्यों फसते इस माहिं।
ममता में दुःख बहुत है, निर्ममता सुख रूप ।
बसन्त तांते ममत तजि, पाओ सुख स्वरूप ।१६।
मन की ममता मेट के, करो जगत के काम ।
दुःख न व्यापहिं देह में, मन में हो आराम ।१७।
मन की ममता मार कर, समता को उर धार ।
बसन्त समता नाव चढ़, भव सिन्धु उत्तरो पार ।
बसन्त जग दुःख रूप नहिं, ममता है दुःख कूप ।

रे मन ममता त्याग के, हो जा भूपन भूप ।१९।
ज्ञान ध्यान हरि भजन से, मन इन्द्रियन को जीत ।
दूर करो दुःख द्वन्द सब, बसन्त होय अतीत ।२०।
बसन्त ईर्षा आग सम, जारत है दिन रैन ।
तांते ईर्षा ना करो, जे चाहत हो चैन ।२१।
बढ़ते देखत और को, जो मन में उठती आग ।
तांको ईर्षा कहत है, बसन्त सन्त सुजाग ।२२।
प्रथमे ईर्षावान नर, जलता अपने आप ।
बाद जलावत और को, देकर बहु सन्ताप ।२३।
बसन्त ईर्षा रोग बड़, जा मन लागत सोय ।
सो जन सुख पावत नहीं, दुःखी होत बहु रोय ।२४
ईर्षा मन में धार के, बुरा करो किस नांहि ।
बसन्त ईर्षा वान नर, जलत नरक के मांहि ।२५।
बुरा करत जो ओर का, मन में ईर्षा राख ।
बसन्त तांका हो बुरा, सन्त देत यह साख ।२६।

"भोजन विधि"

खाने पीने पहन में, समय गंवाया सोय ।
बसन्त अन्त पछतायेंगे, मानुष तन को खोय ।१।
खाय खाय फिर खायकर, तृप्त भई ना काहिं ।
बसन्त अब सन्तोष कर, शान्ति पाई मन माहिं ।२
बसन्त जेते मरत हैं, बहु भोजन के कीन ।
तेते मरत न कर्म से, यह निश्चय हम चीन ।३।
सीरा पूड़ी खीरणी, मांसवड़ी को देख ।
बसन्त खात जो पेट भर, मनुष्य न सो पशु पेख ।४
बसन्त पेटू मनुष्य को, आतम घाती जान ।
भूत पिशाच समान सो, धर्म भ्रष्ट पहिचान ।५।
बसन्त भोजन घृष्ट को, जे खावत संझ भोर ।
तांको जठरा अग्नि नित, होत जात कमजोर ।६
मन्द अग्नि से रोग बहु, प्रकट होत शरीर ।

बसन्त भोजन की क्या,पो न सकत सो नीर ।७।
तांते सात्त्विक स्वच्छ पुनि, स्वल्प करो आहार ।
मन इन्द्रिय को दमन कर, पाओ सूख अपार ।८।
निशदिन भोजन खूब तुम चबा चबा के खाय ।
निश्चल मन पुनि शान्तिसे, कह बसन्त सुख पाय ।९
नर जैसा अन्न खात है, तैसा ही मन होय ।
दीपक खावत तिमर को, देत कज्जल है सोय ।१०
जैसा भोजन तैस नर, होवत अपने आप ।
शुद्धाशुद्ध विचार बिन, भोगत पुण्य रु पाप ।११।
मांस मच्छी मति खाइये, पीओ नांहि शराब ।
बसन्त ये दुःख रूप हैं,मन बुद्धि करत खराब ।१२।
बहु भोगों को भोगते, तृष्णा बढ़ती जात ।
बसन्त पाते घृत जिम, अग्नि न होवे शान्त ।१३।
भोगों को मत भोगिये, भोग रोग को देत ।
बसन्त मन बुद्धि इन्द्रिय की,शक्ति को हर लेत ।१४

बसन्त भोगी देह को, मान आपना रूप ।
भोगे पांचों विषय को, पड़त नरक के कूप ।१५।
बसन्त भोगी देह से, हार खात जग मांहि ।
योगी ज्ञानी देह में, ममता राखत नांहि ।१६।
बसन्त आशा भोग की, करत मनुष्य को दीन ।
इक आशा भगवान की, ताप हरत है तीन ।१७।
ब्रह्म सुधारस को तजे, पीवत जो विष नीर ।
बसन्त ऐसा मूंढ नर, होवत दुःखी अधीर ।१८।
भोगत ब्रह्मानन्द को, तज कर विषयानन्द ।
बसन्त जीवन मुक्त हो, रहत सोय स्वच्छन्द ।१९

व्यायाम

कसरत करो शरीर से, जे सुख चाहत मीत ।
विषय भोग को त्याग के, मन इन्द्रियन को जीत ।१
बिन कसरत नर देह में, कबहूं न पावत चैन ।

बसन्त भोगत रोग बहु, सन्त कहत अस बैन ।२।
बैठत बैठत देह में, मन्द अग्नि हो जात ।
बिन पाचन कब्जी बड़े, रोगी हो नित गात ।३।
कसरत कर होवत सबो, सुन्दर सीधे अंग ।
देह निरोगी शक्ति पुनि, मन में बड़त उमंग ।४।
रोगी नर पुनि अधिकतर, भोग न सकते भोग ।
बसन्त भोगत है सदा, हृष्ट पुष्ट जे लोग ।५।
चार पदार्थ पात सो, रहत निरोगी जोय ।
बसन्त रोगी मनुष्य पुनि, पावत कबहुं न सोय ।६।
सोवन जागन शौच पुनि, कसरत नावन ध्यान ।
खान पान पाठन पठन, नियमित कर सब काम ।७
जैसे माखी शहद की, काम करत दिन रात ।
बसन्त तैसे मत करो, करो नियम से तात ।८।
नियम करो संयम करो, कसरत प्राणायाम ।
तन मन के सब रोग हर, बसन्त पाय आराम ।९

"ज्ञान के साधन"

सत्संग कर सन्तोष धर, सदाचार मन धार ।
सत्य सरलता राख उर, बसन्त हो भवपार ।१।
सहन करे सेवा करो, सब को दे सन्मान ।
स्वार्थ तज समता धरे, बसन्त पाय कल्यान ।२।
नीच तृण सम हो रहो, तरु ज्यों दुःख संहार ।
दीन जनों को दान दे, सुमरो सत् करतार ।३।
बसन्त बुराई छोड़ कर, करो भले सब काम ।
सब जीवों को सुख दे, सुमरो सत्गुरु नाम ।४।
जीवन सादी रहत है, फैशन करत विनाश ।
बसन्त कर तुम सादगी, मन में पाय हुलास ।५।
काया कञ्चन कामिनी, कीर्त्ति काम अरु क्रोध ।
बसन्त षट् रिपु जीत के पावो आतम बोध ।६।
काम क्रोध पुनि लोभ है, बसन्त नरक द्वार ।
दया दमन पुनि दान से, अपना करो उद्धार ।७।

सेवा सुमरण दान से, जो जन राखत प्रेम ।
बसन्त तांका करत हरि, निशदिन योग रु क्षेम ।८
श्रद्धा संयम साथ कर, खोजो हृदय मांहि ।
बसन्त आतम देख ले, बाहिर भटकत कांहि ।९।
सहानुभूति सरलता, सेवा करुणा प्रेम ।
इन पाञ्चों का राख उर, बसन्त पाओ खेम ।१०।
अहिंसा शम सन्तोष दम, क्षमा दया सत्य दान ।
इन पुष्पों के देन से, प्रसन्न हो भगवान ।११।
ब्रह्मचर्य शम सत्य दम, ब्रह्मज्ञान जिहं होय ।
बसन्त आत्म देव का, दर्शन पावत सोय ।१२।
बहुत जन्म के पुण्य जब, फल देत हैं तात ।
बसन्त तब इस जीव को, जिज्ञासा उपजात ।१३।
मोक्ष इच्छा मन धार के, जग से होय निसंग ।
बसन्त सत्गुरु संग कर, सुनिये ज्ञान प्रसंग ।१४।
कर दण्डवत प्रणाम पुनि, तन मन धन से सेव ।

प्रश्न कर गुरुदेव से, पाय निजातम भेव ।१५।
श्रद्धा से गुरु वचन सुनि, मनन करो दिन रात ।
जीव ब्रह्म की एकता, निश्चय करिये तात ।१६।
शान्त करे पाय शान्ति तुम, मन की छोड़ उपाधि ।
साधन साधे योग के, बसन्त लाय समाधि ।१७।
आशा तृष्णा वासना, चिन्ता ममता त्याग ।
संकल्प विकल्प छोड़ सब, बसन्त होय सुजाग ।१८
देवी गुन उर धार के, सुमरो सोऽहं नाम ।
ध्यान धरे गुरुदेव का, पाओ सुख का धाम ।१९।
बसन्त सीधा बैठ के, आतम में मन लाय ।
अर्थ सहित गुरु मन्त्र जप, पूर्ण पद को पाय ।२०।
बैठा अकेला नाम जप, मन को करके शान्त ।
दर्शन पा निज देव का, तोड़े भेद भ्रान्त ।२१।
वृत्ति ब्रह्मा कार कर, निर्गुण लाय समाधि ।
बसन्त अपना रूप लख, आनन्द पास अगाधि ।२२

सत्य अहिंसा न्याय से, करलो सद् व्यवहार ।
बसन्त समता भाव से, पावो मोक्ष द्वार ।२३।
हर्ष शोक को त्याग के, समता में चित्त जोड़ ।
बसन्त सब में ब्रह्म लख, भेद भरम को तोड़।२४
बसन्त सब का राग तज, झूठा जान विलास ।
एकाग्र मन से करो, अहं ब्रह्म अभ्यास ।२५।
अहं ब्रह्म उर राख के, बाह्य भक्त जाय ।
आतम मय जग जान के, बसन्त सेव कमाय ।२६।
तन मन धन से सेव कर, सबको हरि वपु जान ।
बसन्त आप निर्मान हो, सबको दे सन्मान ।२७।
शान्ति सुमति को राख मन, जीत गये सब सन्त ।
बसन्त हृदे धार हठ, हार गये बलवन्त ।२८
सब की ममता त्याग जिन, शुद्ध सेवा मम कोन ।
गोविन्द गोपियुन से कहा, मैं हुं तिन आधीन ।२९
जिस सुख को तुम खोजते, सो है तेरा रूप ।

अन्तर मुख वृत्ती करो, पावो सुख स्वरूप ।३०।
कर्तव्य बुद्धि से कर्म कर, धन पा धर सन्तोष ।
भोग भोग आसक्ति बिन समता से पा मोक्ष ।३१।
बसन्त पहिले जगत में, अपना आप सुधार ।
पीछे दे उपदेश पुनि, औरां करो उद्धार ।३२।

"वैराग्य"

इन्द्रजाल वत् जगत यह मिथ्या है सत् नाहिं ।
बसन्त तांका संग तजि, हरि सुमरो मन मांहि ।१
पीर अमीर फकीर पुनि, राजा रंक कंगाल ।
मर कर लेते खफन सब, नहिं ले जाते माल ।२।
गर्भ जन्म दुःख व्याधि दुःख, जरा मरण दुःख जान ।
बसन्त इनके हरन हित, पावो आतम ज्ञान ।३।
काया माया की क्या, राखत हो मन आश ।
बसन्त बादल छाय जिम, इक क्षण होवत नाश ।४

काया माया मोह तज, काम क्रोध अहंकार ।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, सुमरो सिरजणहार ।५।
मात पिता सुत दार मित, बहिन बन्धु पुनि भ्रात ।
बसन्त स्वार्थ से सबो, प्रीति करत दिन रात ।६।
सुख लख बैठत साथ में, बसन्त सब परिवार ।
दीन दुःखी जब देखते, घर से देत निकार ।७।
देह गेह धन दार सुत, मित्र बन्धु परिवार ।
बसन्त तेरे में नहीं, तांते जय करतार ।८।
बसन्त देखा शोधि के, सारा यह संसार ।
सतगुरु औ करतार बिन, स्वारथ के सब यार ।९।
सबसे नाता तोड़ के, सतगुरु से तुम जोड़ ।
बसन्त नित हरि नाम जप, आन तरफ मत दौड़ ।१०
मीठा खारा विषय रस, बार बार तुम लीन ।
बसन्त तृप्ति ना भयो, बीत गये पन तीन ।११।
बालापन यौवन गया, बूढ़ा भया शरीर ।

बसन्त अब तो नाम जप, धारे मन में धीर ।१२।
भोग रोग को खान है, काम जगत का बीज ।
बसन्त त्यागे द्वन्द्व को, नाम हृदय में सींच ।१३।
जन्म मरण यौवन जरा देते दुःख महान ।
बसन्त दुःख के हरण हित, सुमरो श्री भगवान ।
तपते लोह कड़ाह में, वस्तु तपत जिम तात ।
बसन्त तैसे जगत में, जीव तपत दिन रात ।१५
कंचन कीर्त्ती, कामिनि, पीव प्रसन्न दे नाहि ।
बसन्त इनको जो तजे, सो पीय माहि समाहि ।१६
कंचन कामिनि कीर्त्ती, तीनों दुःख का रूप ।
बसन्त इनको त्याग के, पावो सुख स्वरूप ।१७।
बसन्त जग का राग तज, जान जगत को नाश ।
सतगुरु का ध्यान, कर सोऽहं का अभ्यास ।१८
बसन्त सबको त्याग के, मन में धार विराग ।
श्रद्धा से सत्संग का, हरि में कर अनुराग ।१९

जो सुख है वैराग्य में, सो विषयों में नाहिं ।
बसन्त मैने शोध के, देखा अनुभव माहिं ।२०।
बसन्त जिस पर ईश को, पूरण कृपा होय ।
जग से वेग विराग को, पावत है नर सोय ।२१।

"धैर्य"

थोड़ो थोड़ो विपति में, बसन्त मत घबराय ।
सहन कर दुःख द्वन्द्व का, धीर वीर बन जाय ।१
सुख पीछे दुःख होत है, दुःख पीछे सुख होय ।
बसन्त दिन अरु रात जिम, ताहि न मेटत कोय ।२
बसन्त सुख दुःख कर्म से, पावत है सब कोय ।
तांते तुम धीरज करो, सुखो दुःखो मत होय ।३।
बसन्त मन धीरज धरो, सम्पत्ति विपदा माहिं ।
सुख दुःख मिलता कर्म से, शोक न कोजे कांहि ।४
बसन्त नाशहि शोक से, धीरज।छवि सुख ज्ञान ।

तांते शोक न कीजिये, शत्रु शोक को जान ।५।
शोक समय मत शोक कर, हर्ष समय अह्लाद ।
बसन्त दोनों छोड़ के, करलो हरी को याद ।६।
हर्ष शोक से होत दुःख, सम चित्त से सुख होय ।
बसन्त तांते द्वन्द तज, सम सेजा पर सोय ।७।
बसन्त राग अरु रोष को, प्रबल दुश्मन जान ।
दुःख हो धारे द्वन्द के, जोते सूख महान ।८।
ना किससे कर राग तुम, ना किससे कर द्वेष ।
बसन्त आतम एक लख, सम चित्त रहो हमेश ।९।
द्वेष करो नित जगत से, आतम में अनुराग ।
बसन्त ऐसा द्वन्द कर, जग में हो बड़भाग ।१०।
भूत काल को छोड़ दे, भावी करना याद ।
वर्तमान में वर्तिये, बसन्त बिना विखाद ।११।
मरण शूर को तृण सम, दाता को धन प्रान ।
वैरागी को नारि है, त्यागी को जग जान ।१२।

बसन्त तुम निर्द्वन्द हो, द्वन्द करो सब दूर ।
इक रस चित्त से ब्रह्म का, भजन करो भरपूर ।१३
बसन्त पुण्य अरु पाप का, फल सुख दुःख पहिचान।
धीर धरे रहु शांत में, सुमरो श्री भगवान ।१४।

जीवन की सफलता

सेव बड़ों की करत जो, होय सदा निष्काम ।
बसन्त पर उपकार पुनि, धन्य पुरुष तिह नाम ।१।
दान धर्म सत्कर्म में, जांकी आयू जात ।
बसन्त धन धन सोय जो, भजन करत दिन रात ।२
नारि पतिव्रत पुत्र युत, सत्य धर्म जिह पास ।
बसन्त सेवे सन्त को, जन्म सफल है तास ।३।
बसन्त सत्गुरु सन्त से, जो जन कर अनुराग ।
सत्संग सुन सेवा करे, सो जन है बड़भाग ।४।
सत्गुरु की सेवा कर, होय सदा निर्मान ।

बसन्त चिन्तन ब्रह्म का, बड़भागी सो जान ।५।
बसन्त मीठे वचन कहे, जो सबको सुख देत ।
बड़भागी सो मनुष्य है, निश दिन रहत सचेत ।६
बसन्त अपने देश हित, देत धर्म में प्रान ।
दीन जनों को प्यार दे, बसन्त सो धन जान ।७।
ब्रह्मचर्य को राख जो, जीते तन मन प्रान ।
वेद विद्या को पढ़त है, बसन्त सो धन जान ।८।
झूठ जगत को जान के, धारे मन वैराग ।
सत्संग में नित जात है, बसन्त सो बड़भाग ।९।
विषय वासना त्याग जो, सुमरत सत्गुरु नाम ।
बसन्त जीवन सफल तिहं, पावत सो हरि धाम ।१०
क्रोध अग्नि को त्याग जो, क्षमा राखत चीत ।
बसन्त सो नर धन्य जो, करत जीभ पर जीत ।११
जो माया वश होत नहिं, राखत मन सन्तोष ।
बसन्त सो बड़भाग जन, रहत सदा निर्दोष ।१२।

ज्ञान गंग में नाय के, हरत पाप मल जोय ।
अपना मन निर्मल करे, बसन्त धन है सोय ।१३
बसन्त आते द्वन्द जो, सुख दुःख मानत नाहिं ।
बड़भागी सो रहत जो, स्थित आतम माहिं ।१४
राग द्वेष को त्याग के, रहत शान्त चित्त जोय।
सुख दुःख में समभाव हो, बड़भागी है सोय।१५
तन मन धन का भाव तज, जीव ब्रह्म इक जान ।
निर्द्वन्द स्वच्छन्द हो, बसन्त सो धनजान ।१६।

दान महात्म्य

मुख्य कर्म है मनुष्य का, ब्रसन्त देना दान ।
दान बिना नहिं मनुष्य का, होगा कब कल्यान ।१
हरि ने दीना तोहि धन, पूर्व पुण्य अनुसार ।
सफल करे सो दान से, पावो स्वर्ग द्वार ।२।
धन सम्पत्ति को पाय तुम, करलो परोपकार ।

दान बिना धन जगत में, बसन्त है बेकार ।३।
काया माया थिर नहीं, यह निश्चय मन मान ।
बसन्त तांते चेत कर, निशदिन करले दान ।४।
धन की जितनी शक्ति पुनि, में श्रद्धा होय ।
बसन्त उतना दान कर, सफल करो धन लोय ।५।
सर्व लोक वश होत हैं, बसन्त दीने दान ।
शत्रु मित्र बन जात है, दान करत अघ हान ।६।
मधुर वचन कह नम्र हो, बसन्त दे दो जान ।
तांको जहं तहं मिलत है, यश सुख श्री भगवान ।७
बसन्त दानी जगत में, यश का भागी होत ।
लोक इसो परलोक में, दाता सुख से सोत ।८।
गौरव हो धन दान से, कृपणता से नाहिं ।
बसन्त तांते दान दे, सदा सुपात्र मांहि ।९।
पात्र कुपात्र शोधि के, देहि दान बिन दाप ।
धेनु घास खाय दूध दे, दूध खाय विष सॉंप ।१०।

दीन दुःखी मुहताज को, अनजल वस्त्र देह ।
बसन्त आगे मिलहिं तुझ, राख भरोसा एह ।११।
भूखे भोजन वस्त्र दे, नंहे प्यासे नीर ।
निर्गुन को गुण ज्ञान दे, बसन्त हर मन पीर ।१२।
बसन्त तेरे पास जो, विद्या धन गुण आहि ।
सोय सुपात्र देख दो, कृपण बन मत काहि ।१३
बसन्त खाय खिलाय पुनि, अन्न का खोल भंडार ।
दाता तुम को देत हैं, तू भी बन दातार ।१४।
आशवान की आश को, पूरन करता जोय ।
बसन्त तांकी आश भी, हरि से पूरन होय ।१५।
घर में धन को राख जो, देख देख हर्षात ।
बसन्त मर कर द्रव्य सो, छोड़ अकेला जात ।१६।
धन में ममता राख तुम, सर्प योनि मत पाय ।
बसन्त त्यागे द्रव्य को, देवलोक में जाय ।१७।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, दान करो निज हाथ ।

और सर्व रह जात यहं, घर्म चले तब साथ ।१८।

बसन्त तुम निष्काम हो, धन से कर शुभ काम ।
मैला मन उज्जवल करो, पावो आनन्द धाम ।१६

हरि की सम्पत्ति जान के, हरि को ही तुम देह ।
बसन्त ममत न राख तुम, सीख धरो मन एह ।२०

हरि की सम्पत्ति है सबी, तेरी तो कछु नाहिं ।
बसन्त तांते ममत तज, खाय खिलाय सब कांहि ।

बसन्त है धन दान से, उत्तम दान सन्मान ।
तांते भी अति उत्तम है, दान ब्रह्म का ज्ञान ।२२।

दानी को फिर देत है, बसन्त हरि धन दान ।
कर्जा वह राखत नहीं, प्रत्यक्ष देख प्रमान ।२३।

बसन्त दीने द्रौपदा, वस्त्र टुकड़े चार ।
राज सभा में कृष्ण ने, दीने वसन अपार ।२४।

दीन सुदामा कृष्ण को, मूठी तंदुल दोय ।
हरि ने दीने स्वर्णमय, महल जान सब कोय ।२५।

आतिथ्य सत्कार

अतिथी को सन्मान दे, यथा शक्ति कर सेव।
बसन्त मत अपमान कर, जानो अतिथी देव।१।
प्रसन्न कर मृदु वचन से, प्रेम सहित कर बात।
बसन्त भोजन आदि से, सेव करो दिन रात।२।
प्रसन्न चित्त से करत जो, अतिथी का सत्कार।
पावत यश इस लोक में, सुख पर लोक मंझार।३।
बसन्त जिनके द्वार से, अतिथी खाली जात।
उसको अपना पाप दे, पुण्य सबी ले जात।४।
अतिथी का स्वरूप धर, हरि आवत घर माहिं।
श्रद्धा से सेवा करो, बसन्त भूलो नाहिं।५।
अतिथी आदर करत नहिं, उलटा करत क्रोध।
तांके नाशत पुण्य सब, बसन्त सुन प्रबोध।६।
बसन्त प्रथम अतिथी को, भोजन सरुचि खिलाय।
पीछे तुम परिवार युत, शीत प्रसादी खाय।७।

ऊंच नीच निर्धन धनी, पण्डित संत अजान ।
बसन्त घर में आय जो, तांको दे सन्मान ।८।
आये का आदर करो, आसन दे बैठाय ।
बसन्त मीठे वचन कह, वैर विरोध विहाय ।९।
सर्व दान से श्रेष्ठ है, अतिथि का सन्मान ।
बसन्त तांते सेव कर, जान तिसे भगवान ।१०।
अतिथी के सन्मान सम, आन धर्म नहिं कोय ।
अतिथी पूजक के गृह, बसन्त सब सुख होय ।११
अतिथी के सत्कार से, प्रसन्न हो भगवान ।
बसन्त तांते प्रेम से, दे अतिथी को मान ।१२।
अतिथी तेरे धाम में, खावत अपना भाग ।
बसन्त होगा नाम तव, कहते सन्त सुजाग ।१३।
हरि देता हरि खात है, तू मन मत घबराय ।
बसन्त सब घट है हरी, खाय खिलाय सुख पाय ।१४
परमेश्वर का रूप है, बसन्त यह संसार ।

तांते कांहि न दुःख दे, सबको दे सत्कार ।१५
सन्त विप्र गुरुदेव वृद्ध, जे नहिं पूजत तात ।
बसन्त जीते पाय दुःख, मर कर नर के जात ।१६

गो महात्म्य

गोधन जैसा धन नहीं, देखा मध्य संसार ।
काम धर्म धन मोक्ष का, बसन्त है भंडार ।१।
सब जीवों की मात इक, गो माता पहिचान ।
बसन्त गो बिन जगत में, है रक्षक नहिं आन ।२।
गंगा गीता गायत्री, गो जननी ये माय ।
इन पाञ्चों में उत्तम है, बसन्त माता गाय ।३।
कामधेनु चिन्तामणी, के सम जानो गाय ।
बसन्त सेवे गाय को, सब सुख सम्पत्ति पाय ।४।
गो माता इस जगत का, करती है कल्यान ।
करो रक्षा गो मात की, बसन्त दे धन-प्रान ।५।
दूध दही घी छाछ से, गो पालत सब देश ।

बसन्त ऐसी गाय की रक्षा करो विशेष ।६।
गाय रखे सब देश की, बसन्त रक्षा होय ।
गाय हते हत देश हो, सब सुख सम्पति खोय ।७।
धम अर्थ की दृष्टि से, सब जन हो गोपाल ।
बसन्त देती गाय है, सब को सूख विशाल ।८।
जान पूज गो मात को, रामकृष्ण की सेव ।
बसन्त गो में रहत हैं, ब्रह्मादि सब देव ।९।
गो ब्राह्मण गुरु देवता, इनके पूजे तात ।
बसन्त गृहस्थी मनुष्य के, सर्व पाप मिट जात ।१०।
सब दानों में उत्तम है, देना जीवन दान ।
बसन्त रक्षा सर्व की, तांते करो सुजान ।११।
गो ब्राह्मण गुरु सन्त की, रक्षा करत है जोय ।
बसन्त तन मन प्रान दे, जात स्वर्ग में सोय ।१२।
बसन्त प्रसन्न होत हरि, जीव दया से खास ।
हरि प्रसन्न नहिं होत है, खाये पुनि पशु मांस ।१३

क्षमा दया उर राख के, किसको ना दुःख देय ।
बसन्त अहिंसा भाव से, सबका हित कर लेय ।१४
हिंसा किसकी ना करो, दुःख ना किस को देह ।
बसन्त सुख दे सर्व को, परम धर्म है एह ।१५।
दीन दुःखी गुगदाम का, बसन्त दु.ख कर दूर ।
धैर्य्य दिल में धार के, देहि सूख भरपूर ।१६।
दीन दुःखी मुहताज पर, कबहुं न करिये रोश ।
बसन्त उलटा देहि तुम, तन मन से संतोष।१७।

"श्रद्धा"

मन के दृढ़ विश्वास को, श्रद्धा कहत सुजान ।
बसन्त हरि परलोक गुरु, शास्त्र में सा आन ।१।
हरि व्यापक है सर्व में, सर्वज्ञ समर्थ दयाल ।
बसन्त देश विदेश में, है सो नित रखपाल ।२।
जीव नित्य तज देह को जाता है परलोक ।
बसन्त भोगे कर्म फल, फिर देखत यह लोक ।३।

सत्गुरु के सत् वचन सुन, श्रद्धा से सत्य मान ।
बसन्त जसे कहत गुरु, तैसे करो सुजान ।४।
सन्त शास्त्र के वचन में, पूर्ण श्रद्धा धार ।
बसन्त वैसे कर्म कर, सुख पाओ दुःख टार ।५।
तीरथ जप तप देव यज्ञ, सत्गुरु सन्तन माहिं ।
जैसी श्रद्धा होय जिह, तैसा फल हो ताहिं ।६।
चार पदारथ मिलन महिं, कारण श्रद्धा जान ।
श्रद्धा बिन मिलत नहिं, बसन्त सत् पहिचान ।७।
श्रद्धा से तप दान जप, मन वांछित फल देत ।
बिन श्रद्धा कछु मिलत नहिं, तांते होय सचेत ।८।
श्रद्धा से सिद्ध होत है, मन्त्र का अनुष्ठान ।
देव यज्ञ फल देत हैं, वेद करत वख्यान ।९।
श्रद्धा से जो करत है, हरि का सुमरन ध्यान ।
तांको दर्शन देत है, बसन्त श्री भगवान ।१०।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, करत प्रार्थना जोय ।

तांको झटपट सुनत हरि, करत काज सिद्ध सोय।
बसन्त श्रद्धा भाव से, देवी गुन नर पात।
क्षमा दया गम्भीरता, धीर वीर बन जात।१२।
स्वर्ग सुख धन सम्पति, शान्ती यश सन्तोष।
बसन्त श्रद्धावान नर, पावत पद निर्दोष।१३।
श्रद्धा बिन जप दान तप, धर्म कर्म स्नान।
बसन्त फल कछु देत नहिं, सन्त वेद भगवान।१४।
वेद गुरु हरि सन्त में, पूर्ण धर विश्वास।
ज्ञान भक्ति सत् कर्म से, पाओ सुख अविनास।
श्रद्धा बिन भगवान भी, पावत नहिं आराम।
बसन्त श्रद्धावान नर, निर्धनपा सुख धाम।१६।
अलभ सुलभ ही होत है, अगम सुगम पुनि होय।
बसन्त श्रद्धा से सबी, कार्य पूर्ण जोय।१७।
श्रद्धा से विष अमृत हो, पावक शीतल होय।
कठिन वस्तु हो मोम सम, दुःख नहिं लागत कोय।

सुधन्वा हरि स्मरन किया, श्रद्धा संजम साथ ।
तेल तता शीतल भया, जैसे गंगा पाथ ।१६।
एकलव्य गुरु द्रोण की, मूर्ती रखके पास ।
शस्त्र विद्या सीख ली, पूर्ण धर विश्वास ।२०।
बसन्त पूर्ण भाव से, भजन किया प्रह्लाद ।
हरि ने सब दुःख दूर कर, दीना मन अह्लाद ।२१
जगत भावना रूप है, बसन्त कर विश्वास ।
अपनी कर शुद्ध भावना, होवे सब दुःख नाश ।२२

"बसन्त ऋतु"

बसन्त ऋतु सम जगत में, और ऋतु का नांहि ।
बसन्त रूप बसन्त है, बसन्त दे सब कांहि ।१।
सुर नर गन्धर्व पित्रगण, पशु-पंच्छी बनराय ।
पावत हर्ष बसन्त में, बसन्त सहज सुभाय ।२।
आयो ऋतु बसन्त की, पेड़ भये प्रबीन ।

बसन्त सूके पत्र तज, लावत हरे नवीन ।३।
होय हरे सब पेड़ हों, फूले फूल अपार ।
सुगन्धी छायी जगत में, बसन्त ऋतु मंझार ।४।
आयी ऋतु बसन्त की, फूले फले सब पेड़ ।
लगे न पत्र करीर को, मंद भाग तिह हेर ।५।
आयी ऋतु बसन्त की, उठ भंवरा अब जाग ।
सब की आशा छोड़कर, चलिये अपने माग ।६।
आयी ऋतु बसन्त की, भंवरा हो हुशियार ।
आलस्य को तज देखिये, बसन्त बाग बहार ।७।
बागीचे में जाय कर, भंवरा लेहि सुगन्ध ।
बसन्त भूल न कीजिये, प्रीति साथ दुर्गन्ध ।८।
आयी ऋतु बसन्त की, सरस भये सब फूल ।
बसन्त भंवरा लेह रस, फूलों पर जा झूल ।९।
बसन्त ले रस फूल का, भंवर भये मस्तान ।
तन मन को सुधि भूल के, देत तहां ही प्रान ।१०

आयी ऋतु बसन्त की, होया सतगुर सांग ।
बसन्त गुरु प्रसाद ते, लागा आतम रङ्ग ।११।
बसन्त ऋतु तन मनुष्य में, हरि गन्ध है भरपूर ।
मन भंवरा उठ सुगन्ध ले, दूःख करो सब दूर ।१२
बसन्त ऋतु मृदु वचन में, उपजत प्रेम सुफूल ।
बसन्त तांमे रहत है, शील सुगन्ध सुख मूल ।१३।
बसन्त ऋतु सत्सङ्ग नित, शान्ती देत सुगन्ध ।
बसन्त सब सांशय गये, मिटी पाप दुर्गन्ध ।१४।
बसन्त ऋतु सम प्रेम जब, आवत हृदय मंझार ।
बसन्त हरि दुःख द्वन्द तब, आनन्द देत अपार ।।
बसन्त ऋतु है ज्ञानमय, हरत शीत अज्ञान ।
करे निरोगी काय को, आनन्द देत महान ।१६।

विसमरा का अर्थ

देहि मित्र विशवास जो, तांको करत विनाश ।

बसन्त भोगत नरक सो, जब लौं इन्दु विभास ।१।
सेतुबंध पुनि सिंधु में, संगम गंगा तीर ।
छूट जात सब पाप पुनि, मित्र द्रोह नहिं वीर ।२।
मेरु सम धन दान दे, कुरुक्षेत्र के माँहि ।
बसन्त छूटत पाप सब, मित्र द्रोह पुनि नाहिं ।३।
राम नाम के जपत ही, छूटत सबहीं पाप ।
बसन्त छूटत एक नहिं, मित्र द्रोह संताप ।४।
देवी घर में रहत तू, बन में कबहुं न जात ।
बन्दर सिंह पुनि मनुष्य की, कैसे जानत बात ।५
देवी द्विज प्रसाद ते, कण्ठ विराजत देव ।
भानुमती के तिलक ज्यों, बसन्त जाना भेव ।६।

सात दिवस

सोम शान्ति स्वरूप तुम, अमृत रस भरपूर ।
कह बसन्त मुझ शान्त दो, कलह क्लेश कर दूर ।१

मंगल मंगल रूप तुम, मंगल कर सब देश ।
बसन्त तन तन्दुरुस्त रहे, मन में शांति विशेष ।२।
बुद्ध तुम बिुद्ध बल ज्ञान निधि, आनन्द के हो धाम ।
बसन्त आनन्द बल बुद्धि, देह मुझे आराम ।३।
गुरु तुम हो सब देव गुरु, ज्ञान गुणन आगार ।
बसन्त आतम ज्ञान दे, देवी गुणन भंडार ।४।
शुक्र शुक्र स्वरूप तुम, हित करना निर्दोष ।
बसन्त का नित हित करो, देहि शील सन्तोष ।५
शनि शक्ति स्वरूप तुम, सबसे हो बलवान ।
जन बसन्त पर कर दया, कार्य करो महान ।६।
रवि राम सुख धाम हो, सदा स्वयम् प्रकाश ।
बसन्त अविद्या तिमर हर, दे मुझ ज्ञान उजास ।७
सात दिवस का प्रतिदिन, जो जन कर हैं जाप ।
बसन्त तांको देत नहिं, सात ग्रह संताप ।८।

यात्रा के मुहूर्त

शनी सोम इक नौम को, पूर्व चलिये नाहिं ।
तीज एकादशी जाय नहिं, अग्नि कोण के माहिं ।१
पंचम त्रयोदशी वार गुरु, दक्षिण देश मत जाय ।
चोथ एकादशी को नहीं नैऋत में धर पाय ।२।
चतुर्दशी छठ शुक्र रवि, जाय न पश्चिम देश ।
सप्तम पूर्ण मास नहिं, बाएं कर प्रवेश ।३।
दशमी द्वितीया भौम बुद्ध, उत्तर न जाए कोय ।
अष्टमी उमावस्य को, नहिं ईशा नहिं जोय ।४।
मेष सिंह धनराशि में, पूर्व दिश विधु होय ।
वृष कन्या पुनि मकर में, दक्षिण देश चंद जोय ।५
मिथुन तुला पुनि कुम्भ में, पश्चिम को शशि जान ।
कर्क वृश्चिक मीन में, उत्तर इन्दु पहिचान ।६।
दिशा शूल को वाम दिश, योगिन पीछे होय ।
सन्मुख चंदा कर चले, बसन्त सब सुख जोय ।७।

शुक्र शनी में सात पद, अन दिन ग्यारहं पाद ।
वीर वार आधा पटक, समन किये अह्लाद ।८

द्रव्य विचार

जा जा वस्तू जगत में, सा सा धन से होय ।
बसन्त तांते यत्न से, संग्रह करत धन लोय ।१।
धन से महल मकान हो, धन से रथ हस्वार ।
धन से खान रूपान हो, बसन्त तन शृङ्गार ।२।
धन से अतिथी सेव हो, धन से होय पुण्य दान ।
बसन्त पूजन यजन हो, धन से तीर्थ स्नान ।३
मूर्ख पण्डित होय पुनि, निर्गुण हो गुणवान ।
दोषी नर निर्दोष हो, धन से बसन्त बखान ।४।
नीच मनुष्य भी ऊंच हो, बसन्त धन प्रभाव ।
शत्रु मित्र बनि जात है, धन से सहज स्वभाव ।५।
धन के बल से निबल भी, होत मनुष्य बलवान ।

द्रव्य हीन बलवान भी, बसन्त निबल पहिचान ।६

धन लखि आदुर देत सब, बिन धन पूछत नाहिं ।
बसन्त जो धन देत है, मानत हैं सब ताहिं ।७।

बसन्त धन से चलत है, इस जग का व्यवहार ।
धन बिन जीवन मनुष्य का बिल्कुल है बेकार ।८

झूठ कपट बल छल ठगी, दम्भ द्रोह कर लोग ।
बसन्त द्रव्य कमाय के, भोगत बहुते भोग ।९।

बसन्त धन हित धर्म तज, अधर्म मनुष्य कमात ।
हिंसा चोरी वचन भंग, विश्वास करते घात ।१०

धन कारण नर जात है, देश छोड़ परदेश ।
नीच मनुष्य की सेव कर, बसन्त सहत क्लेश ।११

भाग बिना धन मिलत नहिं, रे नर कर विश्वास ।
चाहे जा पाताल में, चाहे भूमि अकास ।१२।

माया छाया एक सी, स्थिर रहती नाहिं ।
माया पीछे मूण्ढ तू, बसन्त दौड़त काहिं ।१३

दौलत को दो लात हैं, मारत आते जात ।
आते शिर ऊंचा करे, जाते कमर निपात ।१४।
पाप करे इकठी करत, माया को जन जोय ।
बसन्त वो फिर पाप कर, जात नरक में सोय ।१५
बसन्त धन से पुण्य करो, पाप करो तुम नांहि ।
धर्मी स्वर्गों जात हैं, पापी नरकों मांहि ।१६।
बसन्त माया त्रिगुणी, सत से मोहे देव ।
रज से मानुष्य तमहुं ते, पशु पंछी लख लेव ।१७।
बसन्त माया सापिनी आप वंश को खात ।
भाग जात हरि शरन जो, बसन्त सो बच जात ।१८
तीन गुणों से मोहिनी, मोहे सब संसार ।
बसन्त सो बच जात जो, स्मरत सिरजणहार ।१९
हाय हाय मति हाय कर, माया कारण मीत ।
बसन्त माया देत दुःख, तन मन माहीं नीत ।२०।
बसन्त कहु किस पाइया, माया में सुख शान्ति ।

रो रो कर सबहीं गये, खो कर तन मन क्रान्ति २१
माया की ममता तजे, मोहन से कर प्रीति ।
बसन्त तन मन हो सुखी, होय न कछु पि प्रतीति ।२२
बसन्त माया आय जो, खाओ और खिलाय ।
बहुती संग्रह मतकारो, माया है दुःख दाय ।२३।
क्षमा शान्ती नम्रता, धर्म दया सन्तोष ।
माया आते रहत नहिं, धीरज जीवन मोष ।२४।
आशा तृष्णा वासना, चिन्ता द्वेष रु राग ।
माया आते बढ़त हैं, तांते करिये त्याग ।२५।
आंतम धन इकठा करो, शान्ती सुख के हेत ।
बसन्त माया कर कठो, पाय न योनि प्रेत ।२६।

नारी निन्दा

पतिव्रता व्यभचारिणी, नारी द्वय जग मांहि ।
पतिव्रता पति को भजे, और भजत हैं नांहि ।१।

पति को तज पर पुरुष से, प्रीत करत जा नारि ।
बसन्त वहं दुःख भोग कर, देखत नरक द्वार ।२।
देह प्राण का मोह तज, होत सती जा नारि ।
बसन्त जाय स्वर्ग महिं, भोगत भोग अपार ।३।
साथ पति के जरत नहिं, सत्त में रहती जोय ।
ज्ञान पाय हरि को भजे, मुक्ति पावत सोय ।४।
भर्ता भार्या परस्पर, रहत प्रसन्न जंह नीत ।
बसन्त तंह सुख सम्पदा, रहत श्री हरि प्रीत ।५।
पति की आज्ञा में चले, पति का राखे मान ।
बसन्त संजम में रहे, पतिव्रता सा जान ।६।
पति को जाने प्राण सम, सेव करे दिन रात ।
बसन्त सुख दुख सब सहे, करे न अन से बात ।७।
मात बहिन जंह पुत्र वधु, सुता अकेली होय ।
बसन्त तहं ना बैठिए, प्रबल इन्द्रिय को जोय ।८।
नारि पिशाची रैन दिन, बसन्त नर को खात ।

तो भी समुझत मूण्ड नहिं, उलटा हर्ष मनात ।९।
बसन्त कान्ता मनुष्य को, हरती तन मन क्रान्त ।
मन महिं डाले कल्पना, शान्ति करत है शान्त १०
सुन्दर युवति पुरुष के, मन को झट हर लेत ।
तन मन धन का खोस बल, कांयर हो कर देत ।११
आंख मिलाकर आंख से, नारि करत आधीन ।
शूरवीर नर सुर असुर, होत दीन ते दीन ।१२।
हाव भाव रस रास कर, हस हस के रीझाय ।
नारि करत वश नरन को, बसन्त सहज सुभाय १३
अंग दिखाकर अंगना, उत्पति करन अनंग ।
भूत भूतनी होय के, भोगत भोग निसंग ।१४।
बसन्त संगति नारि की, करत पुरुष को नाश ।
बेमुख कर भगवन्त सें, देत नरक महिं वास ।१५
नारि कुरुप कुबोलिनी, बसन्त है दुःख रूप ।
इनसे भी दुःख देत बहु, युवति सुन्दर स्वरूप ।१६

मोक्ष धर्म धन देह की, दुश्मन नारी जान ।
मोह फांस में बांध कर, भेजत नरक निदान ।१७
बसन्त काटे सापिनी, एक जन्म ही जात ।
नारि नांगनी काट कर, जन्म जन्म भटकात ।१८

अष्टांग योग

भोगे भोग अनेक तुम, कबहुं न कीना जोग ।
बसन्त तांते पाइया, तन मन के सब रोग ।१।
भोग रोग को त्याग के, बसन्त कीजे योग ।
एकाग्र शुद्ध मन करो, आतम से संजोग ।२।
योग बिना नहिं ज्ञान हो, ज्ञान बिना नहिं योग ।
बसन्त तांते योग कर, तजे जगत के भोग ।३।
चित्त को एकाग्र करे, आतम में मन जोड़ ।
बसन्त ऐसा योग कर, जग के बन्धन तोड़ ।४।
चित्त एकाग्र करन हित, साध योग अष्टांग ।

बसन्त गुरु से सीख के,वश कर ये मन नाग ।५।
इक यम दूजा नियम लख, तीजा आसन जान ।
चोथा प्राणायाम कर, प्रत्याहार पहिचान ।६।
छठवों कर तू धारणा, सतवां ध्यान लगाय ।
सविकल्प समाधि आठ ये, साधन योग कमाय ।७
यम के लक्षण श्रवण कर, धारो हृदय माहिं ।
मन इन्द्रियन को दमन कर, जग में भटको नाहिं ।८
अहिंसा सत्य अस्तेय पुनि, ब्रह्मचर्य ये चार ।
पंचवा अपरिग्रह है, यम लक्षण निर्धार ।९।
बसन्त तन वन वचन से, किसको ना दुख देह ।
उलटा सुख दे सर्व को, अहिंसा लक्षण एह ।१०।
सब साधन का मूल है, अहिंसा साधन जोय ।
बसन्त अहिंसा सिद्ध किये, सब साधन सिद्ध होय ।
बसन्त सत्य दो भान्ति का, सत्य वचन नित बोल ।
सत्य ब्रह्म को जान तुम, पांचों पड़दा खोल ।१२

सत्य का करो विचार तुम, सत्य का करो उच्चार ।
सत्य का कर व्यवहार पुनि, सत्य का करो अहार ।
अस्तेय चोरी ना करो, ऋषि मुनि कहते एह ।
मालिक के आज्ञा बिना, पर की वस्तु न लेह १४।
बचना मैथुन आठ से, ब्रह्मचर्य कह ताहि ।
बसन्त मन वच काय से, परतिय भोगे नाहि ।१५
तन को आवश्यकता बिना, संग्रह करे न भोग ।
ताहि अपरिग्रह कहहिं, बसन्त मुनिवर लोग ।१६
पाञ्च लक्षण यम के कहे, योग शास्त्र अनुसार ।
अब लक्षण सुन नियम के, वे सब मन में धार ।१७
शौच तोष तन तीन ये, चतुर्थ है स्वाध्याय ।
ईश्वर प्रणिधान कर, पांचों नियम कमाय ।१८
जल माटी से धोवना, तन की शुद्धता जान ।
तजिना विषय विकार को, मन की शौच पछान ।
जो हरि तेरे कर्म का, तुझको ही फल देह ।

राजी रहना ताहि पर, तोष लक्षण है एह।२०।
धर्म कर्म हरि भजन में, द्वन्द दूःख जो आय।
बसन्त तिनके सहन को, तप कहते मुनिराय।२१
श्रवण मनन वेदान्त का, चिंतन करना जोय।
स्वाध्याय तांको कहत, हरि स्मरण वा होय।२२
यज्ञ दान तप आदि जे, कर्म करो नित मीत।
ईश्वर अर्पण सब करो, मन ममता को जीत।२३
दश लक्षण यम नियम के, धारत हृदय जोय।
सो अधिकारी योग का, बसन्त निश्चय होय।२४
बसन्त जितनी योनि हैं, उतने आसन जान।
तासें चौरासी किये, आसन शिव भगवान।२५
बसन्त तांमे मुख्य दो, पद्म सिद्धासन जान।
इनके साधे होय सिद्ध, योग समाधि सुजान।२६
औरहिं आसन देह के, रोग करत सब नाश।
बसन्त गुरु से सीख के, कर आसन अभ्यास।२७।

निश्चल सीधा बैठके, भद्रा मुद्रा बांध ।
बसन्त प्राणायाम कर, मन की छोड़ उपाध ।२८
बसन्त गुरु से सीख के, कीजे प्राणायाम ।
पूरक कुम्भक रेचको, करलो शुद्ध तमाम ।२९।
पद्म सिद्धासन बांध के, बसन्त थिर कर देह ।
बांये पुट से श्वास को खींच हृदय भर लेह ।३०
भरने को पूरक कहे, बसन्त मुनिवर राव ।
ताहिं प्राण को थिर करन, कुम्भक है सत् भाव ।
दहिने पुट से प्राण वह, धीरे धीरे त्याग ।
तांको रेचक कहत है, बसन्त सन्त सुजाग ।३२
त्याग करो जिस द्वार से, उससे ही फिर लेह ।
कुम्भक कर रेचक करो, प्राणायाम है एह ।३३।
रोग घटे आयू बढ़े, ब्रह्मचर्य थिर होय ।
बसन्त पावन इन्द्रिय हो, प्राणायाम से जोय ।३४
प्राणायाम से तेज हो, जठराग्नि दिन रैन ।

चंचल मन निश्चल करे, योगी पावत चैन ।३५।
मूलबन्ध उडियान बन्ध, जालन्धर कर बन्ध ।
तीनोंप्राणायाम कर, बसन्त हर दुःख द्वन्द ।३६
बसन्त गुरु के मन्त्र से, कीजे प्राणायाम ।
श्रुति नृति थिर वृत्ति कर, पाय अन्तर आराम ।
श्रुति शब्द पुनि श्वास ये, जब तक एक न होय ।
बसन्त तब तक नियम से, करत रहो तुम सोय ।
बसन्त सोऽहं मंत्र नित, चलत श्वास के माहिं ।
केवल श्रुति मिलाय के, निशदिन सुमरो ताहिं ।
प्राण मूल सें उठ के, जावत दसवें द्वार ।
तांसे मन को मेल के, स्मरण कर हर बार ।४०।
स्वल्प प्राणायाम का, बसन्त कोन बयान ।
अब लक्षण प्रत्याहार का, सुनो सजन दे कान ।
पांच विषय का इन्द्रिय से, संबंध है दिन रात ।
बसन्त तांते भोगतो, इन्द्रिय विषय को तात ।४२

बसन्त इससे इन्द्रिय मन, तजकर स्मरण ध्यान ।
वेग जात हैं विषय में, चंचल होय महान ।४३।
जब मन जावहि विषय में, भजन ध्यान को छोड़ ।
दोष दिखाए विषय में, मन आतम में जोड़।४४।
पांच विषय से रोकना, मन का है प्रत्याहार ।
सावधान हो वेग कर, सब विघ्नों को वार ।४५।
बसन्त चित्त को ध्येय में, धरण धारणा ध्यान ।
ध्येय धारणा का धनी, तांको तुम पहिचान ।४६
पांच तत्त्व गुरुदेव पुनि, त्रिकुटी आदि अंग ।
निर्गुण सगुण ब्रह्म है, करलो इक से संग ।४७।
जिसको करिये धारणा, धरो तिसीका ध्यान ।
बसन्त यकटिक ध्यान हो, वृत्ति न आवे आन ।४८
बसन्त जैसे चान्द का, करता ध्यान चकोर ।
ध्यान धरो तिम ध्येय में, देख न काहूं ओर ।४९
ध्येय ध्यान ध्याता रहे, और रहे ना कोय ।

बसन्त सगुण समाधि सा, भाखत मुनिवर लोय ।५०
मन के एकाग्र किये, रिद्धि सिद्धि बहुतो आय ।
बसन्त तांको छोड़ के, निगुण समाधि लगाय ।५१
ध्याता लय हो ध्यान में, ध्यान ध्येय में लीन ।
ध्येय रहे अन ना रहे, निर्गुण समाधि चीन ।५२।
आठ अंग ये योग के, कछुक कहे उर धार ।
ध्यान धारणा समाधि का, करहूं फिर विस्तार ।
मूलबन्ध कर मूल में, दृढ़ सिद्धासन बाँध ।
गणपति का धर ध्यान तहं, सर्व विघ्न हो बाध ।
बसन्त निशदिन ध्यान धर, नाभ कमल के माहिं ।
वहां रहत भगवान हरि, दर्शन कीजे ताहिं ।५५।
बसन्त हृदय वास कर, शंकर खेलत खेल ।
नाद अनाहत बाजता, तासें मन को मेल ।५६।
बसन्त हृदय कमल ज्यों, नीचे मुख है जास ।
विकसत जाग्रत स्वप्न में, सुषपति निस्पन्द तास ।

बुद्धि का साक्षी जो है, आनन्द रूप अपार ।
बसन्त तांका ध्यान धर, हृदय कमल मंझार ।।
कण्ठ विराजत शारदा, तांका धरिये ध्यान ।
बसन्त वाणी मधुर हो, पुनि कविता का ज्ञान ।।
नासाग्र में ध्यान धर, देखो तत्त्व सु पांच ।
बसन्त भविष्यत ज्ञान हो, योगी कहते सांच ।
गंगा यमुना सरस्वती, प्रयाग त्रिभणा माहिं ।
बसन्त जो तंह ध्यान धर, पाप छूट सब जाहिं ।६१
वृति नैन की उलट कर, धर सतगुरु का ध्यान ।
होय मगन गुरुदेव में, ना देखो कछु आन ।६२।
त्रिकुटी में है शंख धुनि, पुनि दीपक प्रकाश ।
बसन्त तंह नित कीजिये, ओऽम् का अभ्यास ।६३
जैसे करत अभ्यास तिम, बढ़ती ज्योति महान ।
बसन्त नक्षत्र दामनी, दीसत शशि पुनि भान ।।
सहस्त्र दल में दामनी, प्रातः सूर प्रभास ।

सुन वादर सी गरजना, बसन्त तंह कर वास।६५
भंवर गुफा में बीन सी, सुन धुनि मन कर शांति।
बसन्त तामें देख तुम, पूर्ण सूर्य क्रान्ति।६६।
रिणु झिणु हो ऋणू कार में, बाजत नाद अनन्त।
बसन्त सुनकर प्रेम से, होत मगन मन सन्त।६७
शून्य सकड़ में शून्य है, होय तहां मन शांति।
बसन्त आनन्द आवहिं, बिन फुरने बिन भ्रांति।
बसन्त द्वारे दसम में, राजत आतम देव।
सोऽहं से मन मेल के, पाओ तिसका भेव।६८
बसन्त सत्य स्थान में, सत्य ब्रह्म का वास।
भासहिं तहां न रैन दिन, चंद्र सूर्य प्रकाश।७०
बसन्त चेतन देव में, श्रुति किया प्रवेश।
पूर्ण आनन्द पाइया, भूले देश अशेश।७१।
देश जहां तंह काल है, काल जहां तंह देश।
बसन्त नहिं चिदरूप में, देश काल का लेश।७२

जांमे रवि शशि पांच तत, नाहि जगत का खेल ।
बसन्त तिस चिमात्र में, भया श्रुति का मेल ।७३
श्रुती चेतन हो गयी, तज कर अपना भाव ।
भेद भरम सब मिट गया, बसन्त सहज स्वभाव ।
बंध मोक्ष जांमे नहीं, बसन्त तंह मम वास ।
दूःख द्वन्द व्यापे नहीं, नहि यमराज त्रास ।७५
बसन्त श्रुति रु शब्द का, सतगुरु कीना मेल ।
सोऽहं जप सोऽहं भया, देखा अद्भुत खेल ।७६
सतगुरु के पद कमल में, करहूं कोटि प्रणाम ।
जिह प्रसादे पाइया, बसन्त आनन्द धाम ।७७

देह निन्दा

घोर नरक है देह यह, रोग शोक की खान ।
बसन्त इनका मोह तज, अपना आप पछान ।१
देह मलिन को रैन दिन, कांहि संवारत मीत ।

बसन्त यह छवि कुसम जिम,इक रस रहत न नीत।
देह छवि को देख तू, मोह करत है कांहि।
बसन्त यह छवि नाहिं तब, निश्चय कर मन माहिं।
अस्थि मांस मल मेद पर, चढ़ा सुन्दर है चाम।
तांको अपना रूप लखि, भूल गया छवि धाम।४
जैसे रवि प्रकाश से, प्रकाशत हैं नैन।
आतम छवि से बसन्त तिम,तन शोभत दिन रैन।५
आतम छवि बिन देह छवि,मलिन होत खिन माहिं।
जार लेत शमशान महिं, राखत कोऊ नाहिं।६।
चेतन होते देह से, सब जन करते प्यार।
बिन चेतन सब भूत लख, करत सबी तिरस्कार।
बसन्त अती मलीन है, इस तन के सब द्वार।
रैन दिवस तुम देखते, तो भी करते प्यार।८।
देह मलिन तू है नहीं, तू है चेतन देव।
बसन्त तांको जान के, त्यागो तन अहमेव।९।

अहंता ममता देह की, बसन्त तत्क्षण त्याग ।
देह द्रष्टा जो आतमा, तांसे कर अनुराग ।१०।
गर्भ जन्म बालक युवा, जरा मरण दुःख कूप ।
बसन्त तन में सुख नहीं, आतम है सुख रूप ।११।
बालापन में मूंढता, यौवन माहिं विकार ।
वृद्धापन में ताप बहु, रहते देह मंझार ।१२।
बसन्त कफ पित वात से, देह बनी स्थूल ।
तांमे होत बहुत दुःख, जे यह होत प्रतिकूल ।
आशा तृष्णा चिन्त पुनि, काम क्रोध अहंकार ।
हर्ष शोक सब द्वन्द का, सूक्ष्म तन आगार ।१४।
सर्व दुःखों का बीज है, कारण देह अज्ञान ।
बसन्त सबका भाव तज, आतम को पहिचान ।१५
तीन देह दुःख रूप हैं, तू है सुख स्वरूप ।
बसन्त ऐसा जानके, पाओ सूख अनूप ।१६।

यथार्थ ज्ञान आतम विचार १

मूर्ख देखत देह को, अपना वपु तिह मान ।
बसन्त चेतन ज्योति को, जानत नाहिं अजान ।१
जिससे भासत देह यह, तीन काल के माहिं ।
बसन्त आतम तत्व सो, क्यों कहते हो नाहिं ।२
काष्ठ से भिन्न अग्नि जिम, बसन्त तन से प्रान ।
तैसे आतम देह से, निश्चय भिन्न पहिचान ।३।
मध्य काल में देह यह, आतम हैं सब काल ।
नाश होत है देह यह, आतम पुरुष अकाल ।४।
पांच भूत की देह यह, बसन्त है स्थूल ।
नित्य मुक्त शुद्ध एक रस, तू चेतन सुख मूल ।५।
जन्म मरण है धर्म तन, आतम के पुनि नाहिं ।
अज अविनाशी आतमा, कहा वेद के माहिं ।६।
चार वर्ण आश्रम पुनि, इन्द्रियों के दश द्वार ।
नाम रूप है देह के, आतम असंग विचार ।७।

बसन्त स्थूल देह यह, जड़ परिणामी जान ।
अखण्ड चेतन एक रस, आतम को पहिचान ।८।
सत्रहं तत्त्व की देह यह, सूक्ष्म सो तू नांहि ।
सुख दुःख आदि द्वन्द सब, बसन्त है इस मांहि ।९।
सर्व द्वन्दों से बसन्त भिन्न, आतम इक रस जान ।
कर्त्ता भोक्ता लिङ्ग तन, आतम अक्रिय मान ।१०।
ज्ञान कर्म दश इन्द्रिय पुनि, बसन्त पांच प्रान ।
मन बुद्धि सत्रहं तत्व ये, सूक्ष्म देह पहिचान ।११।
कारण देह अज्ञान मय, तू है ज्ञान स्वरूप ।
बसन्त द्रष्टा कोष का, आतम अगम अनूप ।१२।
लाल रंग जिम फूल का, भासत स्फटिक मांहि ।
तीन देह के धर्म तिम, भासत आतम मांहि ।१३।
अन्नमय, मनमय, प्राणमय, विज्ञान आनन्द कोष ।
बसन्त इनसे असंग तू, साक्षी है निर्दोष ।१४।
अन्नमय स्थूल देह है, सूक्ष्म मन बुद्धि प्राण ।

आनन्द कारण देह है, बसन्त मिथ्या मान ।१५।
देह कोष जड़ रूप है, तू चेतन अधिष्ठान ।
बसन्त ऐसे जान के, त्यागो तन अभिमान ।१६
जिसके होते होत सब, जिस भासे सब भास ।
बसन्त तिसको देख तू, त्यागे तन अध्यास ।१७।
कल्पित तन मन इंद्रिय पुनि, चिदाभास बुद्धि जान
इन सबका आधार जो, साक्षी सो पहिचान ।१८
बसन्त आतम एक है, आनन्द रूप अपार ।
मिथ्या जड़ दुःख रूप है, नाना तन आकार ।१९।
बसन्त जो जन देह को, मानत अपना आप ।
सो भोगत इस ज्ञान से, तन के सब संताप ।२०।
जाग्रत स्वप्न सुषोपति, तीन अवस्था जान ।
बसन्त दृष्टा तीन का, साक्षी सो पहिचान ।२१।
जाग्रत में स्वप्न नहीं, स्वप्ने सुषुपति नाहिं ।
सुषोपति आतम में नहीं, आतम है सब माहिं ।२२
जाग्रत में स्वपन नहीं, स्वपने जाग्रत नाहिं ।

बसन्त तांते झूठ ह्वे, कर विवेक मन मांहि ।२३।
जाग्रत स्वपन सुषुप्त का, प्रकाशक है जोय ।
बसन्त जानत जो तिसे, मुक्ति पावत सोय ।२४।
देह इन्द्रिय मन प्राण बुद्धि, ये पांचों तू नांहि ।
बसन्त तू इन सर्व का, साक्षी चेतन आंहि ।२५।
तूं असंग शुद्ध, व्योम सम, नांहि किसीसे सङ्ग ।
बसन्त ऐसा जान के, संग भ्रान्ति कर भङ्ग ।२६।
बसन्त सब में एक रस, चेतन है भरपूर ।
ज्ञानी प्रत्यक्ष देखते, मूर्ख मानत दूर ।२७।
प्रत्यक्ष आतम ज्योति है, लखे न तांहि अजान ।
बसन्त सब घट एक रस, जानत सन्त सुजान ।२८।
बसन्त रवि प्रकाश से, जैसे देखत नैन ।
तैसे चेतन ज्योति से, देह चलत दिन रैन ।२९।
आतम शक्ति से चलत है, बसन्त प्रान अपान ।
मन बुद्धि इन्द्रिय करत है, निज निज कार्य महान ।
मन बुद्धि इन्द्रिय की विषय, जा जा वस्तू होय ।

बसन्त तांको कहत है, अमुक वस्तु सब कोय ।३१।
बसन्त मन बुद्धि इन्द्रिय को, विषय आतमा नांहि ।
तातें कोय न कह सके, वेद नेत कह जांहि ।३२।
बुद्धि जानत जिह वस्तु को, सा पुनि आतम नांहि ।
बसन्त जो बुद्धि को लखे, आतम कहिये तांहि ।३३
जिसकी सत्ता पाय मन, मनन करत दिन रात ।
बसन्त सो है आतमा, वेद कहत अस बात ।३४।
जांको सत्ता पाय कर, बसन्त कर कर काम ।
पाद प्रान पुनि चलत हैं, सो है आतम राम ।३५।
बसन्त जां बिन नैन नहिं, देखत नाना रूप ।
जिस सत्ता से देखते, सो आतम स्वरूप ।३६।
श्रवण सुनत है शब्द को, जिसकी सत्ता पाय ।
बसन्त रसना लेत रस, सो आतम सुखदाय ।३७
बसन्त नव को गिनत नर, दसवां गिनत न आप ।
बार बार पछुताय के, मूण्ढ सहे संताप ।३८।

और सर्व को जानता, अपने को नहि जान ।
बसन्त ऐसा मूंढ मति, पावत दूःख महान ।३६।
देह नहीं मैं आत्म हूं, निश्चय जानत जोय ।
बसन्त जग के द्वन्द दुःख, ताहि न व्यापत कोय ।४०
असंग अमर मैं आतमा, जानत जो मन माहि ।
बसन्त ऐसा पुण्य कहं, भूत भविष्यत नाहि ।४१।
बसन्त विस्मय होत नर, पाय निजातम भेव ।
देख देख पुनि हंसत है, सब में सोई देव ।४२।
जांका रूप न रंग कछु, है निर्गुण निर्वान ।
बसन्त तांको जान जन, होवत विस्मयवान ।४३
गूंगा हंसत न कहत जिम, सुन्दर देख स्वरूप ।
बसन्त ज्ञानी हंसत तिम, कह न सकत निज रूप ।
जो देखत है ताहि में, कहने का बल नाहि ।
बसन्त गम नहीं शब्द की, रसन कहे किम ताहि ।

निर्गुण सगुण ब्रह्म विचार-२

सत्चित् आनन्द ब्रह्म है, अखण्ड अद्वय अपार ।
अगम अगोचर एक रस, निर्गुण निरहंकार ।१।
परम पुरुष परमात्मा, अनन्त मंगल धाम ।
माया काया से परे, बसन्त है अल काम ।२।
बसन्त जिसके अंश में, है जड़ त्रिगुण माय ।
उनकी सत्ता पाय के, रचती है बहु काय ।३।
जिसकी सत्ता पाय के, भासत सत् संसार ।
बसन्त सो परमात्मा, है जग का आधार ।४।
बसन्त जिसकी ज्योति से, प्रकाशत शशि सूर ।
दामनी नक्षत्र अग्नि पुनि, चेतन सो भरपूर ।५।
जिस आनन्द से जगत यह, भासत आनन्द रूप ।
बसन्त सोई ब्रह्म है, पूरण पुरुष अनूप ।६।
समर्थ सर्वज्ञ एक विभु, मायिक ईश्वर होय ।
उत्पति स्थित लय करे, जग कारण है सोय ।७।

लक्ष्मी नारायण उभय, व्यापक हैं जग माहिं ।
उपज निपज लक्ष्मी करे, हरि प्रकाशे ताहिं ।८।
अन्तरयामी असंग पुनि, सबका जाननहार ।
ताहि न जानत बसन्त को, मिथ्या जड़ संसार ।९।
आवागमन सब जीव का, उत्पतो प्रलय जोय ।
बसन्त विद्या अविद्या को, जानत है हरि सोय ।
बसन्त प्रेरक सर्व का, सर्वस्व शक्ती मान ।
करता हरता जगत का, भरता है भगवान ।११।
सब जीवों को एक ही, देत कर्म फल जोय ।
सो समर्थ सर्वज्ञ हरि, सब में व्यापक होय ।१२।
कर्मों का फल देत हरि, और न कोऊ देत ।
बसन्त हरि के हुकम में, चलत विश्व का खेत ।१३
इन्द्र पवन रवि अग्नि शशि, सिन्धु काल यमराज ।
ईश्वर आज्ञा मान के, बसन्त करत सब काज ।१४
षट् भग सम्पन्न जो सदा, बसन्त सो भगवान ।

सगुण ब्रह्म साकार है, विष्णु शंकर जान ।१५।
बसन्त भक्तन हेत हरि, आवत है जग माहिं ।
राम कृष्ण का रूप धर, देत दरश सब काहिं ।
आंख मूंद नर कहत है, ना है नभ में भान ।
बसन्त मूर्ख कहत तिम, जग में नहिं भगवान ।१७
बसन्त नभ सम सर्व में, इक रस व्यापक जोय ।
सर्व रूप सब ते परे, अद्वय ब्रह्म है सोय ।१८।
कारण कार्य जगत का, अधिष्ठान चिद रूप ।
बसन्त तांको वेद सब, कहत ब्रह्म स्वरूप ।१९।

जीव ब्रह्म एकत्व-३

सत्‌चित् आनन्द आतमा, बसन्त अद्वय अपार ।
आतम ब्रह्म स्वरूप है, सन्त कहत निर्धार ।१।
बसन्त आतम सर्व में, व्यापक है सम एक ।
वेद कहहिं नाना नहीं, करके देख विवेक ।२।

जो तोमें सो सर्व में, प्रत्यक्ष चेतन आहि ।
बसन्त तांको जानके, लीन होय तिय माहि ।३।
तोमें, मोमें सर्व में, विभु चेतन है एक ।
बसन्त ऐसे जान के, तज तू वृत्ति अनेक ।४।
बसन्त जैसे अग्नि का, है काष्ठों में वास ।
तैसे चेतन ज्योति का, सब में है प्रकाश ।५।
बसन्त जैसे सर्व को, देत व्योम अवकाश ।
तैसे आतम आप में, देत जगत को वास ।६।
बसन्त आतम सर्व में, सब हैं आतम माहि ।
सब जग आतम रूप है, तां बिन दूसर नाहि ।७।
सत्चित् आनन्द आत्मा, सोय ब्रह्म स्वरूप ।
बसन्त यामें भेद नहि, है अद्वैत अनूप ।८।
दुर्वासा दत्ता राम शिव, वशिष्ठ आदि मुनि आन ।
सब कहते तू जीव नहि, तू है ब्रह्म महान ।९।
आतम और परमात्मा, एक रूप कर जान ।

बसन्त निश्चय दृढ़ कर, भेद न जिय में आन।१०।
जो परोक्ष परमात्मा, व्यापक है सब मांहि।
सो है तेरा आतमा, बसन्त भूलो नांहि।११।
बसन्त बिम्ब प्रतिबिम्ब में, भेद न जैसे आंहि।
तैसे जीव अरू ब्रह्म में, भेद भाव कछु नांहि।१२।
जीव ब्रह्म को एककर, जानत निश्चय जोय।
बसन्त मैं सत् कहत हूं, मुक्ती पावत सोय।१३।
जीव ब्रह्म में मनुष्य जो, जानत स्वल्प भेद।
बसन्त सो जन पावता, जहं तहं भय दुःख खेद।१४
देह नहीं मैं ब्रह्म हूं, यह समझत जो नीत।
बसन्त सुख से रहत सो, त्याग संशय विपरीत।१५
तुम हम हम तुम एक हैं, बसन्त कहत सुन तात।
भेद भरम सब मिट गया, रही न दूजी बात।१६
जग मिथ्या सत् ब्रह्म हैं, जीव ब्रह्म इक जान।
बसन्त ऐसा जानके, पावो शान्ति महान।१७।

सत्चित् आनन्द ब्रह्म जो, सो है मेरा रूप ।
बसन्त ऐसे जपत जो, न पड़त भव कूप ।१८।

जगत् मिथ्या ब्रह्म रूप है-४

जग का अती अभाव है, पूर्ण ब्रह्म के माँहि ।
बसन्त भासत भरम से, वास्तव में कछु नाँहि ।१।
जगत ब्रह्म में है नहीं, है तो मिथ्या जान ।
मिथ्या जग है ब्रह्ममय, बसन्त निश्चय मान ।२।
यद्यपि नैन से दीखता, होत सकल व्यवहार ।
बसन्त तो भी स्वप्न वत्, मिथ्या है संसार ।३।
मिथ्या रज्जु में सर्प जिम, रजत सीप में जान ।
बसन्त तैसे ब्रह्म में, मिथ्या जग पहिचान ।४।
रज्जु में भासत तिमर कर, माला तरु जड़ सांप ।
बसन्त देखहुं दीप ले, केवल रज्जु है आप ।५।
जैसे रज्जू में भासते, सर्प लकीर दरार ।

तैसे भासत भरम कर, आतम में संसार ।६।
भासत सिप में दूर से, भोडर कागज रूप ।
बसन्त नेड़े जाय जब, दीसत सीप स्वरूप ।७।
जैसे भासत सीप में, अभ्रक कागज रूप ।
तैसे भासत ब्रह्म में, बसन्त जगत अनूप ।८।
मायामय सब जगत यह, मिथ्या है सत् नाहिं ।
मिथ्या है अधिष्ठानमय, कहा वेद के माहिं ।९।
बसन्त जैसे ठूंठ में, भासत भूत अरु चोर ।
भासत तिम जग ब्रह्म में, तांपीछे मत दौड़ ।१०।
अधिष्ठान इस जगत का, बसन्त ब्रह्म पछान ।
तांते यह जग ब्रह्म है, घट माटी जिम जान ।
जो कछु है सो ब्रह्म है, ब्रह्म भिन्न नहिं कोय ।
कर्त्ता कर्म क्रिया सबी, बसन्त ब्रह्ममय जोय ।
जल के तरंग लहर ज्यों, बसन्त जलमय आहिं ।
ब्रह्म रचित यह जगत त्यों, ब्रह्म अहे भिन्न नाहिं ।

बसन्त चेतन से भया, उत्पन्न यह आकाश ।
नभ से वायु होय पुनि, तासें अग प्रकाश ।१४।
तोय अग्नि से होय है, तासें भूमि अपार ।
इन पांचों से होत हैं, बसन्त यह संसार ।१५।
बसन्त जो जिससे भये, सो तिस महिं लय होय ।
कार्य कारण रूप इस, जानत ज्ञानी सोय ।१६।
बसन्त कार्य जगत है, कारण ब्रह्म पछान ।
कारण कार्य होत है, कार्य कारण महान ।१७।
कार्य कारण एक है, सूत वस्त्र ज्यों जान ।
त्यों जग आतम एक है, बसन्त निश्चय मान ।१८।
ओऽम् से अक्षर भये, अक्षर ओऽम् आकार ।
बसन्त ब्रह्म से जगत है, जगत ब्रह्म निर्धार ।१९।
एक बीज से पेड़ जिम, होवत बहु प्रकार ।
बसन्त भये तिम ब्रह्म से, नाना यह संसार ।२०।
कञ्चन से कुण्डल भये, कुण्डल कञ्चन रूप ।

बसन्त निश्चय जान तिम, जग चेतन स्वरूप ।।
ज्ञान दृष्टि से जगत यह, भासत ब्रह्म स्वरूप ।
भूषण कञ्चन दृष्टि से, भासत कञ्चन रूप ।२२
जगत ब्रह्म दो नाम है, वस्तु एक ही जान ।
बसन्त ज्ञानी कहत इक, जानत भेद अजान ।२३।
बसन्त अपने आप से, सृष्टि रचो करतार ।
तांते यह जग ब्रह्म है, यामें फेर न फार ।२४।
बसन्त भासत भरम से, जगत ब्रह्म के मांहि ।
विवेक से इक ब्रह्म है, जग कछु भासत नांहि ।।
आतम ब्रह्म और जगत को, जो जानत इक रूप ।
बसन्त सो नर मुक्त है, फिर न पड़त भवकूप ।२६
अद्वितीय पूरण ब्रह्म है, ना है दूसर कोय ।
बसन्त भासत और जो, जान ब्रह्म है सोय ।२७।
अद्वितीय आतम ब्रह्म को, बसन्त जानत जोय ।
काहूं से सो डरत नांहि, निर्भय रहता सोय ।२८।

अनुभव विचार

जगत ब्रह्म का रूप है, ब्रह्म आतम स्वरूप ।
बसन्त मैं हूं आतमा, जग है मेरा रूप ।१।
बसन्त मुझ से जगत यह, उपजत स्थित होय ।
मुझ में फिर लय होत है, मुझसे भिन्न नहिं कोय ।।
सब मेरे मैं सर्व का, बसन्त भेद कछु नाहिं ।
मैं हूं व्यापक सर्व में, सब हैं मुझहीं माहिं ।३।
बसन्त मेरा देश है, सारा यह संसार ।
मैं हूं सबका मित्र पुनि, मेरा सब परिवार ।४।
बसन्त मैं दो भांति की, कही ग्रन्थन माहिं ।
शुद्ध मैं आतम राम है, मलिन देहमय आहिं ।।
देह मलिन मैं हूं नहीं, मैं हूं शुद्ध स्वरूप ।
मलिन मैं दुःखमय सदा, शुद्ध मैं आनन्द रूप ।।
मलिन मैं को काट दे, शुद्ध मैं से तुम तात ।
लोहे को लोहा कटे, बसन्त यह बतलात ।७।

बसन्त मैं हूं आतमा, सत्चित् आनन्द रूप ।
आतम भिन्न जो देह है, मिथ्या जड़ दुःख कूप ।।
जैसे मकड़ी आप से, आप निकासत जाल ।
आपहिं तिसमें फसत है, खाकर होत निहाल ।।
तैसे चेतन आप से, आप रचत संसार ।
भोगी बनकर फसत है, निकसत कर वीचार ।।
पाञ्च अंश हैं जगत में, देखो कर वीचार ।
अस्ति भाति प्रिय ब्रह्म है, नाम रूप संसार ।११
नाम रूप को त्याग के, अस्ति भाति प्रिय जान ।
बसन्त तांको आपना, निज स्वरूप पहिचान ।१२
आतम चिन्तन नित करो, जे चाहत सुख शांति ।
बसन्त इन बिन कर्म सब, है दुःख रूप भ्रांति ।१३
बसन्त अकेला बैठ के, तजे सर्व को तात ।
चिन्तन कर निज ब्रह्म का, बोल न दूजी बात ।१४
सब में सबसे असंग मैं, सब है मेरा रूप ।

बसन्त ऐसा निश्चय कर, होया अगम अनूप ।।
आपहिं बनयो आप मैं, देव दनुज नर नार ।
बसन्त मुझसे अलग नहिं, सारा यह संसार ।१६।
त्रिलोकी का नाथ मैं, त्रिलोकी मुझ माहिं ।
मुझसे और न अधिक को, मुझ सम कोई नाहिं ।।
एकपना है ईश में, नाना जीवों माहिं ।
जीव ईश से रहित मैं, मुझमें इक दो नाहिं ।१८
देशकालपुनि वस्तु का, छेदन नहिं मुझ माहिं ।
सर्व देश सब काल पुनि, मैं हूं सबके माहिं ।१९
बसन्त आतम ब्रह्म है, सब घट में भरपूर ।
ज्ञानहीन देखत नहीं, जानत है अति दूर ।२०।
बसन्त पूजे आतमा, पूज जात सब देश ।
सब देवन के पूजते, मिलत न आतम भेश ।२१।
सब देवन के पूजते, भेद भरम नहिं जात।
ब्रह्म आतम को जानसे, द्वैत अज्ञान नशात ।२२

सत्चित् आनन्द आतमा, निर्गुण निरहंकार ।
बसन्त पिण्ढ ब्रह्मण्ड का, है सो इक आधार ।।
शंकर आतम देव है, पार्वती बुद्धि जान ।
बसन्त तन कैलाश है, ऐसा धर तू ध्यान ।२४।
आतम शिव को छोड़ कर, पूजत शिव लिंग जोय ।
बसन्त पावत मुक्ति नाहिं, भटकत शिव गण होय ।।
बसन्त ज्योति सूर्य की, उदय अस्त ही होय ।
अखण्ड आतम ज्योति है, देखो मन में सोय ।।
दरसे आतम ज्योति के, मिट जा भेद अज्ञान ।
मिटत न ममता मोह मद, बसन्त देखे भान ।।
रामकृष्ण रवि शारदा, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
बसन्त आतम देव में, सबका है प्रवेश ।२८।
श्रुति सीता जान तुम, बसन्त आतम राम ।
देही अयोध्या नगरी, जान करो विश्राम ।२६।
राधा रानी वृत्ति यह, कृष्ण आतम देव ।

बसन्त वृन्दावन बदन, निशदिन तांको सेव ।३०
प्रत्यक्ष आतम देव को, अल्प मती कर त्याग ।
देखन चाहत परोक्ष को, मन में धर अनुराग ।३१
आतम के सब नाम हैं, ओऽहं सोऽहं आदि ।
बसन्त अपना नाम जप, लाइ सहज समाधि ।३२
ओऽम् सोऽहं नाम मम, मैं हूं चिद् स्वरूप ।
बसन्त अपना आप लखि, भा चेतन का रूप ।३३
बसन्त सारी विश्व का, मैं हूं जाननहार ।
मुझको कोई न जानता, सारा यह संसार ।३४
जड़ी भूत यह जगत है, मैं हूं चेतन देव ।
टेऊंराम गुरु ने कहा, बसन्त पाया भेव ।३५।
बसन्त चिन्तन जगत का, देत क्लेश अपार ।
तांते तांको त्याग के, करलो तत्त्व विचार ।३६।
बसन्त चिन्तन ब्रह्म का, शान्ती देत महान ।
तांते निशदिन तुम करो, छोड़ देह अभिमान ।३७

ज्ञानी और अज्ञानी

ज्ञानी जानत ब्रह्म को, बसन्त अपना आप ।
मान अज्ञानी भेद को, भोगत अति सन्ताप ।१।
ज्ञानी देखत ब्रह्म को, सुनत ब्रह्म की बात ।
बोलत बानी ब्रह्म को, बसन्त दिन औ रात ।२
ज्ञानी सुख में रहत नित, जीवन मुक्ति पाय ।
बसन्त अज्ञ दुःख पाय हैं, जग बन्धन मन लाय ।३
ज्ञानी जैसा जगत में, ऊंचा और न जान ।
बसन्त अज्ञ सम नीच नहिं, कहते वेद पुरान ।४।
ज्ञानी निज आनन्द माहि, रहत सदा लव लीन ।
विषयानन्द को भोग अज्ञ, बसन्त होवत दीन ।५
आत्म ज्ञानी जगत में, रहत सदा निर्लेप ।
बसन्त जैसे ताल में, रहता कमल अलेप ।६।
आत्म ज्ञानी मनुष्य है, प्रत्यक्ष आतम देव ।
बसन्त तांको सेव कर, पावो आतम भेव ।७।

आतम ज्ञानी कहत जो, सो निश्चय हो जात ।
बसन्त सेवत तांहि जो, सो सब ही फल पात ।६

आतम ज्ञानी पुरुष का, करले निशदिन संग ।
तांके संगति से चढ़े, बसन्त आतम रंग ।८।

आतम ज्ञानी पुरुष को, तन मन दक्षिणा देह ।
बसन्त श्रद्धा प्रेम से, ज्ञान वचन सुन लेह ।१०।

मिश्रित उपदेश

वेद करत उपदेश अस, तजि निन्द्रा उठ जाग ।
बसन्त गुरु से ज्ञान ले, आतम में कर राग ।१।

ब्रह्मातम को जान इक, हरिये भेद भ्रान्ति ।
अहं ब्रह्म को धार उर, बसन्त कर चित्त शांति ।२

धर्म अर्थ पुनि काम त्रय, चोथा मोक्ष पहिचान ।
चार पदार्थ कहत यह, बसन्त वेद पुरान ।३।

बसन्त सम्पति विपति में, सन्त रहत इक रूप ।
उदय अस्त में सूर्य जिम, होवत रक्त स्वरूप ।४।

कारण से जो क्रोध हो, ताहि तजे सुख होय ।
बसन्त बिन कारण करे, शान्ति न हो कब सोय ।।
काम क्रोध लब मोह मद, मत्सर मान गुमान।
बसन्त ये रिपु जीत के, पाओ शान्ति महान ।६।
बसन्त जिस नर की बुद्धि, विषयासक्त न होत ।
तामें सद्‌गुण ज्ञान निज, शीघ्र होत उद्योत ।७।
विषयासक्ति को त्याग कर, हरि सुमरत जो नीत ।
मात पयोधर सो नहीं, बसन्त कबहुं पीत ।८।
सब जीवन के हेत जो, देत प्रान धन दान ।
बसन्त सो पुण्यात्मा, भोगत भोग महान ।९।
अपने सुख के हेत जो, दूःख और को देत ।
बसन्त ऐसा नीच नर, वास नरक में लेत ।१०।
करत निन्दा जो सन्त की, तांकी सा फिर होय ।
बसन्त फेंके धूड़ नभ, फिर मुख पड़ती सोय ।११
औरहिं को निन्दा करे, सन्त दुःखी हो जात ।

बसन्त मूर्ख कर निन्दा, मन में बहु हर्षात ।१२।

वृद्धों का सन्मान कर, होत सुखी हैं संत ।
बसन्त उनको देह दुःख, हर्षत मूर्ख जन्त ।१३।

गुरुमुख सनमुख होत है, मनमुख बेमुख होय ।
गुरुमुख पाए परमगति, मनमुख नरके रोय ।१४

गुरुमुख गुरु आज्ञा चले, मनमुख मन के भाय ।
गुरुमुख पाते परम सुख, मनमुख मन घबराय ।१५।

अपने ही मन्द भाव से, दीसत पर के दोष ।
मन्द भाव तज आपना, बसन्त हो निर्दोष ।१६

माया मेरी मात है, परमेश्वर है तात ।
बसन्त भ्राता सन्त जन, रक्षा करत दिन रात ।१७

बसन्त मेरा कछु नहिं, जो कछु हैं सो तोर ।
तेरा तुझको दे दिया, छूटा बन्धन मोर ।१८।

पुस्तक में विद्या रहे, पर कर हो निज दाम ।
बसन्त कार्य करन में, आय न दोनो काम ।१९।

परम पिता गुरुदेव मम, ब्रह्म विद्या है मात ।
क्षमा दया मम बहिन हैं, देवी गुन है भ्रात ।२०
ब्रह्म बुद्धि है तीय मम, ज्ञान ध्यान हैं पूत ।
बसन्त तन का नाम है, मैं चेतन अवधूत ।२१।
सहज समाधि सेज मम, भोजन ब्रह्मानन्द ।
आसन निश्चल चीत है, रहनी हैं निर्द्वन्द ।२२।
राम बसे साकेत में, विष्णु वैकुण्ठ वास ।
कृष्ण बसे गो लोक में, बसन्त ब्रह्म निवास ।२३
वैकुण्ठ आदि लोक सब, मायामय पहिचान ।
माया काया से परे, मम, वपु आतम जान ।२४।
माया मय सब लोक हैं, माया मय सब देव ।
माया भिन्न निज रूप मम, सत्गुरु दीना भेव ।।
तन को आतम जानना, बन्धन सो पहिचान ।
आतम वपु निज जानना, बसन्त मुक्ति सो मान ।।
बसन्त जिम आकाश का, घट से नाहिं सम्बन्ध ।

तैसे आतम देह में, रहत सदा स्वछन्द ।27।
जड़ चेतनमय जगत यह, मन का जान विलास ।
बसंत जब मन अमन हो, तब मिट जाय जगभास ।।
आशा जिसके मन बसे, सो है सबका दास ।
आश तजे हरि को भजे, दास बने जग तास ।28।

"आशीर्वाद"

कुशल करे श्री कृष्ण तब, ब्रह्मा दे परिवार ।
नारायण नित सुमति दे, लक्ष्मी भरे भण्डार ।।1।।

दुर्गा दुश्मन क्षय करे, शंकर देवे शान्ति ।
विघ्न हरे सब विघ्नहर, सूर्य दे यश क्रान्ति ।।2।।

राम सदा रखवार हो, सतगुरु दे निज ज्ञान ।
बसन्त ये दश देवता, तेरा करे कल्यान ।।3।।

श्री बसन्त विज्ञान माला समाप्त

ओ3म् शान्तिः । शान्तिः ।। शान्तिः ।।।

"सत्गुरु स्वामी टेऊंरामजी महाराज की आरती"

ॐ जय गुरु टेऊंराम, स्वामी जय गुरु टेऊंराम ।
पर उपकारी जगत उद्धारी, तुम हो पूरन काम ।।ॐ।।
जब जब प्रेमिन निज हित कारण, तुम को पूकारा ।
तब तब गुरु अवतार धरे तुम, सब को निस्तारा ।।1।।
प्रेम प्रकाशी मण्डलाचार्य, मंत्र साक्षी सत्नाम ।
धर्म सनातन के प्रचारक, नीति निपुण अभिराम ।।2।।
देश विदेश में मण्डली लेकर, पावन दे उपदेश ।
आतम रूप लखाया सबको; हरिया ताप क्लेश ।।3।।
पूर्ण अचल समाधि तेरी, सिद्ध आसन ब्राजे ।
रूप मनोहर सुन्दर लोचन, देखत मन गाजे ।।4।।
आत्म स्थित वचन के पूरे, योगी इन्द्रिय जती ।
परम उदारी धैर्य धारी, परम अगाधमती ।।5।।
धन धन मात पिता कुल तेरा, धन तव साध सुजान ।
धन वह देश जहां तुम जन्मिया, धन तव शुभ स्थान ।।6।।
सुरनर मुनिजन हरिजन गुनीजन, गावन गुन तुम्हरे ।

अन्त न पाय सके नर कोई, महिमा परम परे ।।7।।
जो जन तेरी आरती गावे, पावे सो मुक्ति।
साध संगत को हरदम दीजे, पूरण गुरु भक्ति ।।8।।

छन्द :-सर्व स्वरूपं आदि अनूपं भूमि भूपं भयभाना।
अन्त न ऊपं छाय न धूपं काढ़त कूपं धर ध्याना।।
रहसस्य रामं दायक धामं, निन निष्कामं निर्बानी।
पाद नमामं निशदिन शामं श्री टेऊंरामं गुरु ज्ञानी ।।1।।
चांवल चन्दन कुंगू केसर, फूलों की बरखा बरखाओ।
नृसिंह गोमुख भेगी बाजा, तबला मुरदा झांझ बजाओ।।
भर भर दीपक पूर्ण घी से, अगरबत्ती अरु धूप जलाओ।
आरती साज करो बहु सुन्दर, सतगुरु की जयकार बुलाओ।।
प्रार्थना- आशवन्दी गुरु तो दर आयी, तुझ बिन ठौर न काई।
तुम हरि दाता तुम हरि माता, मेरी आश पुजाई।।
पाय पल्लव में पेरे प्यादी, आयी हेत मंझाई।
तन मन धन अरदास करे मैं, मांगत नाम सनेही।।
नाम तुम्हारा साबुन कर मैं, धोसा पाप सभेई।
कहे टेऊं गुरु लोक तीन में, आवागमन मिटाई।।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सत्गुरु स्वामी बसन्तराम जी महाराज की आरती

ॐ जय गुरु बसन्तराम स्वामी जय गुरु बसन्तराम
सत्चित्आनन्द रूप तुम्हारा, तुम हो सुन्दर श्याम ।।ॐ

1. निर्गुण से तुम सर्गुण बनकर, धर आये अवतार । स्वामी
कर्म उपासना ज्ञान सिखाकर, सबका किया उधार ।।ॐ।

2. राम नाम का स्मरण करके, किया प्रभु से प्यार । स्वामी
वैरागी बन शुक ज्यों तूने, त्याग दिया घर बार ।।ॐ।

3. पूर्ण सत्गुरु तुझको मिलिया, स्वामी टेऊंराम । स्वामी
गुरु मंत्र की दीक्षा लेकर, पाया आनन्द धाम ।।ॐ।

4. ज्ञान विज्ञान का सत्गुरु तुमने खूब किया प्रचार । स्वामी
ब्रह्म विद्या का दे उपदेशा, दूर किया अंधकार ।।ॐ

5. सहनशीलता क्षमा शान्ति, समता उर में धार । स्वामी
निष्कामी बन सेवा कीनी, सब जीवों की सार ।।ॐ

6. मोहिनी मूरत सुन्दर सूरत, प्रेमरत्न की खान । स्वामी
प्रेम का प्याला सबको पिलाकर, मस्त किया मस्तान ।।ॐ

7. शरण में तेरे जो जन आये, तजि मन का अभिमान । स्वामी
दीन दुखियों के दुखड़े हरके, सबका किया कल्याण ।।ॐ

8. भाव भक्त विश्वास से निशदिन, आरती जो गावे । स्वामी
पाप ताप संताप मिटाकर, ब्रह्मानन्द पावे ।।ॐ

। श्री स्वामी टेऊंरामजी की महिमा के श्लोक ।

निःशोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेवकन्द्यम् ।
अध्यात्मलीनं विनिवृतकामं, श्री टेऊंराम शरणं प्रपद्ये ॥1॥

शिष्टैश्च सर्वैं परिपूजिताय,: स्वर्गाधिपतयेऽपिनिःस्पृहाय ।
कामादिषड़्वर्गजितांयतस्मै, श्री टेऊंरामाय नमः शिवाय ॥2॥

योगीन्द्रवृन्दैः परिसेविताय, भक्तार्तिनाशे कृतनिश्चयाय ।
सर्वात्मभावे परिनिष्ठताय, श्री टेऊंरामाय नमः शिवाय ॥3॥

पूर्णेन्दुशोभापरिपूरिताय, शुद्धाय शान्ताय गतस्पृहाय ।
भस्मीकृताशेषनिबन्धनाय, श्री टेऊंरामाय नमः शिवाय ॥4॥

भक्तेश्च मार्गस्य निदर्शकाय, प्रेमप्रकाशमण्डलोद्भवाय ।
आचार्यवर्याय वशेन्द्रियाय, श्री टेऊंरामाय नमः शिवाय ॥5॥

"धुनि"

जय हो परम ब्रह्म अविनाशी. आतम, चेतन, आनन्द राशी।
जय हो देवन के हरि देवा अखण्ड असंग अलख अभेवा ॥

जय हो सर्वज्ञ सबके स्वामी, व्यापक आतम अर्न्तयामी।
जय हो भक्ति मुक्ति के दाता, दीन बन्धु हो भक्तन त्राता ॥

जय हो जग के उत्पन्नकर्त्ता, सुन्दर सगुन रूप को धरता।
जय हो नर नारायण रूपा, गौरी शंकर सूर्य स्वरूपा ॥

जय हो भक्तन के हितकारी, नृसिंह नाम असुर संहारी।
जय हो सीता राम खरारी, मोहन राधेश्याम मुरारी ॥

जय हो समर्थ संकट हारी, जहं तहं हमरी कर रखवारी।
जय हो तांकी जो जय गावे; बसन्त सो सुख सम्पत्ति पावे ॥

प्रकाशक : स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री

मुद्रक : कौशल प्रिन्टिग प्रेस, केसरगंज, अजमेर



प्रेम प्रकाश आश्रम (प्रवेश द्वार)
देहली गेट के अन्दर, अजमेर - 305001